DRAVYAGUNA

A

HINDU SYSTEM OF MEDICINE

BY

DOCTOR CHAKR DUTT

TRANSLATED BY

PUNDIT JWALAPRASAD MISRA

HEAD PUNDIT OF RAMASHWAR SANSKRIT PATSHALA MORADABAD

Printed And Published

BY

KHEMRAJ SHRIKRISHNA DASS

VENKATESHWAR PRESS

BOMBAY.

1897



श्रीः ।

द्रव्यगुणः ।



वैद्यमहामहोपाध्याय-श्रीमच्चक्रपाणिदत्तविरचितः ।

सैव

कात्यायनगोत्रोत्पन्नपण्डित ज्वालाप्रसादमिश्र
कृतभाषाटीकाविभूषितः

संशोधितश्च ।



सच

खेमराज श्रीकृष्णदास इत्यनेन

मुम्बय्यां

स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रणालये

मुद्रयित्वा प्रकाशितः ।

संवत् १९५४, शके १८१९.

भूमिका।

मनुष्योंकी आरोग्यताके निमित्त वैद्यकशास्त्रकी बहुतही आवश्यकता होती है, कारण कि, द्रव्योंके गुण दोष जानकर उनका व्यवहार करनेसे शरीरमें सहसा रोगोंका सञ्चार नहीं होता है, खानपानके यावत्पदार्थ हैं सभीमें गुण दोष विद्यमान हैं, इस कारण जो उनको जानकर भोजनादिमें प्रवृत्त होता है, वह सुखपाता है, वैद्यकशास्त्र तीन भागोंमें विभक्त है, निघण्ट, निदान और चिकित्सा निघण्टमें द्रव्योंके गुणदोष, निदानमें रोगोंके लक्षण और चिकित्सामें रोगोंका निवारण औषधियों द्वारा वर्णन कियाहै, यद्यपि तीनों भाग बडेही उपकारी हैं परन्तु इनमें पहला "द्रव्यगुण" सबके उपयोगी और वैद्यकशास्त्रमें प्रवेश होनेका द्वारहै। प्रथम औषधी आदिके गुण दोष जानकर फिर निदानसे रोग निश्चयकर उसकी दूर करनेवाली औषधी प्रदान कीजातीहै इसकारण सबसे प्रथम निघण्टका अनुशीलन करना उचितहै और केवल वैद्योंहीको नहीं गृहस्थमात्रको निघण्टका जानना उचितहै, जिसे जानकर अहितकारक वस्तुओंका सेवन न करके रोगसे बचकर पूर्णआयु भोगसकताहै।

प्रथमही जब वैद्यकशास्त्रकी प्रवृत्तिहुईथी, तब इस भारतवर्षमें महात्मा ऋषियोंने वेदानुसार अनेक ग्रन्थ निर्माण कर इसदेशको उन्नतिके शिखरपर पहुँचादियाथा, कालक्रमसे जब अन्यतरपर यवनोंने इसदेशपर आक्रमण किया तब सहस्रों ग्रंथ ससूरके अग्निमें जलादियेगये, तब इङ्गलण्डीयपुरुषोंने उनको पराजितकर यह भारतभूमि कुछ स्वस्थकी और बहुत खोजकर प्राचीन ग्रन्थोंका उद्धार किया और पश्चात् इस देशनिवासियोंनभी अनेक यन्त्र स्थापितकर प्राचीनग्रन्थोंको खोजकर पुनरुद्धारकरना निश्चयकियाहै और बहुत खोजकर विविधविषयकग्रंथ प्रकाशित कियेजातेहैं।

परन्तु सहस्रों वैद्यकशास्त्रोंके ग्रन्थोंमें अभीतक सैकडों ग्रन्थभी प्रकाशित नहीं हुयेहैं, इसकारण देशभाषाकेसहित सर्वसाधारणके उपकारके निमित्त वैद्यकके ग्रन्थ प्रकाशित होनेकी बहुतही आवश्यकताहै कारण कि, सर्व साधारणको संस्कृत का ज्ञान न होनेसे शास्त्रोंका मर्म समझमें नहींआता, इसकारण भाषान्तरकर उनको शास्त्रोंकाआशय समझना बहुतउचितहै, जिससे वे अपने पूर्वजोंके परिश्रमको देखकर लाभ उठावैं।

यही विचारकरहमने वैद्यवर महामहोपाध्याय श्रीमच्चक्रपाणिदत्तविरचित "द्रव्य गुण" का भाषाटीकाकर वैश्यवंशावतंसगुणग्राहक "श्रीवेंकटेश्वर" यन्त्राधिपति श्रीयुत खेमराज श्रीकृष्णदासजी महाशयको सब प्रकारके स्वत्वसहित समर्पण करदियाहै

यद्यपि यह टीका सर्वसाधारणके उपकारके निमित्तही प्रकाशितकियाहै परन्तु भाषाद्वेषी जोकि भाषाको "मूर्खमनोरञ्जनी" कहकरभी अपने कार्यकार्य भाषामेंही निर्वाह करते हैं वे महाशय कदाचित् इससे सन्तुष्ट न होंगे, कारण कि ऐसेही महात्माओंके यत्नोंमें बंधीहुई संस्कृतकी अनेक पुस्तकें उपजिह्वकाओंका आहारहोगईहैं।

शेषमें पाठक महाशयोंसे प्रार्थना है कि, आप यदि इसमें कोई भूलचूक पावें तो अपनी उदारतासे क्षमाकर हंसके समान गुणग्राहीहों यहग्रन्थ आपके उपकारके निमित्तही प्रकाशित किया गया है।

आपका-पण्डित ज्वालाप्रसादमिश्र, मोहल्लादीनदारपुरा-मुरादाबाद

भूमिका ।

मनुष्योंकी आरोग्यताके निमित्त वैद्यकशास्त्रकी बहुतही आवश्यकता होती है, कारण कि, द्रव्योंके गुण दोष जानकर उनका व्यवहार करनेसे शरीरमें सहसा रोगोंका सञ्चार नहीं होता है, खानपानके यावत्पदार्थ हैं सभीमें गुण दोष विद्यमान हैं, इस कारण जो उनको जानकर भोजनादिमें प्रवृत्त होता है, वह सुखपाता है, वैद्यकशास्त्र तीन भागोंमें विभक्त है, निघण्ट, निदान और चिकित्सा निघण्टमें द्रव्योंके गुणदोष, निदानमें रोगोंके लक्षण और चिकित्सामें रोगोंका निवारण औषधियों द्वारा वर्णन कियाहै, यद्यपि तीनों भाग बडेही उपकारी हैं परन्तु इनमें पहला " द्रव्यगुण" सबके उपयोगी और वैद्यकशास्त्रमें प्रवेश होनेका द्वारहै । प्रथम औषधी आदिके गुण दोष जानकर फिर निदानसे रोग निश्चयकर उसकी दूर करनेवाली औषधी प्रदान कीजातीहै इसकारण सबसे प्रथम निघण्टका अनुशीलन करना उचितहै और केवल वैद्योंहीको नहीं गृहस्थमात्रको निघण्टका जानना उचितहै, जिसे जानकर अहितकारक वस्तुओंका सेवन न करके रोगसे बचकर पूर्णआयु भोगसकताहै ।

प्रथमही जब वैद्यकशास्त्रकी प्रवृत्तिहुईथी, तब इस भारतवर्षमें महात्मा ऋषियोंने वेदानुसार अनेक ग्रन्थ निर्माण कर इसदेशको उन्नतिके शिखरपर पहुँचादियाथा, कालक्रमसे जब अनयवनपर यवनोंने इसदेशको आक्रमण किया तब सहस्रो ग्रंथ संस्कृतके अग्निमें जलादियेगये, तब इङ्लैण्डीयपुरुषोंने उनको पराजितकर यह भारतभूमि कुछ स्वस्थकी और बहुत खोजकर प्राचीन ग्रन्थोंका उद्धार किया और पश्चात् इस देशनिवासियोंनेभी अनेकयन्त्र स्थापितकर प्राचीनग्रन्थोंको खोजकर पुनरुद्धारकरना निश्चयकियाहै और बहुत खोजकर विविधविषयकग्रंथ प्रकाशित कियेजातेहैं ।

परन्तु सहस्रो वैद्यकशास्त्रोंके ग्रन्थोंमें अभीतक सैकडो ग्रन्थभी प्रकाशित नहीं हुयेहैं, इसकारण देशभाषाकेसहित सर्वसाधारणके उपकारके निमित्त वैद्यकके ग्रन्थ प्रकाशित होनेकी बहुतही आवश्यकताहै कारण कि, सर्व साधारणको संस्कृत का ज्ञान न होनेसे शास्त्रोंका मर्म समझमें नहींआता, इसकारण भाषान्तरकर उनको शास्त्रोंकाआशय समझना बहुतउचितहै, जिससे वे अपने पूर्वजोंके परिश्रमको देखकर लाभ उठावैं ।

यही विचारकर हमने वैद्यवर महामहोपाध्याय श्रीमच्चक्रपाणिदत्तविरचित "द्रव्य गुण" का भाषाटीकाकर वैश्यवंशावतंसगुणग्राहक "श्रीवेंकटेश्वर" यन्त्राधिपति श्रीयुत खेमराज श्रीकृष्णदासजी महाशयको सब प्रकारके स्वत्वसहित समर्पणकरदियाहै.

यद्यपि यह टीका सर्वसाधारणके उपकारके निमित्तही प्रकाशितकियाहै परन्तु भाषाद्वेषी जोकि भाषाको " मूर्खमनोरञ्जनी " कहकरभी अपने यावत्कार्य भाषामेंही निर्वाह करते हैं वे महाशय कदाचित् इससे सन्तुष्ट न होंगे, कारण कि ऐसेही महात्माओंके यत्नोंमें बँधीहुई संस्कृतकी अनेकपुस्तकें उपजिह्वकाओंका आहारहोगई।

शेषमें पाठक महाशयोंसे प्रार्थना है कि, आप यदि इसमें कोई भूलचूक पावें तो अपनी उदारतासे क्षमाकर हंसके समान गुणग्राहीहो यहग्रन्थ आपके उपकारके निमित्तही प्रकाशित किया गया है ।

आपका-पण्डित ज्वालाप्रसादमिश्र, मोहल्लादीनदारपुरा-मुरादाबाद.

भक्ष्यवर्गः ।

दूसरेग्रन्थोंसेग्रहणकीऔषधी।

अष्टवर्गः।

इति वनौषधिवर्गः सम्पूर्णः।

मण्ड-शुद्ध चावलोंको चौदह गुने पानीमें डालकर औटावे जब चावल सीजजांय तब मांड निकाल ले यह शुद्ध मण्डहै ।

फांट-एक पल औषधी लेकर अच्छी रीतिसे कूटकर सोलह तोले जलपात्रमें भरकर धरै जब गरम होजाय तब कुटी औषधी डालकर खूब औटावे फिर उसपानीको कपड़ेसे छानले यह फांटहै।

मंथ-फांटका भेदहै ।

जौकामंथ-सायितजौंको भुनाय घृत पिसवाले उसे शीतल जलमें इसप्रकार मिलावे जिससे न पतलापतलाहो न बहुत गाढा फिर उसमें घीमिलाकर पिये जो शब्द वैद्यकमें पूछेआयेहैं कि उनका पर्याय नहीं लिखाहै उनको लिखते हैं ।

अभिष्यन्दि-जोद्रव्य अपने पिच्छल गुणोंके भारीपनसे रस लेजानेवाली नाडियोंको रोककर शरीरको भारी करताहै वह अभिष्यन्दि (स्रोतस्रावी) यथा-दही ।

प्रमाथी-जो मुखनासिका आदि छिद्रोंसे कफादिदोष संचयको निकाले वह प्रमाथीहै (यथ)

वाजीकरण वीर्यकी प्रवृत्तकरनेवा ली औषधी एरंडी, शतावर, व्यथापी अपकही सबदेहमें फैलनेवाली ।

रसायन-जो देहकी वृद्धावस्था और ज्वरादिरोगको नाशकरै यथा गिलोय रुदन्ती ।

स्तम्भन-जो औषधी रूक्षगुणकरके शीतवीर्यकरके और कसैले रसयुक्तहो नेसे पाकमें हलकी हो वादीको उत्पन्न करैयह औषधी स्तंभनहै यथा कुडा और स्योनाक मार्दी जो अग्निदीप्तकरे और आमादिका पाचनकरै और उष्ण होने से मलस्वरूप कफादि धातुओंके दोष और मलको शोषण करै वह मार्दी यथा गजपीपल सोंठ जीरा ।

लेखन-जो रसादि धातु और वात दिदोषको सुखाकर देहसे बाहर निका लदे वह लेखन कहलाते यथा वच शहद।

भेदन-जो औषधि वातादि दोषसे सूखेमलको पतलाकर गुदाके द्वारा निकालदेतीहै वह भेदनहै ।

रेचन-जो पेटके अन्नादिका उत्तम पाकहोने अथवा कच्चे होनेपर अन्ना दि तथा वातादिमलोंको पतला करके अधोभागमें प्राप्तकर गुदाद्वारा रेचन करै वहरेचकहै यथा निशोत ।

संशोधन-जो स्वस्थानमें संचित मलोंको ऊपर भागमें लाकर मुख ना सिकाद्वारा निकाले और अधोभागमें लेजाकर गुदालिंग द्वारा बाहर निकाले वह संशोधकहै यथा धंदाल ।

छेदन-जो परस्पर मिलेकफादि दोषों को अपनी शक्तिसे तोड पृथक करदे वह छेदनहै यथा कालीमिर्च शिला जीत ।

वमन-जो पक्वदशाको न प्राप्तहुए पित्त कफको बलसे मुखके मार्गको निकाले वह वमनकारक है यथा मैनफल ।

दीपनपाचन-जो आमको न पचाकर अग्निको प्रदीप्तकरे वह दीपन है यथा सौंफ और जो आमको पचाकर फिर अग्निको प्रदीप्तकरे वह पाचनहै यथा नागकेशर औरजो दोनों कार्य करै वह दीप न पाचन है यथा चीता ।

स्रंसन-जो पीछे पाकहोने योग्य वाता दिदोष कोठेमें आश्रित हुओंको विना ही पाककरे अंत्रिके भागमें लाकर गुदाके द्वारा निकाले वह स्रंसन यथा अमल तासका गूदा ।

अनुलोमन जो वातादि दोषोंके कोप कोशान्तकर परस्पर बद्ध या अबद्धोंको भिन्न २ कर नीचे गिरावे अथवा वात मूत्रपुरीषादिसे बद्ध कोठको स्वच्छ करके मलादिको गुदद्वारा प्राप्तकर बाहर निकाले वह अनुलोमनहै यथा हरड ।

संशमन-जो औषधी भोगीके भोजन किये पदार्थको न वमन द्वारानिकाले न दस्तकराये किन्तु दोषोंमें मिलकर उन्हें वहीं शान्तकरदे वहशमनसंज्ञकहै यथा गिलोय ॥

सम्पूर्णम् ।



श्रीगणेशाय नमः ।

द्रव्यगुण–सटीक ।

मंगलाचरणम् ।

शंकरंशंकरंदेवंगिरीशंगिरिजापतिम् ॥
गणेशंविघ्नहर्तारंवन्देहंकामदम्प्रभुम् ॥ १ ॥
रचितश्चक्रदत्तेनयोद्रव्यगुणसंग्रहः ॥
मयाज्वालाप्रसादेनतस्यव्याख्याभिधीयते ॥ २ ॥

प्रायः पृच्छन्ति यत्नेशास्तद्रव्यगुणसंग्रहः ।
धारणस्मरणोन्मुखो यथास्याल्लिख्यते तथा ॥ १ ॥

वैद्यराज श्रीचक्रदत्तजी सर्व साधारणके ऊपर कृपा दृष्टि कर द्रव्य गुण वर्णन करनेकी इच्छासे कहते हैं कि, मधुरादि रस और यावत्पदार्थ हैं वे सब द्रव्य कहलाते हैं उन सब द्रव्योंमें गुण दोष रहते हैं वे गुण दोष जानकर प्राणी उनका धारण स्मरण करे तौ परम सुखपाता है आरोग्यता होतीहै इसीकारण मैं यथा योग्य उनको लिखता हूं तात्पर्य यह है कि जब द्रव्य गुणके पूछनेपर उसे जानकर अनुकूल आहार विहार करनेसे मनुष्य चिरकालतक आरोग्य रह सकता है इस कारण उसकी जिज्ञासा करना सबको उचित है उन सबके उपकारके निमित्त न बहुत विस्तार और न बहुत संक्षेपसे मैं द्रव्यगुण लिखताहूं ॥ १ ॥

अथ मधुररसगुणाः ।

मधुरो धातुविवर्द्धन आयुर्बलवर्णतृप्तिकृत्कण्ठ्यः ।
सन्धानकृन्मुखादिह्लादकरः स्निग्धगुरुशीतः ॥ २ ॥

सम्पूर्ण रसोंमें आयुष्यादिके गुण योगसे मधुररस प्रथम उच्चारण कियाहै, इस कारण पहले उसीके गुण कहे जातेहैं

मधुररस धातुका बढानेवाला, आयुर्बल वर्णका करनेवाला कण्ठका हित करनेवाला, घ्राण जिह्वा कंठ ओष्ठका, तथा उरक्षत मुखका सन्धान करनेवाला, चिकना, भारी और ठंढाहै, इस कारण वात पित्तकाभी जीतनेवालाहै, शीतलपन इसमें स्वाभाविकहै, कहीं उष्णभी होजाताहै, सो संयोगसे होताहै, जैसा चरकमें लिखाहै 'मधुरंकिञ्चिदुष्णंस्याद्यथाचानूपमामिषम्' मधुर रस अनूप देशके मांसकी समान कुछ गरमहै. यद्यपि निर्गुण होनेसे रसोंमें गुण नहीं, परन्तु उपचारसे द्रव्यगुणही रसोंमें निर्देश किये जाते हैं ॥ २ ॥

अम्लोरुचिदीप्तिकरो मन इन्द्रियशोधनो हृदयतर्पी ।
वातानुलोमकृद्बल्यः कण्ठदहः स्निग्धलघुरुष्णः ॥ ३ ॥

अम्लरस रुचिकरनेवाला, दीप्तिकारक, मन इंद्रियको शोधन करनेवाला, हृदयको तृप्तिकारक, पवनका अनुलोम करनेवाला, बलकारक,कण्ठमें दाह करनेवाला, स्निग्ध लघु और उष्णहै ॥३॥

लवणः क्लेदन पाचनो दीपनो विच्छेदनः सरस्तीक्ष्णः ।
कफविष्यन्दीरुचिकृत् स्निग्धगुरूष्णो मुखविशोधी ॥४॥

लवण रस क्लेदकारक, पाचक, दीपन, भग्नकारक, सारक, तीक्ष्ण, कफ स्रावक, रुचिकारक, स्निग्ध, गुरु, उष्ण, मुखका शोधन करनेवाला है, सेंधेमें शीतलता जलकी अधिकतासे है और ' कट्वम्ललवणा आग्नेया इति सुश्रुतोक्तेः ॥ ४ ॥

कटुरास्यंशोधयतिघ्राणाक्षिविरेचनंक्रिमीन्हन्ति ।
रसनोद्वेगकृदुष्णोलघुरूक्षःकुष्ठहारीच ॥ ५ ॥

कटु रस मुख शोधक नासिका नेत्र का विरेचक, क्रिमिहारी, जिह्वाको उद्वेग करने वाला, उष्ण, लघु, रूखा, कुष्ट हरनेवाला है ॥ ५ ॥

तिक्तोनरोचते स्वयमरोचकघ्नो विषघ्नश्च ।
दीपनपाचन शोधन रूक्षः शीतोलघुश्चापि ॥ ६ ॥

तिक्त रस स्वयं नहीं रुचताहै, परन्तु अरुचि और विषको दूर करताहै, दीपन, पाचन, शोधन करने वाला, शीतल और हलका है ॥ ६ ॥

तुवरोहिमगुरुरूक्षः स्तम्भीशमनश्च पीतनोग्राही।
व्रणपाकार्त्तिक्लेदान्निहन्ति कण्ठञ्चबध्नाति॥ ७॥

कषाय रस ठंढा भारी रूखा स्तम्भन करनेवाला, शमन कारक, ग्राही, व्रणपाक, दुःख, क्लेद, को दूर करनेवाला और कण्ठ को बांधनेवालाहै और 'रूक्षः शीतो लघु श्चेति' ऐसा जो चरक में लिखाहै और यह गुरु लिखाहै सो विरोध नहीं आसक्ता अकारका प्रश्लेष करने से अलघु होकर भारी काही अर्थ होताहै, वाग्भट्टमें भी लिखा है "कषायःकफपित्तघ्नो गुरु र्वास्ति विशोधनः" हरीतकी को जो उष्ण लिखाहै और भेदक लिखाहै वह अपवादतासे जाना उत्सर्गतासे नहीं ॥ ७ ॥

शीतं कफमारुतकृद्वीर्य्यं गुरुपित्तनाशनं बल्यम्।
उष्णंकफवातहरं पित्तकरं लघुवृष्यञ्च ॥ ८॥

रसके गुणोंके अनन्तर वीर्य कथन करतेहैं वीर्य मृदु, तीक्ष्ण, गुरु, स्निग्ध, लघु, रूक्ष, उष्ण और शीतल इन भेदोंसे आठ प्रकारकाहै, किसी किसीके मतमें शीत और उष्ण इन भेदोंसे दो प्रकारका है, शीतरस कफ और पवन का करने वालाहै, गुरु, पित्त नाशक तथा बलकारीहै, उष्ण रस कफ वातका हरने वाला, पित्तकारी, लघु और बल करताहै ॥ ८ ॥

शीतं वीर्य्येणयद्द्रव्यं मधुरं रसपाकयोः।
तयोरम्लं यदुष्णञ्च यच्चोक्तं कटुकं तयोः॥ ९॥

जो द्रव्य वीर्यमें शीतल है, वह रस पाकमें मधुर है और उन रस और पाकमें जो अम्ल है, वह वीर्यमें उष्ण जानना और जो द्रव्य रस पाकमें कटु है, वह वीर्यमें उष्ण जानना ॥९॥

कटुर्विपाकः शुक्रघ्नोवद्धविड्वातलोलघुः।

स्वादुर्गुरुः सृष्टमलोविपाकः कफशुक्रलः।
पाकोऽम्लः सृष्टविण्मूत्रः पित्तकृत् शुक्रनुल्लघुः॥१०॥

अब विपाकका स्वरूप निरूपण करते हैं, जठराग्निके योगसे जो रसका परिणाम होता है, उसे विपाक कहते हैं कटु रसका विपाक वीर्यका नाशक, विष्टाका बांधनेवाला, पवन का करनेवाला तथा लघु होताहै, स्वादिष्ट पदार्थोंका पाक गुरु, मल निस्सारक, कफ और शुक्र कारक होता है, अम्ल पदार्थोंका पाक विष्टाका निकालने वाला मूत्र सारक पित्तकरने वाला शुक्र का नाशक और लघु होता है॥ १०॥

शालयोमधुराः शीता लघुपाकाबलप्रदाः।
पित्तघ्नाल्पानिलकफाः स्निग्धबद्धाल्पवर्चसः ॥ ११ ॥

हेमन्त ऋतुके उत्पन्न हुए धान्य लघु और परिपाक में वल देने वाले हैं,पित्त नाशक थोडासा वात और कफ करनेवाले स्निग्ध मल बंधक और अल्पमल बढानेवाले हैं॥ ११॥

रक्तशालिस्त्रिदोषघ्नश्चक्षुष्यः शुक्रमूत्रलः।
तृष्णाघ्नोबलकृत्स्वर्य्यो हृद्यस्तदनुचापरे ॥ १२॥

रक्त शालि त्रिदोष दूर करने वाले चक्षुको हितकारक मूत्र तथा वीर्यके करने वाले, तृष्णा नाशक बलकारी स्वरकारी हृदय को हितकारी हैं, दूसरे धान्य गुणोंमें इन से हीन वीर्य्य वाले हैं॥ १२॥

षष्टिकोमधुरः शीतो लघुवृष्य स्त्रिदोषहा ॥ १३॥

साठीके चावल ठंढे मधुर हलके वीर्यकारी और त्रिदोष नाशक हैं॥ १३॥

मधुरश्चाम्लपाकश्चव्रीहिः पित्तकरोगुरुः।
बहुमूत्रपुरीपोष्मा त्रिदोषस्त्वेवपाटलः॥ १४॥

व्रीहि (जौ) मधुर अम्लपाकी पित्तकारी और गुरुहैं, बहुत मूत्रपुरीपके करने वाले त्रिदोषकारी उष्ण वीर्य करनेवाले पाटल धान्यहैं॥ १४॥

धान्यं शरद् ग्रीष्म भवं पाकेऽम्लं पित्तकृद्गुरु ॥ १५ ॥

जो शरद् और ग्रीष्म में होने वाले धान्य हैं वे पाक में अम्ल पित्तकारी और गुरु हैं ॥ १५ ॥

धान्यं सर्वं समातीतं पथ्यं लघ्वन्यथानवम् ।
ततःपरं लघुतरं रूक्षं वातप्रकोपणम् ॥ १६ ॥

और एक वर्ष के पुराने होकर सब धान्य पथ्य और लघु हो जाते हैं और इसके उपरान्त और भी लघु रूक्ष और वात के कोपकरने वाले हो जाते हैं ॥ १६ ॥

दग्धायामवनौजाताः शालयोलघुपाकिनः ।
कषायावद्धविण्मूत्रा रूक्षाःश्लेष्मापकर्षणः ॥ १७ ॥

दग्ध पृथ्वीमें उत्पन्न हुए धान्य शीघ्र पाकी होते हैं कसेले विट्मूत्र के बांधने वाले रूखे, श्लेष्माको दूर करते हैं ॥ १७ ॥

स्थलजाः कफपित्तघ्नाः कषायाः कटुकानुगाः ।
किञ्चिद् सतिक्तमधुराः पवनानलवर्द्धनाः ॥ १८ ॥

जाङ्गल भूमिमें उत्पन्न हुए कफपित्तको दूर करते हैं पचनेमें चरपरे किञ्चित् कडवे मधुर वात तथा अग्निके बढाने वाले हैं ॥ १८ ॥

रोप्यातिरोप्यालघवः शीघ्रपाकागुणोत्तराः ।
अदाहिनोदोषहरा वल्यामूत्रविवर्द्धनाः ॥ १९ ॥

जो एकवार लगाकर फिर दूसरी जगह लगाये जातेहैं वे लघु शीघ्र पाक होनेवाले गुणोंमें श्रेष्ठ दाह नहीं करते बलकारक और मूत्रके बढानेवाले हैं ॥ १९ ॥

शालयश्छिन्नरूढायेरूक्षास्ते बद्धवर्चसः ।
तिक्ताःकषायाः पित्तघ्नालघुपाकाः कफापहाः ॥ २० ॥

जो धान्य एकवार छिन्न करके फिर बढाये गये हैं वे रूखे और मलवर्द्धक हैं तथा तीखे कसेले पित्तनाशक लघुपाकी कफ नाशक हैं ॥ २० ॥

गोधूमःस्थैर्य्यकृद्वृष्यः स्निग्धःशीतः सरोगुरुः।
सन्धाता बृंहणोवल्यो जीवनोवातपित्तहा ॥ २१ ॥

गेहूं स्थिरता करनेवाले, बलकारक, स्निग्ध, शीतल, सारक और गुरुहैं सन्धान करने वाले बृंहण बलदायक जीवन दायक वात पित्तके हरनेवाले हैं ॥ २१ ॥

यवः स्वादुः कषायश्च कफपित्त हरोहिमः।
व्रणेषु सर्व्वदापथ्यास्तिलवत् पाकतः कटुः ॥
बहुवातपुरीषश्च मेदोवात तृषापहः।
वृष्योवल्योवद्धमूत्रस्थैर्य्याग्निस्वरवर्णकृत् ॥ २२ ॥

यव स्वादु कसेला कफपित्त हरनेवाला ठंढाहै ॥ व्रणोंमें तिलकी समान सदा पथ्य है जैसे व्रण के ऊपर तिलका तेल वात पित्त कफमें हितकारी है इसी प्रकार यवभी सब अवस्थाओंमें व्रणमें हितकारी हैं जैसा कहा है " तिलवत् यव कल्कंतु केचिदाहुर्मनीषिणः। अविदग्धंतु शमयेद्विदग्धं पाचयत्यपि ॥ पक्वं भिनत्ति मन्यश्च शोधयेद्रोपयेदपि " यव काकल्क तिलकी समान है ऐसा किन्ही माहात्माओंका मत है यह अविदग्ध व्रणको शान्त करता और विदग्धको पचा देताहै पक्केको फोड़ कर शोधन रोपण करदेता है कोई व्रणपर यवका मण्ड सदैव अच्छा समझते हैं इसी कारण सुश्रुतमें हित आहित व्रणहित वर्गमें यवका पाठ किया है. कोई इसको पाकमें कटु कहते हैं कटु पाकित्व होनेसे लघुत्व कहाहै कुक्षिमें बहुत वात और पुरीषका करनेवाला मेदकी वात निवारणमें समर्थ, तृषानाशक, वीर्य्यवर्द्धक बलकारक, मूत्रका बांधनेवाला स्थिरता अग्नि और स्वरवर्णका करनेवालाहै ॥ २२ ॥

श्यामकः शोषणोरूक्षो वातलः श्लेष्मपित्तहा।
तद्वच्चकङ्गुनीवारकोरदूषाः प्रकीर्तिताः ॥ २३ ॥

श्यामक (समा) सोखनेवाला, रूखा वातकारी श्लेष्म पित्तका हरनेवाला है और इसीके समान गुणकारी कंगनी निवार कोदों भी हैं ॥ २३ ॥

मुद्गःकषायोमधुरः कफपित्तास्रजिल्लघुः।
ग्राहीशीतः कटुः पाके चक्षुष्योनातिवातलः।
प्रधानाहरितास्तत्रवल्या मुद्गरसाः स्मृताः॥ २४॥

मूंग कसैली मधुर कफपित्त रक्तको नाशनेवाली लघुहैं मलरोधक शीतल पचनेमें कटु नेत्रोंको हितकारी किञ्चित वात वर्धक है उसमें हरी मूंग प्रधान हैं और मूंगकारस बलकारकहै२४

मसूरोमधुरः शीतः संग्राही कफपित्तहा॥ २५॥

मसूर मधुरशीत संग्राही और कफपित्त हरनेवालीहै॥ २५॥

माषोबहुमलोवृष्यः स्निग्धोष्णमधुरोगुरुः।
वातनुद्बृंहणोबल्यो मेदोमांसकफप्रदः॥ २६॥

उडद बहुत मलके करनेवाले बलदायक स्निग्ध उष्ण मधुर गुरु हैं वातको दूरकरने वाले वीर्य करने वाले बलदायक मेदमांस और कफके बढाने वाले हैं॥ २६॥

राजमाषः सरोरुच्यः कफशुक्राम्लपित्तनुत्।
तत्स्वादुर्वातलोरूक्षःकषायोविषदोगुरुः॥ २७॥

राजमाष सारक रुचिकारक कफवीर्य्य तथा अम्लपित्तके दूरकरनेवाले हैं इनका स्वाद वातकारी रूखा कसैला. विषदायक गुरु है॥ २७॥

चणकोवातलः शीतः कफासृक् पित्तपुंस्त्वनुत्॥२८॥

चना वातकरने वाला ठंडाहै कफ रुधिर पित्त और पुरुषता नाशक है॥ २८॥

सतीलावातलारक्तपित्तघ्ना बद्धवर्चसः॥ २९॥

मटर वादी रक्तपित्तका नाश करने वाली, तथा मलको बांधनेवाली है॥ २९॥

तुवरी कफपित्तघ्नो कलायश्चातिवातलः॥ ३०॥

अरहर कफ पित्त नाशक मलबांधती और अधिक वात करनेवाली है॥ ३०॥

मकुष्ठः शीतलोग्राही कफ पित्त ज्वरापहः॥ ३१॥

मोठ शीतल ग्राही कफ पित्त और ज्वरको हरने वालीहै ३१

कुलत्थः कफवातघ्नोग्राह्युष्णस्तुवरःकटुः ।
शुक्राश्मरीगुल्मकासश्वासानाहान् सपीनसान् ।
हन्त्यर्शोमेदसीहिक्कां रक्तपित्तकरश्चसः ॥ ३२ ॥

कुलथी कफ वात नाशक ग्राही गरम कषाय कटु है वीर्य पथरी, गुल्म, कास, श्वास, अनाह, पीनस, अर्श, मेदरोग, हिचकी हरती तथा रक्तपित्तके करनेवाली है ॥ ३२ ॥

वन्यः कुलत्थस्तद्वच्च विशेषान्नेत्र रोगनुत् ॥ ३३ ॥

इसी प्रकार वनकी कुलथी है वह विशेष कर नेत्ररोग को दूर करती है ॥ ३३ ॥

काकाण्डोमात्मगुप्तानां माषवत् फलमादिशेत् ॥ ३४ ॥

शूकशिम्बी कोलशिम्बीकाभी फल उडदकी समान है ऐसा जानना ॥ ३४ ॥

ईषत्कषायोमधुरःसतिक्तः संग्राहकःपित्तकरस्तथोष्णः ।
तिलोविपाके मधुरोबलिष्ठःस्निग्धोव्रणालेपनएव पथ्यः ।
दन्त्योऽग्निमेधाजननोऽल्पमूत्रस्त्वच्योऽतिकेश्योऽ
निलहागुरुश्च ॥ ३५ ॥

कुछ कसेला मधुर तीखा संग्राही पित्तकारक उष्ण और विपाकमें मधुर ऐसे तिल होतेहैं, यह बलकारक, स्निग्ध, व्रण लेपन, पथ्य, दांतोंको हितकारक अग्नि बढानेवाला बुद्धि बढानेवाला थोडा मूत्र लानेवाला त्वचामें हितकारी केशोंको बढानेवाला वात हर और गुरुहै ॥ ३५

तिलेषु सर्वेष्वसितःप्रधानं मध्यःसितोहीनतरास्तथान्ये॥ ३६॥

सब तिलोंमें काले तिल प्रधानहैं, श्वेतमध्यम, ॥ और पीत हरित रंगके गुणोंमें इससे हीनहैं ॥ ३६ ॥

शिम्बास्तुविविधारूक्षावल्लघ्राः स्वादुशीतलाः ।
विदाहिनोऽग्निशमनाविज्ञेयाः कफनाशनाः ।
शुक्रदृष्टिक्षयकराः कटुपाकाः प्रमाथिनः ॥ ३७ ॥

सब प्रकारके शिम्बीधान्य रूखे बलनाशक स्वादु शीतल होते हैं, यह विदाही अग्निके शान्तकरनेवाले और कफ नाशक जानने, वीर्यकी दुष्टता क्षय करनेवाले पाकमें कटु और मलको बांधनेवाले हैं ॥ ३७ ॥

सितासिताःपीतकरक्तवर्णाभवन्तियेऽनेकविधास्तुशिम्बाः ।
यथोदितस्तेगुणतः प्रधानाज्ञेयास्तथोष्णा रसपाकयोश्च३८

श्वेत काले पीले लाल वर्णके अनेक प्रकारके शिम्बी धान्य होतेहैं, वे यथोक्त कहे हुए गुणसे प्रधानहैं वे रसवीर्य विपाकके गुणोंसे एक दूसरेसे श्रेष्ठहैं अर्थात्, कालेसे श्वेत पीलेसे काले, और कालेसे पीले गुणमें श्रेष्ठ हैं, और रसपाकमें उष्णहैं॥ ३८ ॥

सहाद्वयं मूलकजाश्चशिम्बाः कुशिम्बवल्लीप्रभवाश्चशिम्बाः।
ज्ञेयाविपाके मधुरारसेच बलप्रदाः पित्तनिबर्हणश्च ॥३९॥

मुद्गपर्णी माषपर्णी मूलकाशिम्बी कुशुमवल्लीसे उत्पन्न हुए शिंब यह विपाकमें मधुर रसवाले जानने, बल देनेवाले, तथा पित्तके दूर करनेवालेहै ॥ ३९ ॥

विदाहवन्तश्च भृशं विरूक्षा विष्टभ्य जीर्य्यन्त्यनिलप्रदाश्च ।
रुचिप्रदाश्चैव सुदुर्जराश्च सर्व्वेस्मृता वैदलिकाश्च शिम्बाः४०

यह विदाही अत्यन्त रूखे देरसे जीर्ण होनेवाले, वात वर्द्धक रुचि देनेवाले देरमें जीर्ण होनेवाले, वैदलिक अर्थात् गीले शिम्बी धान्य इतने गुणयुक्तहैं ॥ ४० ॥

षष्टिकायवगोधूमा लोहितायेच शालयः ।
मुद्गाढ़कीमसूराश्च धान्येषु प्रवराः स्मृताः ॥ ४१ ॥

सांठी जौ गेहूँ लाल चावल मूंग आढकी मसूर यह धान्योंमें श्रेष्ठ कहे है ॥ ४१ ॥

कफवातहरस्तीक्ष्णः सिद्धार्थोरक्तपित्तकृत् ।
स्निग्धोष्णःक्रिमिकुष्ठघ्नःकटुकोरसपाकतः ॥ ४२ ॥

कफ वातको हरनेवाला तीक्ष्ण रक्त पित्तको करनेवाला

श्वेत सरसों होताहै, यह स्निग्ध उष्ण कृमि और कुष्ठको दूर करनेवाला, रसपाकमें कटुहै ॥ ४२ ॥

तद्गुणाराजिकावाच्यात्तद्गुणोऽन्योपिसर्षपः ।
रसेपाकेच कटुकःकुसुम्भः कफनाशनः ॥ ४३ ॥

वही गुणराईमेंहैं यही गुण दूसरे प्रकारके सरसोंमें होतेहैं कुसुम्भ रस पाकमें कटु और कफ नाशीहै ॥ ४३ ॥

अनार्त्तवं व्याधिहतमपर्य्यागतमेवच ।
अभूमिजं नवश्चापिनधान्यं गुणवत् स्मृतम् ॥ ४४ ॥

बे ऋतुमें उत्पन्न हुए व्याधिसे मारे हुए कच्चे ऊधर अपत्यकादि विषैली भूमिमें उत्पन्न हुए और नये धान्य गुणवाले नहीं होतेहैं ॥ ४४ ॥

यवगोधूममाषाश्च तिलाश्चाभिनवाहिताः ।
पुराणानीरसारूक्षानतथार्थकरामताः ।
विदाहिगुरुविष्टम्भिविरूढं दृष्टिदूषणम् ॥ ४५ ॥

इति धान्यवर्गः ।

जौ गेहूं उड़द तिल यह नये अच्छे होतेहैं यह पुराने पड़कर नीरस-सूखे होकर उतने गुण युक्त नहीं रहतेहैं, और अंकुरित हुए धान्य विदाहि भारी मलरोधक, विरूढ़ तथा दृष्टिको दूषण करनेवाले हैं ॥ ४५ ॥

इति धान्यवर्गः ।

अथमांसवर्गः ।

सर्व्वं वातहरं मांसं वृष्यं बल्यं स्मृतंगुरु ।
प्रीणनं बृंहणं हृद्यं मधुरं रसपाकयोः ॥ १॥

संपूर्णमांस वात हारक, वीर्य वर्द्धक, बलवर्द्धक तृप्ति कारक भारी हृदयको हितकारी रस तथा पाकमें मधुरहै ॥ १ ॥

हरिणः शीतलोबद्धविण्मूत्रोदीपनोलघुः ।
मधुरोमधुरः पाके सुगन्धिर्दोषनाशनः ॥ २ ॥

हरिणका मांस शीतल मलबन्धक मूत्ररोधक दीपन लघुहै, मधुरहै पाकमें भी मधुर सुगन्धिका करनेवाला त्रिदोष कानाशकहै ॥२॥

कपायोमधुरोहृद्यः पित्तासृक् कफवातहा ।
संग्राहीरोचनोबल्यस्तेपामेणोज्वरापहः ॥ ३ ॥

काले हिरणका मांस कसेला मधुर रक्तपित्त निवारक कफ निवारक, हृदयको हितकारी संग्राही रुचिकारक बलदायक ज्वरका हरनेवालाहै ॥ ३ ॥

शशःस्वादुःकपायश्चलघुःपित्तकफापहः ।
नातिशीतलवीर्य्यत्वाद्वातसाधारणोमतः ॥ ४ ॥

खरगोशका मांसस्वादिष्ट, कसैला, लघुपित्त, और कफका हरनेवाला है, वीर्य करनेसे अति शीतल नहीं है, वातमें साधारणहै ॥ ४ ॥

नातिशीतंगुरुस्निग्धं मांसमाजमदोपलम् ।
शरीरधातुसामान्यादनभिष्यन्दिबृंहणम् ॥ ५ ॥

बकरेका मांस अधिक शीतल नहीं है, भारी स्निग्ध और दोष रहितहै, अभिष्यंदि, किंचित् उष्ण और धातु साम्यकारकहै ॥ ५ ॥

मेषस्य मधुरं मांसं पित्तश्लेस्महरं गुरु ॥ ६ ॥

मेषकामांस मधुर पित्त और श्लेष्माकाजीतनेवालाहै भारीहै६

मेदः पुच्छोद्भवं वृष्यमौरभ्रसदृशं गुणैः ॥ ७ ॥

मेद् पुच्छनाम मेषका मांस अर्थात् पुच्छ देशमें लम्बा यमाने मांसपिण्ड पुरुषत्वका बढानेवाला, गुणोंमें बकरेकीसमान है ॥७॥

माहिषं तर्पणं वृष्यं स्निग्धोष्णं मधुरं गुरु ।
निद्रापुंस्त्वबलस्तन्यवर्धनंमांसदार्ढ्यकृत् ॥८॥

महिषका मांस तृप्तिकारक, बलकारक, स्निग्ध उष्ण और मधुर तथा भारी है, निद्राकारक पुरुषता बल और स्तनोंमें दूध बढानेवालाहै, तथा शरीरके मांसको दृढ करनेवालाहै ॥८॥

शुष्ककासश्रमात्यग्नि विषमज्वरपीनसान्।
कार्श्यं केवलवातांश्च गोमांसं सन्नियच्छति ॥ ९ ॥

सूखी खांसी श्रम अग्नि विषम ज्वर पीनस कृशता और केवलवात रोगोंको गोमांस दूर करताहै ॥ ९ ॥

हयमांसं बलकरमुष्णं मारुतनाशनम् ॥ १० ॥

घोडेका मांस, बलकारक, उष्ण बातका नाशकरनेवाला है१०

गवयस्यापिमांसन्तु स्निग्धंकासनिवर्हणम्।
रसेपाकेच मधुरं व्यवायस्यतुवर्द्धनम् ॥ ११ ॥

गवयका मांस स्निग्ध और कास रोगको दूर करने वालाहै॥ रस और पाकमें मधुर तथा वीर्यको बढानेवालाहै ॥ ११ ॥

खड्गिमांसं कफघ्नन्तु कषायमनिलापहम्।
पैत्र्यंपवित्रमायुष्यं बद्धमूत्रं विरूक्षणम् ॥ १२ ॥

गैंडेका मांस कफ नाशक कसेला अनिल रोगका दूर करनेवालाहै, पितरोंका हित कारक अवस्था स्थापक, मूत्र रोधक और रूखाहै ॥ १२ ॥

वराहपिशितंबल्यंरोचनंस्वेदनंगुरु।
स्नेहनं बृंहणंवृष्यं श्रमघ्नमनिलापहम् ॥ १३ ॥

वराहका मांस बलकारक, रोचक, स्वेद कारक, भारी है स्नेहन, पुरुषत्व कारक,बलकारक,श्रम और बात नाशकहै॥१३॥

लावोलघुःकटुर्ग्राहीस्वादुःशीतस्त्रिदोषनुत् ॥ १४ ॥

लवापक्षीकामांस लघु कटु ग्राही स्वादु शीतल और त्रिदोषका दूर करनेवालाहै ॥ १४ ॥

तित्तिरिः सर्व्वदोषघ्नोग्राहीवर्णप्रसादनः।
ईषद्गुरूष्णमधुरोवृष्योमेधाग्निवर्द्धनः ॥ १५ ॥

तीतरका मांस सब दोषका दूर करनेवाला ग्राही और वर्णका प्रसन्न करनेवालाहै,कुछ गरम मधुर बल वर्द्धक बुद्धि और अग्निका बढाने वालाहै ॥ १५ ॥

पित्तश्लेष्मविकारेषुसरक्तेषु कपिञ्जलाः।
मन्दवातेषु शस्यन्ते शैत्यमाधुर्य्यलाघवात् ॥ १६ ॥

कपिञ्जल (गौरातीतर) का मांस ॥ पित्तकफके विकारमें रक्त तथा मन्दवातमें शीत मधुर और लघु होनेसे हितकारीहै ॥ १६ ॥

ईषदुष्णागुरुस्निग्धाबृंहणावर्त्तकाःस्मृताः ॥ १७ ॥

कुछ गरम स्निग्ध और बृंहण वर्तकका मांस होताहै ॥ १७ ॥

क्रकरालघवोहृद्यास्तथाचैवोपचक्रकाः।
वातपित्तहरावल्या मेधाग्निबलवर्द्धनाः ॥ १८ ॥

क्रकर लवाकी समान कपिञ्जल (तीतर) से कुछ स्थूल कामांस लघु,हृदयको हितकारक होताहै, चकवा और उपचक्रके मांसभी इसी प्रकार वात पित्तके हरनेवाले बुद्धि अग्निके बढानेवाले हैं ॥ १८ ॥

वर्हीदृक्श्रोत्रमेधाग्निवयोवर्णस्वरायुषाम्।
हितोबल्योगुरुश्चोष्णोवातघ्नोमांसशुक्रलः ॥ १९ ॥

मोरकामांस दृष्टि श्रोत्र बुद्धि अग्नि वयवर्ण स्वर आयुका बढानेवाला हितकारी बल दायक भारी उष्ण वात नाशक मांस और वीर्य बर्द्धकहै ॥ १९ ॥

पारावतोगुरुः शीतोरक्तपित्तहरःस्मृतः।
रसेपाकेच मधुरःकषायोविषदोपिच ॥ २० ॥

कबूतरका मांस भारी शीतल रक्तपित्त हरनेवाला है, रसपाकमें मधुर कसेला तथा विषदाताहै ॥ २० ॥

तेभ्योलघुतराःकिञ्चित् कपोतावनवासिनः।
शीताःसंग्राहिणश्चैव स्वल्पमूत्रकराश्चते ॥ २१ ॥

जंगली कबूतरके मांसके गुण कुछ उनसे न्यूनहैं, वे ठंडे संग्राही और स्वल्प मूत्र कारक हैं ॥ २१ ॥

जंगली पाण्डु वर्णका कपोत (गयदासकामत) कसैला स्वादु और नूनखराहै ॥ २१ ॥

कषायः स्वादुलवणा गुरुःकाणकपोतकः ॥ २२ ॥

वनके मुरगे का मांस स्वेद स्वर और बल कारक है ॥ २२ ॥

कुक्कुटोबृंहणो वन्यः स्वेदस्वरबलावहः ।
स्निग्धोष्णोनिलहावृष्योग्राम्यस्तद्वद्गुरुस्तुसः ॥ २३ ॥

और ग्राम्य मुरगेका मांस स्निग्ध उष्ण वात नाशक वृष्य और भारीहै ॥ २३ ॥

कुलिङ्गोमधुरः स्निग्धः कफशुक्रविवर्द्धनः ।
सन्निपातहरोवेश्मकुलिंगस्त्वतिशुक्रलः ॥ २४ ॥

कुलिंग चिड़ियाकामांस मधुर स्निग्ध कफ और वीर्यका बढाने वाला सन्निपातका हरने वालाहै और घर का कुलिंग अधिक वीर्य करताहै ॥ २४ ॥

शुकमांसं कषायाम्लं विपाकेरूक्षशीतलम् ।
शोषकासक्षयहितंसंग्राहिलघुदीपनम् ॥ २५ ॥

तोते का मांस कसैला अम्ल विपाकमें रूखा और शीतल है सोष रोग, खांसी, क्षयमें हितकारक संग्राहि लघु और दीपनहै ॥ २५ ॥

गुरूष्णस्निग्धमधुराः स्वरवर्णबलप्रदाः ।
बृंहणाः शुक्रलाश्चोक्ता हंसाः पवननाशनाः ॥ २६ ॥

हंसोंकेमांस भारी स्निग्ध मधुर स्वर वर्णबलके देनेवाले, बृंहण वीर्यवर्द्धक वातके हरनेवालेहैं ॥ २६ ॥

शरारिबककादम्बबलाकाः पवनापहाः ।
स्निग्धाःसृष्टमलावृष्या रक्तपित्तहराहिमाः ॥ २७ ॥

शरारी और बक कलहंस बलाका का मांस वात जित स्निग्ध मल सारक बल कारक रक्त पित्त हरनेवाला और शीतलहै ॥ २७ ॥

कूर्मादयः स्वादुपाकरसाबल्यानिलापहाः ।
शीताःस्निग्धाहिताः पित्तेवर्चस्याः श्लेष्मवर्द्धनाः ॥२८॥

कूर्मादिक स्वादुपाक रसवाले बलकारक वातजित् शीतल, स्निग्ध, हितकारी, पित्तमें हितकारी मल कारक श्लेष्मवर्द्धकहैं२८

कृष्णः कर्कटकस्तेषां बल्यः कोष्णोऽनिलापहः।
शुक्रसन्धानकृत् सृष्टविण्मूत्रोऽनिलपित्तहा ॥ २९ ॥

काला कैंकडा बलकारक कुछ उष्ण, वातजित् वीर्यका सन्धान करने वाला विष्टामूत्रका उत्पन्न करता वात पित्त हरनेवालाहै ॥ २९ ॥

गोधाविपाकेमधुरा कषायकटुकारसे।
वातपित्तप्रशमनीबृंहणी बलवर्द्धिनी ॥ १ ॥

गोधा (गोय) का मांसपाकमें मधुर कसेलाहै रसमें कडुहै वातपित्तका शान्त करनेवाला बृंहण और बलको बढानेवाला है

शल्यकः स्वादुपित्तघ्नोलघुशीतोविषापहः ॥ २ ॥

शल्यक (सेही) कामांस स्वादु पित्त का नाश करनेवाला लघु शीतल और विषका नाशकहै ॥ २ ॥

मूषिकोमधुरःस्निग्धोव्यवायीशुक्रवर्द्धनः ॥ ३ ॥

मूषक का मांस मधुर स्निग्ध सब शरीर में व्याप्त होकर पकनेवाला तथा वीर्यका बढाने वालाहै ॥ ३ ॥

दुर्नामानिलदोषघ्नाः क्रिमिदूषीविषापहाः।
चक्षुष्यामधुराःपाके सर्पा मेधाग्निवर्द्धनाः ॥ ४ ॥

दुर्नाम (बवासीर) वात दोषका हरनेवाला, कृमि दूर करनेवाला, विष का नाशक है, नेत्रोंको हितकारी पाकमें मधुर बुद्धि और अग्निका बढाने वाला सर्पका मांस होता है ॥ ४ ॥

जंघालावातपित्तघ्ना स्तीक्ष्णावस्तिविशोधनाः।
कषायमधुराश्चैव लघवोबलवर्द्धनाः ॥ ५ ॥

मांस दो प्रकारके होतेहैं, जाङ्गल और अनूप, जाङ्गल वर्ग आठ प्रकारकाहै, जङ्घाल (शीघ्रगामी हिरण आदि) विष्किर (चोंच चरणसे बखेरकर खानेवाले, बतक मोर मुरगा आदि) प्रतुद (बहुत प्रकार प्रहार करनेवाले मैना भृङ्गराजतो-

ते आदि, (गुहावासी सिंहव्याघ्रादि) प्रसह्य (हठसे खैंचकर खानेवाले काक कुररकङ्क गृध्रादि) पर्णमृग (पत्तेवाले वृक्षोंमें विचरनेवाले वानर वनमानस आदि वृक्ष मूषिक आदि (विलेशय शल्यक गोयमूसा आदि) ग्रामचराः (गांवमें रहनेवाले छागमेषादि) और अनूप पांच प्रकारकाहै कूलचर (पानीके समीपमें फिरनेवाले, हाथी गवय महिष आदि) (प्लव जलमें तैरनेवाले हंस सारस क्रौंच चकवाचकवी आदि) कोषस्थ (कोषमें स्थित होनेवाले शंखशुक्ति शम्बूक आदि) पादवन्ताः (चरणवाले कूर्म कुंभीर कर्कट आदि) और मत्स्य प्रसिद्धहैं जाङ्गल जीवोंका मांस वात पित्तका दूर करनेवाला तीक्ष्ण तथा वस्तीका शुद्ध करनेवालाहै,कसेला मधुर लघु और बलका बढाने वालाहै५

विष्किरामधुराः शीताः कपाया लघुपाकिनः ॥ ६ ॥

विष्किर जीवोंका मांस मधुर शीतल कसेला लघुपाकीहै॥६॥

प्रतुदाः कपायमधुराः श्लेष्मपित्तहराहिमाः ।
वद्धमूत्रमलारुक्षाः फलाहारानिलावहाः ॥ ७ ॥

प्रतुदजीवोंका मांस कसेला मधुर कफ पित्तका हरनेवाला ठंढाहै, मूत्रमलका बांधने वाला रूखाहै फलका आहार पवनका करनेवालाहै ॥ ७ ॥

गुहाशयावातहरा नेत्रगुह्यविकारिणाम्॥
हितागुरूष्णमधुराः स्निग्धामांसाशिनोधिकम् ॥ ८ ॥

गुहामें शयन करनेवाले जीवोंका मांस वात हारक नेत्र तथा गुह्य स्थानमें विकार करनेवालाहै हितकारी गुरु गरम मधुर स्निग्धता यह अधिक करताहै ॥ ८ ॥

प्रसहाः स्वादुवीर्य्योष्णास्तेषां मांसाशिनस्तुये।
तेशोपभस्मकोन्मादे हिताः क्षीणेविशेषतः ॥ ९ ॥

प्रसह जीवोंका मांस स्वादुवीर्यमें उष्णहै जो इनका मांस खातेहैं उनका शोष भस्मक उन्माद और क्षीण रोग विशेष करके दूर होताहै ॥ ९ ॥

दक्षशुक्रास्त्रहितः पर्णमृगः स्वादुर्गुरुस्तथा।
सृष्टमूत्रपुरीषश्च कासार्शः श्वासनाशनः ॥ १० ॥

पर्ण मृगवाले जीवोंका मांस स्वादु और भारीहै मूत्र पुरीषका बनानेवालाहै खांसी बवासीर और श्वास रोगका दूर करनेवालाहै ॥ १० ॥

बिलेशयावातहरा बृंहणारसपाकयोः।
मधुरावद्धविण्मूत्रा वीर्य्योष्णाश्च प्रकीर्त्तिताः ॥ ११ ॥

बिलमें शयन करनेवाले जीवोंका मांस वात हारकहै रस पाकमें वीर्यकी वृद्धि करताहै तथा यह मांस मधुर विष्ठा मूत्रके बांधनेवाले उष्ण वीर्य कहे हैं ॥ ११ ॥

ग्राम्यावातहराः सर्व्वे बृंहणाः कफपित्तलाः।
मधुराः रसपाकाभ्यां दीपनाबलवर्द्धनाः ॥ १२ ॥

ग्राम्य जीवोंका मांस वातका हरनेवाला वीर्य वर्द्धक कफपित्त का करनेवाला रस पाकमें मधुर दीपन और बलका बढानेवालाहै ॥ १२ ॥

कूलचरामरुत्पित्तहरावृष्या बलावहाः ॥
मधुरास्निग्धशीताश्च मूत्रलाः श्लेष्मलास्तथा ॥ १३ ॥

किनारेपर फिरनेवाले जीवोंका मांस वात पित्त हारक वीर्य वर्द्धक बलकारक, मधुर स्निग्ध शीतल मूत्र सारक तथा कफ कारकहै ॥ १३ ॥

प्लवावृष्याहिमाः स्निग्धारक्तपित्तानिलापहाः।
सृष्टमूत्रपुरीषाश्च मधुरा रसपाकयोः ॥ १४ ॥

तैरनेवाले जीवोंका मांस वृष्य ठंडा स्निग्ध रक्त पित्त और वात हरताहै मूत्र पुरीषका निर्माता रस पाकमें मधुरहै ॥ १४

कोषस्थाः पादिनश्चैव स्निग्धाः शीतानिलापहाः।
वर्चस्याः मधुरावृष्याः पित्तघ्नाः कफकारकाः ॥ १५ ॥

कोशस्थ और चरणवालोंका मांस स्निग्ध शीतल तथा अग्निका बढानेवालाहै, मलकारक मधुर शुक्रकारक पित्तनाशी और कफकारकहै ॥ १५ ॥

मत्स्याः स्निग्धोष्णमधुरा वातजिन्मललोमनाः ।
पित्तमांसवलश्लेष्मशुक्राभिष्यन्दकारकाः ॥ १६ ॥

मत्स्य स्निग्ध उष्ण मधुर वातजित मलके करनेवाला पित्त मांस बलश्लेष्मा शुक्र और स्वेदका करनेवाला है ॥ १६ ॥

रोहितः सर्व्वमत्स्यानां वरोवृष्योऽर्दितार्त्तिजित् ।
कपायानुरसः स्वादुर्वातघ्नोनातिपित्तकृत् ॥ १७ ॥

सब मछलियोंमें रोहू मछली श्रेष्ठहै यह बलकारक अर्दित और दुःखको जीतनेवालीहै. यह रसमें कसेली स्वादु वात नाशक बहुत करके पित्तको नहीं- करतीहै ॥ १७ ॥

शकुलोमधुरोरुच्यः कषायोविषदोलघुः ॥ १८ ॥

शकुल (एकप्रकारकी) मछली मधुर रुचिकारक कसेली विषदायक.मधुरहै ॥ १८ ॥

शिलिन्दः श्लेष्मलोवल्योविपाके मधुरोगुरुः ।
वातपित्तहरोवृष्य आमवातकरोमतः ॥ १९ ॥

शिलिन्द मत्स्य श्लेष्मा कारक बलदायक विपाकमें मधुर और गुरुहै, वात पित्तहारक बलकारक तथा आम वातका करनेवालाहै ॥ १९ ॥

आडिमत्स्यो गुरुःस्निग्धः स्वादुर्वृष्योवलप्रदः ॥ २० ॥

आंडी मत्स्य गुरु स्निग्ध स्वादुवीर्य और बलका करनेवालाहै२०

इल्लिसोमधुरः, स्निग्धः पित्तश्लेष्मप्रकोपणः ।
नृणां व्यवायनित्यानां हितोवह्निविवर्द्धनः ॥ २१ ॥

इल्लिस मत्स्य मधुर स्निग्ध पित्त और श्लेष्माका क्षोध करने वाला मनुष्योंके शरीरमें फैलनेवाला हितकारी अग्निका बढाने वालाहै ॥ २१ ॥

एलङ्गः स्निग्धः मधुरोगुरुर्विष्टम्भिशीतलः ॥ २२ ॥

एलङ्ग मत्स्य स्निग्ध मधुर गुरु विष्टम्भी और शीतलहै॥२२॥

पर्व्वतोमधुरः स्निग्धः कषायानुरसोगुरुः ॥ २३ ॥

पर्वत मत्स्य मधुर स्निग्ध कसेला रसकारक और गुरुहै ॥ २३

भाकुटोमधुरोवृष्यः कषायानुरसोगुरुः ॥ २४ ॥
भाकुट मत्स्यका मांस मधुर पुरुषार्थ कारक कसैला रसमें गुरुहै२४
पाठीनः श्लेष्मलोवृष्यो निद्रालः पिशिताशनः ॥
दूषयेद्रक्तपित्तञ्च कुष्टरोगं करोत्यसौ ॥ २५ ॥
पाठीन मत्स्य श्लेष्मा कारक पुरुषार्थकारक निद्राकारकहै
इसका मांस रक्त पित्तको दूषितकर कुष्ठ रोग करताहै ॥ २५ ॥
वर्मिमत्स्यस्तथावृष्यो मधुरोरसपाकतः ॥ २६ ॥
वर्मि मत्स्य बलकारक रसपाकमें मधुरहै ॥ २६ ॥
कुलिशः कषायमधुरः कुञ्जकः कफपित्तहा ॥ २७ ॥
कुलिश मत्स्य कसैला मधुरहै,कुञ्जक कफ पित्त दूर करताहै२७॥
शृङ्गीतु वातशमनी स्निग्धाश्लेष्म प्रकोपणी ॥ २८ ॥
शृङ्गीवात शान्त करनेवाला, स्निग्ध श्लेष्माका करनेवालाहै२८॥
मद्गुरोमधुरोवृष्योविपाके मधुरोगुरुः ॥ २९ ॥
मद्गुर मत्स्य मधुर वृष्य विपाकमें मधुर और गुरुहै ॥ २९ ॥
गुत्थमत्स्योगुरुःस्निग्धःश्लेष्मलोवातनाशनः ॥ ३० ॥
गुत्थ मत्स्य भारी स्निग्ध कफकारी वात नाशक है ॥ ३० ॥
कवय्यःस्निग्धमधुराः चलदङ्गोगडोयथा ॥ ३१ ॥
कवय्य मृगका मांस मधुरहै और चलदंग मत्स्य रूखा है३१॥
क्षुद्रमत्स्यास्तुलघवो ग्राहिणोग्रहणीहिताः ॥ ३२ ॥
क्षुद्र मत्स्य लघु ग्राही ग्रहणी रोगमें हितकारक है ॥ ३२ ॥
मत्स्य कूर्मखगाण्डानि स्वादुवाजीकराणिच ॥ ३३ ॥
मत्स्य कछुए और पक्षियोंके अण्डे स्वादु और वाजी कर हैं३३
चरः शरीरावयवः स्वभावोधातवः क्रियाः ।
लिंगं प्रमाणं संस्कारोमात्राचास्मिन् परीक्ष्यते ॥ ३४॥
मांस भक्षणमें चरजीवोंके शरीरके अवयव स्वभाव धातु
क्रिया लिंग प्रमाण संस्कार, मात्राकी परीक्षा कही है, अर्थात्
देश विशेषसे भक्ष्य विशेषसे मृगादिका गुरु लघु पना

वर्णन किया है, इस कारण जल चरादि जीवोंकी परीक्षा अवश्य करनी, शरीर अवयवकी परीक्षा करनी जैसा लिखा है कि विहंगोंकी उरु और ग्रीवा विशेषकर गुरु हैं, सक्थि मांस सेभी भारी, क्रोड स्कंध शिर स्थान और भी भारी हैं, स्वभाव सबमें जातीय धर्म है, जैसे मूंग लावक कपिंजल स्वभावसेही हलके हैं, धातु शोणित आदि उत्तरोत्तर एक दूसरे से भारीहैं, चेष्टा, बहुत चेष्टावाले प्राणी, आलसियों से विशेष हैं, अर्थात लघुहैं, लिंगमें पुरुष गुरु और स्त्री लघुहैं, हारीतने कहा है, चौपायोंमें स्त्री लघुहैं, पक्षियोंमें पुरुष लघु हैं, जातू कर्णने भी कहाहै वन्ध्याछागी श्रेष्ठहै वहन मिले तो बकरी लेनी, पाराशरकहते हैं चौपायोंमें स्त्री और विहंगोंमें पुरुष लेना, प्रमाणमें जैसे महा शरीरवाले अपनी जातिमें भारी हैं संस्कार जैसे मांस रसके निर्देशमें सुश्रुतने कहाहै स्नेह गोरस धान्य अम्ल फल और जो वस्तु अम्ल युक्त हैं वह यथोत्तर गुरुहैं, ऐसाही चरकमें लिखाहै "गुरूणां लाघवं विद्यात् संस्काराद् सविपर्य्ययम् ब्रीहे लाजा यथा सस्युः शक्तूनांसिद्ध पिण्डिका" इति संस्कारसे लघु भारी हो जाते हैं, जैसे भारी धानोंकी खीलें हलकी होतीहैं, लघु सत्तुओंकी सिद्ध पिण्डिका भारी होतीहैं (अग्निमें पकाये पिण्ड) मात्राके वशसे हलका भारी और भारी हलका हो जाताहै, थोडी देनेसे भारी की मात्रा हलकी, और हलकी की भारी होजातीहै, चकारसे अग्निबलसे लघु भारी जानना ॥ १४ ॥

कृशात्स्वयंमृतान्मांसंविषव्याडहतादपि ।
बालंतोयाग्निविक्लिन्नंरोगिशुष्कं नपूजितम् ॥
अगोचरभृतंयच्चमेध्यंवृद्धंतथैवच ।
सिद्धंपर्युषितंतद्वद्दुर्गन्धिग्रथितश्चयत् ॥
क्रिमिजग्धश्चयन्मांसमायुःकामोविवर्जयेत् ॥ १५ ॥

कृशजीवका, स्वयं मृतक हुएका, विषखायेका व्याघ्रादिसे हत हुएका बाल अवस्थाका जल अग्निसे व्याकुलका रोगी तथा शुष्कजीवका मांस अच्छा नहीं होता जो अनूप धन्व देशमे पुष्ट हुआ हो जिसका भेद बढ गया हो बनाकर बासी

हो गया हो जिसमें दुर्गन्धि और गांठ पड़गई हो, जो मांस कीड़ों काखाया हो, आयुकी इच्छावाला उसे न खाय ॥ ३५ ॥

एभ्योऽन्येषामुपादेयं मांसं दोषविवर्जितम्।
लावतित्तिरि सारङ्ग कुरङ्गैणकपिञ्जलाः ॥
मयूर वर्मिकूर्माश्च श्रेष्ठामांसगणेष्विह ॥ ३६ ॥

इससे अन्यदोष रहित मांसको लेना चाहिये, लावा, तीतर सारंग, कुरंग, षणमृग, कपिंजल, मयूर, रोहित, मत्स्य, और कूर्म इनका मांस अच्छा होता है ॥ ३६ ॥

पोताधानास्तुसर्वेषां सुस्निग्धा लघुदीपनाः।
महाप्रमाणागुरवः क्रियावन्तो ऽल्पचेष्टिनः ॥ ३७ ॥

छोटी मछलियोंके समूह के अण्डे सबके लघु और दीपन होते हैं, तथा स्निग्ध होतेहैं महा प्रमाण वाले भारी क्रियावाले और अल्पचेष्टा वाले होतेहैं ॥ ३७ ॥

मत्स्याण्डानि विशेषेण वातपित्तहराणिच।
ज्ञेयानिहृद्यरुच्यानि कटुपाकीनिचैवहि ॥ ३८ ॥

मत्स्यके अण्डे विशेषकर वात पित्त को हरते हैं, यह हृदयको रुचिकारक और कटु पाकीहैं ॥ ३८ ॥

हंसबीजं परं वल्यं बृंहणं वातनाशनम्।
पाकेलघुतरं प्रोक्तं सर्वामयविवर्जितम् ॥ ३९ ॥

हंसका अंडा परम बलकारक पुरुषार्थ कारक वात नाशकहै पाकमें अत्यन्त लघु सर्व रोग वर्जित है ॥ ३९ ॥

विष्टम्भिनः शुष्कमत्स्या अमल्यादुर्जरामताः।
सिद्दलाग्रहणीदोषशमनी पवनापहा ॥ ४० ॥

इति मांसादिवर्गः।

सूखी मच्छी मलरोकने वाली, बल रहित देरमें पचतीहै, विष्टम्भी ग्रहणी दोषको शान्त करने वाली तथा वात नाशकहै ४०

इति मांसवर्गः।

शाकानिप्रायशस्तानिविष्टम्भीनि गुरूणिच ।
रूक्षाणिबहुवर्चांसि सृष्टविण्मारुतानिच ॥ १ ॥

प्रायःसम्पूर्ण श्रेष्ठ शाक विष्टम्भी और मल रोकनेवाले तथा भारी होतेहैं, रूखे अधिक मलप्रवृत्त करनेवाले वात युक्त होतेहैं १

पत्रं पुष्पं फलं नालं कन्दं संस्वेदजं तथा ।
शाकं षड्विधमुद्दिष्टं गुरुविद्याद्यथोत्तरम् ॥ २ ॥

पत्र, पुष्प, फल, नाल, कन्द, संस्वेदजके भेदसे शाक छः प्रकारकाहै, यह उत्तरोत्तर गुरु जानना ॥ २ ॥

जीवन्ती सर्वं दोषघ्नी चक्षुष्या मधुराहिमा ॥ ३ ॥

जीवन्ती (डोडी) सब दोषोंको दूर करनेवाली चक्षुओंको हितकारक मधुर है ॥ ३ ॥

तण्डुलीयमसृक्पित्तविषनुत्स्वादुपाकतः ॥ ४ ॥

चौलाईका शाक रुधिरं पित्त विकार विष दूर करनेवाला पाकमें स्वादुहै ॥ ४ ॥

वास्तूकस्तुसरोहृद्यो दोषनुत्पाकतोलघुः ।
स क्षारः क्रिमिहामेध्यो रुच्योऽग्निबलवर्द्धनः ॥ ५ ॥

वास्तूक (बथुआ) सारक हृदयको हितकारी दोष नाशक पाकमें लघुहै, उसका क्षार क्रिमि नाशक, बुद्धि बढानेवाला, रुचिकारक अग्नि और बलका बढानेवालाहै ॥ ५ ॥

लघुपत्रीतुयाचिल्ली सावास्तूकसमामता ॥ ६ ॥

और लघुपत्रवाला चिल्ली शाक वास्तूककी समान कहाहै ६॥

मूलकपोतिका कण्ठ्या सर्वं दोषहरीलघुः ।
कटु तिक्तरसाहृद्या रोचनीवह्निदीपनी ॥ ७ ॥

मूलकपोतिका(छोटी मूली)कंठको हितकारक सब दोष नाशक और लघुहै, रसमें कटु और तिक्त हृदयको हितकारक सर्व दोष हरनेवाली रुचिकारक अग्नि प्रदीप करनेवालीहै ॥ ७ ॥

महत्तद्गुरुविष्टम्भितीक्ष्णमामंत्रिदोषकृत् ॥ ८ ॥

और पकी हुई मूलीविष्टम्भी तीक्ष्ण आम और त्रिदोषकी करनेवालीहै ॥ ८ ॥

तदेवस्निग्धसिद्धन्तु वातनुत्कफपित्तकृत् ॥ ९ ॥

और यही स्निग्ध सिद्धकी हुई वात नाशक कफ और पित्तकी करनेवालीहै ॥ ९ ॥

शुष्कन्तु शोथशमनंगरदोषहरंलघु ॥ १० ॥

सूखी शोथ रोगकी शान्त करनेवाली विष दोष नाशक लघु है ॥ १० ॥

तत्फलंकफवातघ्नं तत्पुष्पं कफ पित्तजित् ॥ ११ ॥

इसका फल कफ वातका नाश करनेवाला और इसका पुष्प कफ पित्तका जीतनेवालाहै ॥ ११ ॥

हिलमोचीतु कुष्ठघ्नीभेदनीकफपित्तनुत् ॥ १२ ॥

हिलमोच (हुलहुल) कुष्ठ दूर करनेवालाहै भेदन और कफ पित्तनाशकहै ॥ १२ ॥

उपोदिकासरास्निग्धा बल्याश्लेष्मकरीहिमा ।
स्वादुपाकरसावृष्या वातपित्तमदापहा ॥ १३ ॥

उपोदिका (पोई) सारकहै स्निग्ध बल और श्लेष्माकी करने वालीहै पाकमें स्वादु रस युक्त बलकारक वातपित्त मदकी दूर करनेवालीहै ॥ १३ ॥

सुनिषण्णन्तु संग्राहि अविदाहि त्रिदोषनुत् ॥ १४ ॥

सुनिषण्ण (सुनसुनिया) संग्राही अदाहक और त्रिदोष दूर करनेवालीहै ॥ १४ ॥

मारिषोमधुरःशीतोविष्टम्भीगुरुपित्तनुत् ॥ १५ ॥

मारिष (मरसा) मधुर ठंढा विष्टम्भी भारी और पित्तका दूर करनेवालाहै ॥ १५ ॥

पालङ्क्याबद्धविण्मूत्राकफघ्नी तण्डुलीयवत् ॥ १६ ॥

पालङ्क (पालक) विष्टामूत्रको बांधने वाला कफ नाशक गुणमें चौलाईकी समानहै ॥ १६ ॥

कासमर्दोग्निदःकण्ठ्यःस्वादुस्तिक्तस्त्रिदोषनुत् ॥ १७ ॥

कासमर्द (कसौंदी) अग्निदाता कण्ठको हितकारक स्वादु तीखा त्रिदोष दूर करनेवालाहै ॥ १७ ॥

कालशाकं गरश्लेष्म शोथघ्नं दीपनं कटु ॥ १८ ॥
काल शाक विष श्लेष्म शोथका हरने वाला, दीपन और कटुहै ॥ १८ ॥

कलायपत्रं मधुरं रूक्षं भेदिचवातलम् ॥ १९ ॥
कलायपत्र(मटरके पत्ते)मधुर रूखा भेदी और वात करताहै१९

सतीलकं त्रिदोषघ्नं कटुपाकं सतिक्तकम् ॥ २० ॥
सतीलक शाक त्रिदोष नाशक पाकमें कटु और तीखाहै २०

चाणकं दुर्जरं स्वादुकौसुम्भन्तु कफापहम् ॥ २१ ॥
चना कठिनतासे पचनेवाला स्वादिष्ठहै कुसुम्भका शाक कफकानाशकारकहै ॥ २१ ॥

पुनर्नवायुग्म मुष्णवीर्य्यं रसायनं सरम् ।
कफानिलामदुर्नामव्रध्नशोथोदरापहम् ॥ २२ ॥
दोनों पुनर्नवा गरम और वीर्य्यमें रसायन है तथा सारक है कफ वात आम पिडिका अर्श व्रध्न शोथ उदर रोगको दूर करता है ॥ २२ ॥

कञ्चटं तिक्तकं ग्राहिरक्तपित्तापहं स्मृतम् ॥ २३ ॥
कंचट शाकतीखा ग्राही और रक्तपित्त नाशक है ॥ २३ ॥

चाङ्गेरीतु कषायोष्णा मधुरा वन्हिदीपनी ।
साम्लावातकफौहन्ति ग्रहण्यर्शोविकारनुत् ॥ २४ ॥
चांगेरीशाक (अम्लिलोना) कसेला उष्ण मधुर अग्निदीपक है अम्ल सहित वात कफ नाशक ग्रहणी और अर्श विकारको दूर करता है ॥ २४ ॥

चुक्रकंदुर्जरं भेदि अम्लं पित्तकरंगुरु ॥ २५ ॥
चूका शाक कठिनतासे जीर्णहोनेवाला भेदी अम्लपित्तका करनेवाला भारीहै ॥ २५ ॥

कलम्बिका गुरुर्वृष्या कषाया स्तन्यवृद्धिदा ॥ २६ ॥
कलम्बिका शाक भारी वाजी कर कसेला स्तनकी वृद्धि करता है ॥ २६ ॥

सार्षपं गुरुशाकञ्च बद्धमूत्रं त्रिदोषकृत् ॥ २७ ॥
सरसोंका शाक गुरु मूत्रवृद्ध कारक तथा त्रिदोष कारकहै २७
ग्रीष्म सुन्दरकस्तिक्तोरोचनः कफपित्तनुत् ॥ २८ ॥
ग्रीष्म सुन्दरक (सुन्दरीशाक) तीखा रुचिकारक कफपित्त नाशक है ॥ २८ ॥

नाडीचः पिच्छिलः शीतो विष्टम्भी वातकोपनः।
रक्तपित्तहरःस्वादुर्मण्डूक्याद्याश्च तद्गुणाः ॥ २९ ॥
नाडीच (नाडी शाक) चिकना शीतल विष्टम्भी वातका करनेवाला रक्तपित्तका हरनेवाला स्वादु माण्डूक्यादि उसके गुण हैं ॥ २९ ॥

पटोलपत्रं पित्तघ्नं नालं तस्य कफापहम्।
फलं तस्य त्रिदोषघ्नं मूलं तस्य विरेचनम् ॥ ३० ॥
पटोल पत्र पित्तका नाश करने वालाहै नाडी उसकी कफ करने वाली है फल त्रिदोष नाशक और मूल विरेचन करने वाली हैं ॥ ३० ॥

निम्बः पित्तकफच्छर्दिव्रणहृल्लासकुष्ठनुत् ॥ ३१ ॥
नीम पित्त, कफ, छर्दि व्रण हृल्लास और कुष्ठका नाश करने वाला है ॥ ३१ ॥

पर्पटस्तु सवेत्राग्रस्तिक्तः पित्तकफापहः ॥ ३२ ॥
पर्पट वेत्र अग्र तीखा कफऔर पित्तका हरनेवाला है ॥३२॥

त्रिदोषशमनीवृष्या काकमाचीरसायनी।
नात्युष्णा शीतवीर्य्याच भेदनी कुष्ठनाशिनी ॥ ३३ ॥
काकमाची (केवैया) त्रिदोष शान्त करनेवाली बलकारक रसायनीहै बहुत गरम नहीं शीत वीर्यवाली भेदन करनेवाली कुष्ठ नाशक है ॥ ३३ ॥

वार्यंवत्सादनीहन्यात्पित्तघ्नींतु सुवर्चला ॥ ३४ ॥
वत्सादनी वातकी दूर करनेवाली पित्त नाशक कान्ति कारक है ॥ ३४ ॥

राजक्षवकशाकन्तुत्रिदोषशमनंलघु ।
ग्राहिशस्तं विशेषेण ग्रहण्यर्शोविकारिणाम् ॥ ३५ ॥

राजक्षवक (सरसोंका) शाक त्रिदोष शान्त करनेवाला पच नेमें हलका है, ग्राहीहै विशेष कर ग्रहणी और अर्श विकारको शान्त करताहै ॥ ३५ ॥

दीपनाः कफवातघ्नाश्चिरविल्वांकुराः सराः ॥ ३६ ॥

चिर विल्व (करञ्ज) के अंकुर दीपन कफ वात नाशक तथा सारक हैं ॥ ३६ ॥

न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थप्लक्षपद्मादिपल्लवाः ।
कषायस्तम्भनाःशीताहिताः पित्तातिसारिणाम् ॥ ३७॥

न्यग्रोध (वट) गूलर पीपल पाकर पद्म आदि इनके पत्ते कसैले स्तम्भीशीत पित्त और अतीसार वालोंको हितकारीहैं ३७

अवल्गुजःकटुःपाकेतिक्तःपित्तकफापहः ॥ ३८ ॥

अवल्गुज (सोमराजी) पाकमें कटु तीखा पित्त कफका दूर करनेवालाहै ॥ ३८ ॥

वार्त्ताकं कटुतीक्ष्णोष्णं मधुरं कफवातजित ।
रोचनंवह्निजननं जीर्णन्तु पित्तलं मतम् ॥ ३९ ॥

वार्ताक (बैंगन) कटुतीक्ष्ण उष्ण मधुर कफ और वातका जीत- नेवाला रोचक अग्नि बलकारकहै जीर्ण होनेपर पित्तकारकहै॥३९॥

कण्डूकुष्ठक्रिमिघ्नानि कफवातहराणिच ।
फलानि बृहतीनान्तु कटुतिक्तलघूनिच॥ ४० ॥

कटेरीके फल खुजली कुष्ठ कृमिके नष्टकरनेवाले कफ वातके हरनेवाले कटु तिक्त और लघु होते हैं ॥ ४० ॥

कारवेल्वः सकर्कोटो रोचनः कफपित्तनुत् ॥ ४१ ॥

कारवेल कर्कोटी (काकोड़ी) रोचन कफ तथा पित्तको दूर करने वाली है ॥ ४१ ॥

कूष्माण्डकं पित्तहरं बालं मध्यं कफापहम् ।

पक्कं लघूष्णं सक्षारंदीपनं वस्तिशोधनम् ॥
सर्व्वदोपहरं हृद्यं पथ्यञ्चेतोविकारिणाम् ॥ ४२ ॥

पेठा पित्तहरनेवालाहै छोटा और मध्यका कफ नाशकहै पक्का लघु उष्ण क्षार युक्त दीपक तथा वस्ति शोधक है सर्व दोष हरनेवाला हृदयको हितकारी चित्तके विकार वालोंको पथ्य है ॥४२॥

सक्षारा मधुरारूक्षा रुच्या वातकफापहा ॥
अश्मरीभेदनी गुर्व्वीनाडी कूष्मांडसम्भवा ॥ ४३ ॥

क्षार सहित मधुर रूखे रुचिकारक वात कफ के हर्ता अश्मरी भेदक गुरु इसप्रकार पेठेकी नाडी होती है ॥ ४३ ॥

एर्व्वारुकं सकर्कारु सुपक्कं कफवातकृत् ॥
सक्षारं मधुरं रुच्यं दीपनं नातिपित्तलम् ॥ ४४ ॥

एर्वा रुक (बडीककडी) कर्कारु (पेठा) यह पकेहुए कफ और वातके करने वालेहैं क्षार सहित मधुर रुचिकारक दीपन और बहुत पित्तके करनेवालेनहीं है ॥ ४४ ॥

बालं सनीलं त्रिपुषं तेषां पित्तहरं स्मृतम् ।
तत्पाण्डुकफकृज्जीर्णमम्लं वातकफापहम् ॥ ४५ ॥

नवीन ककडी नीली खीरेके समान पित्त हरनेवाली कहीहै, वह श्वेत वर्णका कफका करनेवाला जीर्ण अम्लवात और कफ का हरनेवालाहै ॥ ४५ ॥

शीर्णवृंतं कफहरं सक्षारं मधुरं हि तत् ।
भेदनं दीपनं हृद्यमानाहाष्ठीलनुल्लघु ॥ ४६ ॥

शीर्ण वृन्त एक प्रकार का तरबूज. कफ कारकक्षार युक्त मधुर और हलकाहै, भेदन दीपन हृदयको हितकारक आनाह रोग ष्ठीवन रोग दूर करता लघुहै ॥ ४६ ॥

अलाबुः शीतलारूक्षा गुर्व्वी वर्चःप्रभेदिनी ॥ ४७ ॥

अलाबू कटुतुम्बी ठंढीहै रूखी है भारीहै मलको भेदनेवालीहै४७

अलाबुर्नाडिकागुर्व्वी मधुरा पित्तनाशिनी ।
वातश्लेष्मकरीरूक्षा शीतलामलभेदिनी ॥ ४८ ॥

तुम्बीकी नाडी भारी मधुर और पित्तको नाश करनेवाली है तथा वात श्लेष्मको करनेवाली रूखी शीतल अम्ल भेदनेवाली है ॥ ४८ ॥

तिक्तालाबुरहृद्यातु वामनी वातपित्तजित् ॥ ४९ ॥

कडवी तुम्बी हृदयको हितकारक नहीं है, वमनकारक वात पित्तको जीतनेवालीहै ॥ ४९ ॥

कुमुदोत्पलनालास्तु सपुष्पाः सफलाः स्मृताः।
शीताः स्वादुकषायाश्च कफमारुत कोपनाः ॥ ५० ॥

कुमुद उत्पलके नाल फूल फल शीतल स्वादु कसेले कफ और वातके कोप करानेवालेहैं ॥ ५० ॥

हस्तिमध्वालुकादीनि रक्तपित्तहराणिच।
गुरूणि स्वादुशीतानि स्तन्यशुक्रकराणिच ॥ १ ॥

हस्तिमधु आलुक आदि रक्त पित्तके हरने वाले हैं भारी स्वादु शीतल स्तनोंमें दुग्ध तथा वीर्यके करने वाले हैं ॥ १ ॥

विदारीकन्दो बल्यश्च वातपित्तहरश्च सः।
मधुरोबृंहणोवृष्यः शीतः स्वर्योतिमूत्रलः ॥ २ ॥

विदारीकन्द बलकारी वात पित्तको हरने वाला है, मधुर बलकारक और पित्तहरनेवालाहै, मधुर बृंहण बलकारक शीतल स्वर और अधिक मूत्रका करने वालाहै ॥ २ ॥

वातपित्तहरीवृष्या स्वादुतिक्ताशतावरी।
महतीचैव हृद्याच मेधाग्निबलवर्द्धिनी ॥
ग्रहण्यर्शोविकारघ्नी वृष्याशीता रसायनी।
कफपित्तहरास्तिक्ता स्तस्याएवाङ्कुराःस्मृताः ॥ ३ ॥

शतावरी वात पित्तकी हरनेवाली, वीर्य वर्द्धक, स्वादु और तिक्त है, वही अधिक हृदयको हितकारक मेधा अग्नि और बलको बढानेवालीहै, ग्रहणी अर्श (बवासीर) के विकारको दूर करनेवाली, बलकारक ठंडी और रसायनीहै, कफपित्तके हरनेवाली तथा तीखा उसका अंकुर होताहै ॥ ३ ॥

तरूट बिस शालूक क्रौञ्चादनकशेरुकम्।
शृङ्गाटकाङ्कलोट्यञ्चगुरुविष्टम्भि शीतलम् ॥ ४ ॥

तरूट (नीले कमलकी जड़) बिस शालूक भँसीढ़ा क्रौञ्चादन (घंघोल) कसेरु सिंघाड़ा और अंकलोट्य भारीहै विष्टम्भकारी और शीतलहै ॥ ४ ॥

पिण्डालुकं कफहरं गुरु वातप्रकोपणम् ॥ ५ ॥

पिंजलू कफका हरनेवाला भारी वातकाकोपकरने वालाहै ५॥

वज्राख्यकन्दः श्लेष्मघ्नः कटुपाकश्च पित्तकृत् ॥ ६ ॥

वज्राख्यकन्द श्लेष्माका हरनेवाला पाकमें कटु तथा पित्तका करनेवालाहै ॥ ६ ॥

वेणोः करीराः कफला मधुरारसपाकतः।
विदाहिनोनातिबलाःसकषायाविरूक्षणाः ॥ ७ ॥

बाँस काकल्ला कफ कारक रसपाकमें मधुरहै तथा दाह कारक अति बलकारक नहींहै कसेला और रूखाहै ॥ ७ ॥

ऐन्दुकश्च नदीमाषं विषदं गुरुशीतलम् ॥ ८ ॥

ऐन्दुक वन्दीमान नदीमाष विषदायी भारी और शीतलहै ८

शूरणोदीपनोरुच्यः कफघ्नोविषदोलघुः।
विशेषादर्शसां पथ्यो भूकन्दस्त्वतिदोषलः ॥ ९ ॥

बनकन्द दीपन रुचिकारक कफ नाशक विषय दायक लघुहै विशेष करके अर्श रोगमें पथ्यहै, और जिमीकन्द बहुत दोष करताहै ॥ ९ ॥

माणकं स्वादुशीतञ्च गुरुचापि प्रकीर्त्तितम् ॥ १० ॥

मानकन्द स्वादुशीतल और गुरुहै ॥ १० ॥

कदल्याबलकृन्मूलं वातपित्तापहं गुरु ॥ ११ ॥

केलेकी जड़ बलकारक वात पित्त हरनेवाली गुरुहै ॥ ११ ॥

आमवातकरी कच्चो कफकृद्गुरुपिच्छला ॥ १२ ॥

कची आमवातकी करनेवाली फलकारक गुरु और पिच्छलहै १२

वाराहकन्दः श्लेष्मघ्नः कटुकोरसपाकतः ।
मेहकुष्ठकिमिहरो वल्यो वृष्योरसायनः ॥ १३ ॥

वाराहीकन्द श्लेष्माका दूर करनेवाला रसपाकमें कटुहै प्रमेह कुष्ठ कृमिका हरनेवाला बलदायक वीर्य वर्द्धक रसायनहै ॥१३॥

तालस्य नारिकेलस्य खर्ज्जूरस्य शिरांसिच ।
कषायस्निग्धमधुरबृंहणानि गुरूणिच ॥ १४ ॥

ताल नारियल और खजूरके फल कसेले स्निग्ध मधुर वीर्यकारक भारीहैं ॥ १४ ॥

गुवाकस्य शिरस्तद्वद्भेदनं मदकारकम् ॥ १५ ॥

गुवाकका (सुपारी) फल भेदन और मदका करनेवालाहै १५

बालं ह्यनार्त्तवं जीर्णं व्याधितं किमिभक्षितम् ।
कन्दं विवर्जयेत् सर्वं योवासम्यङ्नरोहति ॥ १६ ॥

जो छोटाहो ऋतु सम्बन्धी नहो, जीर्ण व्याधियुक्त कीडोंका खाया कंदहो अथवा जो अच्छी प्रकार नउगाहो उसे भक्षण न करै॥

शणस्यकोविदारस्य कर्व्वुदारस्य शाल्मलेः ।
पुष्पं संग्राहिशस्तञ्च रक्तपित्ते विशेषतः ॥ १७ ॥

सन कोविदार कर्बुदार (सफेद कचनार) सेमल इनके फूल खानेमें अच्छेहैं, विशेष कर रक्तपित्तमे हितकारीहै ॥ १७ ॥

वृषागस्त्यस्य पुष्पाणि क्षयकासापहानिच ॥ १८ ॥

वृष (अडूसा) और अगस्त्यके फूल क्षय और कास रोगके दूर करनेवालेहै ॥ १८ ॥

आगस्त्यं नातिशीतोष्णं नक्तान्धानाञ्च शस्यते॥१९॥

अगस्त्यका फूल न ठंडाहै न गरम विशेषकर रतौंधे वालेको उपकारीहै ॥ १९ ॥

राजवृक्षस्य निम्बस्य मुष्ककाकाशनस्यच ।
कफपित्तहरं पुष्पं कुष्ठघ्नं कुटजस्यच ॥ २० ॥

राजवृक्ष नीम मुष्क (मोखावृक्ष) काकाशन (वृक्ष) इनके पुष्प कफ पित्तके हरनेवालेहै और कुटजके फूलकुष्ठ दूर करतेहैं२०

सतिक्त मधुरं शीतं पद्मं पित्तकफापहम् ॥ २१ ॥

कमल तीखा मधुर शीतल पित्त और कफका हरनेवालाहै २१

मधुरं पिच्छिलं स्निग्धं कुमुदं ल्हादिशीतलम् ॥ २२ ॥

कुई मधुर पिच्छल चिकनी प्रसन्न कारक तथा शीतल है॥२२॥

सिन्दुवारं जीवनीयंहिमं पित्तविनाशनम् ।

यथावृक्षं विजानीयात् कुसुमस्य गुणागुणान् ॥ २३ ॥

सिन्धुवार (सिम्हालू) निर्गुण्डी जीवनी (काकोली) ठंडी और पित्तनाशक है जैसा वृक्ष होताहै वैसेही उसके गुण होतेहैं ॥२३॥

छत्रकास्तु पलालेक्षुकरीपक्षितिरेणुजाः ॥ २४ ॥

सर्वेसंस्वेदजाः शीताः कपायाः स्वादुपिच्छिलाः ॥

गुरवश्छर्द्यतीसार ज्वरश्लेष्माभयप्रदाः ॥ २५ ॥

छत्रका पलाल अर्थात् अन्न रहित अन्नकी नाल ईख सूखा-गोबर और रेणुमें उत्पन्न होनेवाला संस्वेदजशाक शीत वीर्य कषैला स्वादिष्ट पिच्छल भारी छर्दि अतीसार ज्वर और श्लेष्मा रोगके करनेवालेहैं ॥ २४ ॥ २५ ॥

कर्कशंपरिजीर्णञ्च क्रिमिजुष्टमदेशजम् ।

विवर्जयेत् पत्रशाकं यदकाल विरोहि च ॥ २६ ॥

कर्कश अत्यन्त जीर्णकीड़ोंसे युक्त अदेशमें उत्पन्न हुआ शाक पत्र भोजन करना उचित नहींहै अथवा जो अकालमें उत्पन्न हुआ है वह त्यागने योग्यहै ॥ २६ ॥

सतीलो वास्तूकश्चुच्छु चिल्लीमूलकपोतिका ।

मण्डूकपर्णीजीवन्ती शाकवर्गे प्रशस्यते ॥ २७ ॥

सतीला वास्तुक (कलाय, बथुआ) शिरिआरी (चिंउ) चिल्ली मूल मन्डूकपर्णी और जीवन्ती यह शाक वर्गमें अच्छी कही है ॥ २७ ॥

धान्येषु मांसेषु फलेषु चैव शाकेषु चानुक्तमिहाप्रमेयात् ॥

आस्वादतो भूतगुणै र्गृहीत्वा तदादिशेद्द्रव्य मनल्पबुद्धिः२८

धान्य मांस फल शाक आदिका जो प्रयोग इसमें नहीं कहाहै उसको स्वाद और भूतगण अर्थात् रस और शीतोष्णादि गुणोंको जानकर बुद्धिमान् उसको प्रयोग करे ॥ २८ ॥

शाकं हिनस्तिवपुरस्थि निहंतिनेत्रम् ।
वर्णं विनाशयति शुक्रमथासृजञ्च ॥
ओजः क्षयं प्रकुरुते पलितन्त्वकाले ।
हन्तिस्मृतिं गतिमिति प्रवदन्तितज्ज्ञाः॥ २९ ॥

शाक शरीरको नष्ट करताहै हड्डीको जीर्ण करतानेत्रोंको नष्ट करताहै वर्णका नाश करता तथा वीर्यको रुधिरको नष्ट करता है बलका क्षय करता अकालमें बाल पकाता स्मृतिगतिको नष्ट करताहै ऐसा इस वार्ताके जाननेवाले कहतेहैं ॥ २९ ॥

शाकेषु सर्वेनिवसन्तिरोगा रोगोहि देहस्यविनाशहेतुः ।
तस्माद्बुधैः शाकविवर्जनंहि कार्यं तथाम्लेषु सएवदोषः ३०

इति शाकवर्गः ।

शाकमें सम्पूर्ण रोग निवास करतेहैं और रोगही देहके नाश करनेका कारण है इसकारण बुद्धि मानोंको शाकका सेवन नहीं करना चाहिये और यही दोष खटाईमें भीहोतेहैं ॥३०॥

इति शाकवर्गः ।

सैन्धवं दीपनं हृद्यं चक्षुष्यं रोचनं लघु ।
स्निग्धं वृष्यञ्च मधुरं शीतं दोषघ्नमुत्तमम्॥ १ ॥

सेंधादीपन है हृदयको हितकारी चक्षुको हितकारी रुचिकारक और लघु है स्निग्ध वीर्य्यकारक मधुर शीतल और दोष का दूर करनेवाला है ॥ १ ॥

सामुद्रंमधुरं पाकेनात्युष्णमविदाहिच ।
भेदनं स्निग्धमीषच्च शूलघ्नं नातिपित्तलम् ॥ २ ॥

समुद्रलवण पाकमें मधुर न बहुत गरम और न विदाहीहै भेदन कुछेक स्निग्ध शूल नाशक और बहुत पित्त कारक नहींहै२

विडं सक्षारतीक्ष्णोष्णं सूक्ष्मं दीपनरोचनम् ॥
शूलहृद्रोगशमनं रूक्षं वातानुलोमनम् ॥ ३ ॥

विरिया सोंचरलोन क्षार सहित तीक्ष्ण सूक्ष्म दीपन और रुचिकारक है शूल हरनेवाला रोगका शान्त करनेवाला रूखा और वातका अनुलोम करनेवाला है ॥ ३ ॥

सौवर्चलन्तु वीर्योष्णं विषदं कटुकं लघु।
गुल्मशूलविबंधघ्नंहृद्यं सुरभिदीपनम् ॥ ४ ॥

सौवर्चल कालानोनवीर्यमें उष्ण विषदायक कटु और लघु होताहै गुल्म और शूल को नाश करने वाला है हृदयको हितकारी सुरभि और दीप्तिका करनेवालाहै ॥ ४ ॥

सौवर्चलगुणाः कृष्णालवणे गन्धवर्जिताः ॥ ५ ॥

सौवर्चलके गुणमें इतना अन्तर है कि कालेनमकमें गंधि नहीं होती है ॥ ५ ॥

सतिक्तं कटुसक्षारं तीक्ष्णमुत्क्लेदि चौद्भिदम् ॥ ६ ॥

औद्भिद लवण तीक्ष्ण उत्क्लेदि क्षारयुक्त कटु और कड़वा है ६

रौमकं तीक्ष्णमुष्णञ्च व्यवायि कटुपाकि च।
वातघ्नं लघुविष्यन्दि सूक्ष्मं विड्भेदि मूत्रलम् ॥ ७ ॥

रौमक नदीमें होनेवाला नमक तीक्ष्ण उष्ण व्यवायि तथा कटु पाकी होता है वात नाशक लघुविष्यन्दि सूक्ष्म मल भेदी और अत्यन्त मूत्रका लानेवाला है ॥ ७

दीपनं पाचनं भेदि लवणं गुडिकाह्वयम्।
कफवातकृमिघ्नंच लेखनं पित्तकोपनम् ॥ ८ ॥

गुडिका लवण दीपन पाचन और भेदी होताहै कफ वात कृमिका नाश करनेवाला लेखन और पित्तका कोप करने वालाहै ८

क्षारास्तु दीपनाः सर्व्वे रक्तपित्तकराः सराः।
गुल्मार्शोग्रहणीदोषशर्कराश्मविनाशनाः ॥ ९ ॥

सम्पूर्णक्षारदीपन रक्तपित्त करनेवाले सारकहैं गुल्म अर्श ग्रहणी दोष शर्करा और पथरी शर्करारोगके नाश करनेवालेहैं ९

ज्ञेयौ वह्निसमौ क्षारौ सर्जिकायवशूकजौ ।
शुक्रश्लेष्म विबन्धार्शो गुल्मप्लीहविनाशनौ ॥ १० ॥

जवाखार और सज्जीखार अग्निके समान जानो यह वीर्य और श्लेष्मका बंधन करनेवाले अर्श गुल्म और प्लीह रोगके नाशक हैं ॥ १० ॥

अग्निदीप्तिकरस्तीक्ष्णष्टङ्कणक्षार उच्यते ॥ ११॥

टंकण क्षार अग्निका दीप्त करनेवाला है ॥ ११ ॥

आर्द्रकं रोचनंहृद्यं कटूष्णं वृष्यमेवच ।
कफानिलहरं स्वर्य्यं विबन्धानाह शूलनुत् ॥ १२ ॥

अदरख रुचिकारक हृदयको हितकारी कटु उष्ण वीर्यवर्द्धक कफवातका हरनेवाला स्वर करने वाला विबन्ध अनाह और शूल रोगका दूर करने वाला है ॥ १२ ॥

शुण्ठीतु कफवातघ्नी सस्नेहा लघुदीपनी ।
वृष्योष्णा रोचनीहृद्या विपाके मधुराकटुः ॥ १३ ॥

सोंठ कफ और वातकी हरनेवाली स्नेहयुक्त लघु और दीप्ति करने वाली है वीर्यकारक गरम रुचिकारक हृदयको हितकारक पाकमें मधुर और कटु है ॥ १३ ॥

पिप्पल्यार्द्रास्वादुशीतागुर्वी श्लेष्मप्रकोपणी ॥ १४ ॥

पिप्पली गीली स्वादु शीतल भारी श्लेष्माको कोप करतीहै १४

साशुष्का मधुरापाके वृष्या पित्तप्रसादनी ।
स्निग्धोष्णादीपनीवातश्लेष्मनुच्छ्वासनाशिनी ॥ १५ ॥

और सूखी हुई पाकमें मधुर बलकारक पित्तकी करनेवाली स्निग्ध उष्ण दीप्तिकारक वात श्लेष्म और अनुच्छ्वसकी नाश करनेवालीहै ॥ १५ ॥

मरिचं लघुतीक्ष्णोष्णं रूक्षरोचनदीपनम् ।
रसेपाकेच कटुकं कफघ्नं पित्तकोपनम् ॥ १६ ॥

सूखी काली मिर्चे लघु तीक्ष्ण उष्ण रूखी रुचि और दीप्तिकारकहै, रसपाकमें कटु, कफनाशक पित्तका कोप करनेवालीहै १६

स्वादुपाक्यार्द्रमरिचं गुरु श्लेष्मप्रकोपिच ॥ १७ ॥
नात्युष्णं नातिशीतञ्च वीर्य्यतोमरिचं सितम् ॥

गीली मिर्च पाकमें स्वादु, भारी कफका कोप करतीहै ॥ १७ ॥

गुणवन्मरिचेभ्यश्च चक्षुष्यञ्च विशेषतः ॥ १८ ॥

श्वेत मिर्च वीर्यसे न गरमहै न ठंढी यह गुणयुक्त विशेष करके घृतादिके साथ नेत्रोंको हितकारकहैं ॥ १८ ॥

हिंगुतीक्ष्णं कटुरसं शूलाजीर्णविबन्धनुत् ।
लघूष्णं पाचनं स्निग्धं दीपनं कफवातजित् ॥ १९ ॥

हींग तीक्ष्णहै, रसमें कटु, शूल अजीर्ण विबन्ध रोगको दूर करतीहै, लघु उष्ण पाचन स्निग्ध दीपन कफ और वातकी जीतनेवालीहै ॥ १९ ॥

जीरकं रुचिकृत्तस्वं गन्धाढ्यं कफवातजित् ।
तीक्ष्णोष्णं कटुकं पाके कटुपित्ताग्निवर्द्धनम् ॥ २० ॥

जीरा रुचिकारक, सुगन्धिवान वात कफका जीतनेवालाहै, तीक्ष्ण उष्ण पाकमें कटु पित्त अग्निका बढानेवालाहै ॥ २० ॥

यमानी कृष्णजीरश्च ज्ञेयाजीरकवद्गुणैः ॥ २१ ॥

अजवायन और कालाजीरा यह भी जीरेके समान गुणमेंहैं २१

धन्याकं कासतृट्छर्दिशमनं चक्षुषोर्हितम् ।
कषायतिक्तं मधुरं हृद्यं रोचनदीपनम् ॥ २२ ॥

धनियां खांसी प्यास छर्दिका शान्त करनेवाली नेत्रोंको हितकारकहै कसेली तीखी मधुर हृदयको हितकारक रुचिकारक दीपनहै ॥ २२ ॥

लशुनः क्षारमधुरः पत्रे मधुरपिच्छलः ।
मध्येकन्देतु तीक्ष्णोष्णःकटुपाकरसः सरः ।
हृद्यः केश्योगुरुर्वृष्यः स्निग्धो दीपनपाचनः ।
भग्नसन्धानकृद्बल्यो रक्तपित्तप्रकोपणः ॥

किलासकुष्ठगुल्मार्शोमेहकृमिकफानिलान् ।
सहिक्कापीनसश्वासकासान्हन्ति रसायनः ॥ २३ ॥

लहसुन क्षारयुक्त मधुर है, पत्ते मधुर और पिच्छलहैं, मध्यमें उसका कन्द तीक्ष्ण और उष्ण पाकमें कटु रस और सारकहै, हृदय और केशको हितकारी, बलदायक स्निग्ध दीपन पाचनहै टूटे अवयवको जोड़नेवाला, बलकारक, रक्तपित्तका कोप करनेवाला, किलास कुष्ठ गुल्म अर्श प्रमेह कृमि कफ वात रोग हिचकी पीनस श्वास कास सबका दूर करनेवाला रसायनहै ॥ २३ ॥

पलाण्डुर्मधुरोवृष्यः कटुः स्निग्धोनिलापहः ।
बल्यःपित्ताविरोधीच कफकृद्रोचनोगुरुः ॥ २४ ॥

पलाण्डु (प्याज) मधुर बलकारक कटु स्निग्ध वात नाशक बलकारक पित्तका अविरोधी कफ करनेवाला रुचिकारक गुरुहै २४

ग्राहीगृञ्जनकस्तीक्ष्णो ग्रहण्यर्शोविकारनुत् ॥ २५ ॥

इति लवणादिवर्गः ।

गृञ्जन (गाजर) ग्राही तीक्ष्ण ग्रहणी और अर्शका विकार दूर करता है ॥ २५ ॥

इति लवणादिवर्गः ।

कषायानुरसंयातिपित्तलंदाडिमंस्मृतम् ।
दीपनीयंरुचिकरं हृद्यं वर्चोविबन्धनम् ॥ १ ॥

दाडिमी कसेली है बहुत पित्त कारक नहीं है दीपन रुचिकारक हृदयको हितकारक विष्टाको बांधने वाली है ॥ १ ॥

द्विविधंतत्तुविज्ञेयं मधुरश्चाम्लमेवच ।
त्रिदोषघ्नन्तुमधुरमम्लं वातकफापहम् ॥ २ ॥

यह अम्ल और मधुर दो प्रकारकी है मधुर त्रिदोषको दूर करने वाली अम्ल(खट्टी) वात और कफको दूर करनेवाली है॥२॥

प्राचीनामलकश्चैवदोषघ्नं गरहारिच ॥ ३ ॥

पुराना पानी आमला दोषनाशक तथा विष हरनेवाला है॥३॥

कर्कन्धुकोलबदरमामं पित्तकफावहम् ।
पक्वं पित्तानिलहरं स्निग्धं समधुरंसरम् ॥ ४ ॥

कर्कन्धु (बेरी) कोल (बेर) बदर (बेर) यह कच्चा कफ और पित्तका करनेवालाहै पका हुआ पित्त वातका हरने वाला स्निग्ध मधुर सारक है ॥ ४ ॥

तच्छुष्कं कफवातघ्नं नचपित्ते विरुध्यते ।
पुराणंतृट्प्रशमनं श्रमघ्नंलघुदीपनम् ॥ ५ ॥

सूखाहुआ कफ वातका हरने वाला पित्तका विरोधी नहींहै पुराने प्यासको शान्त करनेवाले श्रम नाशक लघु और दीपनहैं

सौवीरं बदरं स्निग्धं मधुरं वातपित्तजित् ॥ ६ ॥

सौवीर देशका बेर बहुत स्निग्ध मधुर वात और पित्तका जीतने वाला है ॥ ६ ॥

आम्रं बालं रक्तपित्तकरं मध्यन्तुपित्तलम् ।
पक्वं वर्णकरं रुच्यं मांसशुक्रबलप्रदम् ॥
पित्ताविरोधिवातघ्नं हृद्यं गुर्व्वनुलोमनम् ॥ ७ ॥

कच्चा आम रक्तपित्त करने वाला है मध्यम पित्त करने वाला पकावर्ण करने वाला रुचिकारक मांस शुक्र और बलका करने वाला है पित्तका अविरोधी वात नाशक हृदयको हितकारी भारी अनुलोमकारक है ॥ ७ ॥

आम्रपेषी कषायाम्लाभेदनी कफवातजित् ॥ ८ ॥

आमकी पेषी अमोटी कसैली वातकारक भेदिनी कफवातकी जीतनेवालीहै ॥ ८ ॥

आम्रातकं तर्पणञ्च बल्यं मधुरबृंहणम् ।
स्नेहनं श्लेष्मलं शीतं वृष्यं विष्टभ्यजीर्य्यति ॥ ९ ॥

अंबाडा तृप्तिकारक बलवर्द्धक मधुर और बृंहण है स्नेहकारक श्लेष्माकारक ठंढा बलकारक और देरमें जीर्ण होने वाला है ॥ ९ ॥

कपित्थमामं कण्ठघ्नं दशघ्नं ग्राहि वातलम् ।
मधुराम्लकषायत्वात्सौगन्ध्याच्चरुचिप्रदम् ।
तदेवसिद्धं दोषघ्नं विषघ्नं ग्राहिगुर्वपि ॥ २६ ॥

कैथाकागूदा कंठनाशक विषनाशक ग्राही और वातका करनेवालाहै कसेला होनेसे मधुर और अम्लहै और सुगन्धि होनेसे रुचिकारकहै और वही सिद्ध हुआ दोषनाशक विष नाशक ग्राहि और गुरुहै ॥ २६ ॥

जाम्बवं वातलं ग्राहि रूक्षं पित्तकफापहम् ॥ २७ ॥

जम्बू वात कर्ता ग्राही रूखा पित्त तथा कफको दूर करै है२७

तिन्दुकं तुवरं स्वादु गुरुपित्तकफापहम् ॥ २८ ॥

तिन्दुक (तेंदू) कषेला स्वादु भारी पित्त और कफको दूर करनेवालाहै ॥ २८ ॥

स्निग्धं स्वादुकषायञ्च राजादनफलंगुरु ॥ २९ ॥

खजूरकी समान फल (राजादन) स्निग्ध स्वादु कसेला और भारी है ॥ २९ ॥

कषायमधुरं रूक्षं तोदनं कफवातजित् ।
अम्लोष्णं लघुसंग्राहि स्निग्धं पित्ताग्निवर्द्धनम् ॥ ३० ॥

तोदन * (वाममियफल) मधुर रूखा कफ और वातका जीतने वाला, खट्टा उष्ण हलका संग्राही, चिकना पित्त और अग्निका बढानेवालाहै ॥ ३० ॥

अनुपाकिफलं स्वादु वातपित्त विनाशनम् ॥ ३१ ॥

अनुपाकि (अनुपा) फल स्वादु वात और पित्तका नाश करनेवालाहै ॥ ३१ ॥

क्षीरिवृक्षफलं विद्याद्गुरुविष्टम्भि शीतलम् ।
कषायमधुरं साम्लं नातिमारुतकोपनम् ॥ ३२ ॥

दूधवाले वृक्ष वड गूलर पीपल पाकर आदिके फल भारी विष्टम्भकारक और शीतलहैं, कसेले मधुर अम्ल तथा वातका कोप करनेवाले नहीं हैं ॥ ३२ ॥

* दक्षिणमें यह नारणाम्लिका नामसे प्रसिद्ध है ।

वाकुलं मधुरं स्निग्धं कषायं विपदश्चतत् ।
स्थिरीकरश्चदन्तानां संग्राहि फलमिष्यते ॥ ३३ ॥

वाकुल (मौलसिरी) मीठा चिकना कसैला विष्टम्भी शीतलक सैला विषदायक और शीतल, दांतोंका स्थिर करनेवाला और फल इसका ग्राहि है ॥ ३३ ॥

परूपकं समधुरं कषायानुरसंलघु ।
वातघ्नं पित्तजननमत्यम्लं तदुदाहृतम् ॥ ३४ ॥

कच्चा फालसा मधुर कसैला रसयुक्त और हलकाहै वातहारक पित्तका उत्पन्न करनेवाला और अधिक खट्टाहै ॥ ३४ ॥

पक्कं समधुरं तच्च वातपित्तनिवर्हणम् ॥ ३५ ॥

और पक्का फालसा मधुर वात और पित्तका दूर करने वालाहै ३५

कफानिलहरं तीक्ष्णं स्निग्धं संग्राहिदीपनम् ।
कटुतिक्तकषायोष्णं बालविल्वमुदाहृतम् ॥
तदेवविद्यात्संपक्कं मधुरानुरसं गुरुः ।
विदाहिविष्टम्भकरं दोषकृत् पूतिमारुतम् ॥ ३६ ॥

कच्चाबेल कडु तीखा कसैला कफ और वातका हरनेवाला तीक्ष्ण चिकना संग्राही दीपन कहाहै और यही पका हुआ मधुर रस युक्त गुरु है विदाही विष्टम्भ का करनेवाला दोषका करनेवाला वात शोधकहै ॥ ३६ ॥

द्राक्षातु मधुरास्निग्धाशीतावृष्यानुलोमनी ॥
रक्तपितज्वरश्वासतृष्णादाहक्षयापहा ॥ ३७ ॥

दाख मधुर स्निग्ध शीतल बलदायक अनुलोम करनेवाली है रक्त पित्त ज्वर श्वास तृष्णा दाह क्षयकी हरनेवाली है ॥ ३७ ॥

गोस्तनी या गुरुर्वृष्या द्राक्षासा वातपित्तनुत् ॥ ३८ ॥

गोस्तनी (भूरी) दाख भारी बलदायक वातपित्तको दूर करनेवाली है ॥ ३८ ॥

केश्यं रसायनं मेध्यं काश्मर्याः फलमुच्यते ॥ ३९ ॥

वालोंको हितकारक रसायन बुद्धि को बढाने वाला (कम्भारी) का फल कहा है ॥ ३९ ॥

खर्जूरं मधुरं वृष्यं स्निग्धं शोणितपित्तजित्।
क्षतक्षयापहं हृद्यं शीतलं तर्पणं गुरु ॥ ४० ॥

खजूर मधुर वीर्यवर्द्धक स्निग्ध रुधिर और पित्तको जीतने वाला है क्षत क्षयरोग को दूर करने वाला हृदयको हितकारक शीतल तृप्ति कारक और भारीहै ॥ ४० ॥

मधूकस्यफलं पक्कं वातपित्तप्रणाशनम्।
तस्य पुष्पं बृंहणीयमहृद्यं गुरुशीतलम् ॥ ४१ ॥

महुपका पक्का फल वात रक्त विकारका दूर करनेवाला है उसका पुष्प मद कारक हृदयको अहितकारक भारी और शीतलहै ॥ ४१ ॥

नारिकेलं गुरुस्निग्धं पित्तघ्नं स्वादुशीतलम् ॥
बलमांसकरंहृद्यं बृंहणं बस्तिशोधनम् ॥ ४२ ॥

नारियल गुरु चिकना पित्तनाशक स्वादुशीतल बलमांस करनेवाला हृदयको हितकारी वाजीकर बस्ति शोधकहै ॥ ४२ ॥

तालं स्वादुरसं पक्कं गुरु पित्तविनाशनम्।
तद्बीजं स्वादुपाकन्तु मूत्रलं वातपित्तजित् ॥ ४३ ॥

पका ताल फल स्वादु रसयुक्त भारी पित्त नाशकहै उसका बीज पाकमें स्वादु मूत्रका अधिक करनेवाला वात पित्तका जीतनेवालाहै ॥ ४३ ॥

कदलं मधुरं हृद्यंकषायं नातिशीतलम्।
वातपित्तहरं रुच्यं वृष्यं श्लेष्मकरं गुरु ॥ ४४ ॥

केलेकी फली मधुर हृदयको हितकारक कसेलीहै बहुत ठंडी नहींहै वात पित्तको हरनेवाली रुचिकारक वीर्य्य वर्द्धक कफ कारक और भारीहै ॥ ४४ ॥

श्लेष्मलं मधुरं शीतं श्लेष्मातकफलं गुरु।
पनसं सकषायन्तु स्निग्धं स्वादुरसं गुरु ॥ ४५ ॥

ल्हेसवेका फल कफकारक मधुर शीतल और भारीहै पनस (कटहल) कसेला चिकनारसमें स्वादु और भारीहै ॥ ४५ ॥

पथ्या पञ्चरसायुष्या चक्षुष्याऽलवणा सरा ।
मेध्योष्णादीपनी दोषशोथकुष्ठज्वरापहा ॥ ४६ ॥

हरड़ पांचों रसोंसे युक्त चक्षुको हितकारी आयुकी देनेवाली लवण रससे रहित सारकहै बुद्धिको बढानेवाली गरम दीपन दोष शोथ कुष्ठ और ज्वरकी हरनेवालीहै ॥ ४६ ॥

धात्रीतद्वद्विशेषेण वृष्याशीतिव वीर्य्यतः ।
हन्तिवातं तदम्लत्वात् पित्तं माधुर्य्यशैत्यतः ।
कफं कटुकषायत्वात् फलेभ्योप्यधिकश्च तत् ॥ ४७ ॥

इसीप्रकार आमले विशेष करके वीर्यकारक और शीतलहैं अम्ल होनेसे वातको हरणकरतेहैं मधुर होनेसे शीत पित्तको हरतेहैं कटु और कसेला होनेसे कफको हरताहै इसके फलमें अधिक गुणहैं ॥ ४७ ॥

अक्षंभेदनरूक्षोष्णंवैश्वर्य्यं क्रिमिनुत्कटु ।
चक्षुष्यं स्वादुपाकश्च कषायं कफपित्तनुत् ॥ ४८ ॥

अक्ष (बहेडा) भेदनहै रूखा गरम वैश्वर्य कृमिनाशक कटुहै नेत्रोंको हितकारक पाकमें स्वादु कसैला कफ और पित्तका नाशकहै ॥ ४८ ॥

पथ्यामज्जातु चक्षुष्यो वातपित्तहरो गुरुः ॥ ४९ ॥

हरडकी गुठली नेत्रोंको हितकारक वात पित्त हरने वाली भारी है ॥ ४९ ॥

वैभीतकोमदकरः कफमारुतनाशनः ॥ ५० ॥

बहेड़ा मद कारक कफ और वातका नाश करने वाला है ५०

कोलमज्जातु मधुरः कषायः पित्तनाशनः ।
तृष्णाछर्द्यनिलघ्नश्च धात्रीमज्जापि तद्गुणः ॥ ५१ ॥

बहेडेकी मींगी मधुर कसेली पित्त नाशक तृष्णा छर्दि वात नाशक है यही गुण आमले की गुठलीमें हैं ॥ ५१ ॥

पियालमज्जामधुरोवृष्यः पित्तानिलापहः ॥ ५२ ॥

पियाल (चिरोंजी की गुठली) मींग मधुर बलकारक पित्त वात हरनेवाली है ॥ ५२ ॥

यस्ययस्यफलस्येह वीर्य्यं भवति यादृशम् ।
तस्यतस्यैववीर्य्येण मज्जानमपिनिर्दिशेत् ॥ ५३ ॥

जिस जिस वृक्षका फल जैसा होता है उसी उसी फलकी मींगमें भी वैसा ही गुण होता है ॥ ५३ ॥

भल्लातकास्थ्यग्निसमं त्वङ्मांसं स्वादुशीतलम् ॥५४॥

भिलावेंकी गुठली अग्निकी समान छाल और गूदा स्वादु और शीतल है ॥ ५४ ॥

करञ्जकिंशुकारिष्ट फलं जन्तुप्रमेहनुत् ।
रूक्षोष्णं कटुकंपाके लघुवातकफापहम् ॥ ५५ ॥

करंजुआ टेसू नीमका फल जन्तुओंका प्रमेह दूर करते हैं रूखे उष्णपाकमें कटु लघुवात और कफको दूर करनेवालेहैं ॥५५॥

तिक्तमीपद्विषहितं विडङ्गं क्रिमिनाशनम् ॥ ५६ ॥

वायविडङ्ग तीखी कुछविषमें हितकारी कृमिका नाश करताहै ॥ ५६ ॥

फलेषुपरिपक्कं यद्गुणवत्तदुदाहृतम् ।
विल्वादन्यत्र तज्ज्ञेयमामं तद्धि गुणोत्तरम् ॥ ५७ ॥

जो पके फलहैं वेही गुणदायकहैं वेलको छोड़कर ऐसा जानना वेल अपक्क (जो पकाहु आनहो) वही श्रेष्टहै ॥ ५७ ॥

व्याधितंक्रिमिजुष्टञ्च पाकातीतमकालजम् ।
वर्ज्जनीयं फलंसर्व्वमपर्य्यागतमेवच ॥ ५८ ॥

इति फलवर्गः ।

व्याधि युक्त कीडे पड़ा हुआ जिसका पाक होचुकाहै जो अकालमें उत्पन्न हुआहै जो पका नहीं है इसप्रकारका फल खाना न चाहिये ॥ ५८ ॥

इति फलवर्गः ।

धारं कारन्तु तौषारं हैमं स्वाम्बु चतुर्विधम् ॥ १ ॥

धाराका करका * शिशिरमें होनेवाला हिमका होनेवाला (संहतिमान) आकाशका जलचार प्रकारकाहै ॥ १ ॥

धारन्त्वद्विधाप्रोक्तं गाङ्गं सामुद्रमेवच ॥ २ ॥

उसमें धाराका जल दो प्रकारकाहै गंगाका जल और समुद्रका जलहै और चरकमें जो लिखाहै कि (जलमेक विधं सर्वं पतत्यैन्द्रंनभस्तलात्) कि सब जल एकही प्रकारका होताहै यह सत्यहै, तथापि अन्तरिक्षका जल धूली मल विष लूतादि सम्बन्ध से दूषितहो जाताहै, तौ सदोष और निर्दोष दो प्रकारकाहै गंगाका निर्दोष और सागरका स दोषहै, गंगाशब्दसे अन्य नदी भी जान्ना और सागर शब्दसे जलाशयादिभी जान्ना, सो आश्विनमासके विना समुद्रका जलपान करना नहीं चाहिये ॥ २ ॥

येनाभिवृष्टममलं शाल्यन्नं राजतस्थितम् ।
अक्लिन्न मविवर्णं वा तत्पेयं गाङ्गमन्यथा ।
सामुद्रं तन्न पातव्यं मासादाश्वयुजाद्विना ॥ ३ ॥

कारण कि अगस्त्यके उदय से लूतादि दोष दूर हो जाताहै जिस जल से सींचे हुए शाली धान्य रजतपात्रमें स्थित क्लेद रहित निर्मल वर्णके रहें वह जल पान करना चाहिये वही गंगाका जल जान्ना, वही पानके योग्य है और स्नान अवगाहनके योग्य है, इससे विपरीत समुद्र का जल जान्ना, वह पानके योग्य नहीं है ॥ ३ ॥

स्वाम्बुगङ्गाभवं हृद्यं ह्लादिबुद्धिप्रबोधनम् ।
तन्वव्यक्तरसं मृष्टं शीतं लघ्वमृतोपमम् ॥
जीवनं तर्पणञ्चैव तद्वन्नाभसभूमिगम् ॥ ४ ॥

आकाश से गिरा हुआ गंगा जल हृदयको हितकारक आनंददायक बुद्धिका प्रबोध करने वाला है, आस्वाद सुखका देने वाला, शीतल हलका अमृतकी समान है, जीवन और तृप्तिका

*दिव्य पवन बिजलीके योगसे ताडित हो जो जल आकाश से ओले बनकर गिरता है उसे करका कहते है.

देने वाला है, इसी प्रकार अन्तरिक्ष से भूमिमें आया हुआ अर्थात् आकाश गुण सम्बन्ध वाली भूमिका जल है ॥ ४ ॥

कारकं तोयममृतं नैहारं सर्व्वदोषकृत् ।
अवश्यायभवं रूक्षं वातलं लघुशीतलम् ॥
दाहासृक् पित्ततृट्छर्दि सक्थिस्तम्भादिपूजितम् ॥५॥

करका ओले सम्बन्धी जल अमृत रूप है, निहारका जल सब दोष का दूर करने वाला है और संहती भूत हुए हिमका जल रूखा वातकारक शीतल है दाह रुधिर पित्त तृष्णा छर्दि सक्थि स्तम्भादि में हितकारकहै ॥ ५ ॥

नादेयं वातलं रूक्षं दीपनं लघुलेखनम् ॥ ६ ॥

नदीका जल वात कारक रूखा दीपन हलका और लेखनहै ६

नदेऽभिष्यन्दि मधुरं सान्द्रं गुरुकफावहम् ॥ ७ ॥

नद शोणभद्र आदिका जल अभिष्यन्दि मधुर घना भारी कफका करनेवालाहै ॥ ७ ॥

सारसं तुवरं बल्यं तृष्णाघ्नं मधुरं लघु ॥ ८ ॥

स्वयं निर्मित सरोवरका जल कसैला बलकारक तृष्णा नाशक मधुर और लघुहै ॥ ८ ॥

ताडागं वातलं स्वादुकषायं कटुपाकिच ॥ ९ ॥

तालावका जल वातकारक स्वादु कसैला कटुपाकीहै ॥ ९ ॥

वाप्यं सक्षारकटुकं पित्तलं कफवातनुत् ॥ १० ॥

बावड़ीका जल क्षार युक्त कटु पित्तकारक कफ और वातका दूर करनेवालाहै ॥ १० ॥

कौपं कफघ्नं सक्षारं पित्तलं लघुदीपनम् ॥ ११ ॥

कुएंका जलकफ नाशक खारी पित्तकारकलघु और दीपनहै ११

चौंडमग्निकरं रूक्षं मधुरं कफकारि च ॥ १२ ॥

नवीन कुएंका जलअग्निकारकरूखा मधुर और कफ करनेवालाहै

नैर्झरं लघुपथ्यञ्चदीपनं कफनाशनम् ॥ १३ ॥

झरनेका जल हलकाहै पथ्यहै दीपनहै कफनाशकहै ॥ १३ ॥

औद्भिदं पित्तशमनं मधुरं न विदाहि च ॥ १४ ॥

नीचे स्थानसे ऊपरको उबलकर निकलता हुआ जल पित्तका शान्त करनेवाला मधुरहै विदाही नहींहै ॥ १४ ॥

वैकिरं लघुसक्षारं श्लेष्मलं वह्निदीपनम् ॥ १५ ॥

वालुकादि बिछाकर जलके स्थानसे ग्रहण किया जल हलका क्षार युक्त श्लेष्माकारक अग्नि प्रदीप्त करनेवालाहै ॥ १५ ॥

कैदारं पाल्वलं स्वादुविपाकेगुरुदोपलम् ॥ १६ ॥

केदार और तृणादि से आच्छादित अल्प सरोवरका जल स्वादु पाकमें भारी दोषकरनेवालाहै ॥ १६ ॥

सामुद्रं लवणं विस्रं सर्व्वदोषप्रकोपणम् ॥ १७॥

समुद्र का खारी जल आमगन्धी और सब दोषका कोप करने वाला है । १७ ॥

आनूपं वार्य्यभिष्यन्दि मधुरं पिच्छिलं गुरु ।
स्निग्धं वह्निहरं सान्द्रं जाङ्गलं वार्य्यतोन्यथा ॥ १८ ॥

अनूप देशका जल अभिष्यन्दि मधुर चिकना और भारी है स्निग्ध अग्निका हरने वाला सघन जांगल जल होता है ॥ १८ ॥

साधारणं वारिशीतं दीपनं मधुरं लघु ॥ १९ ॥

साधारण जल शीतल दीपन मधुर और लघु होता है ॥१९॥

पश्चिमोदधिगाः शीघ्रवहायाश्चामलोदकाः ।
पथ्याः समस्तास्तानद्यो विपरीतास्ततोन्यथा ॥ २०॥

जो नदी पश्चिमकी ओर बहती हैं पश्चिम सागरमें जाती हैं, जिनका जल निर्मल है और शीघ्र बहती हैं उन सब नदियोंका जल पथ्य है, इससे विपरीत अपथ्य है ॥ २० ॥

उपलास्फालनाक्षेप विच्छेदैः खेदितोदकाः ।
हिमवन्मलयोद्भूताः पथ्यास्ताएवचास्थिराः ॥
क्रिमिश्लीपदहृत् कण्ठशिरोरोगान् प्रकुर्वते ॥ २१ ॥

जो जल पत्थरों के आस्फालन आक्षेप विक्षेप से खेदित होता है, जो हिमालय और मलया चलके स्थान गुफासे प्राप्त हुआ

है, वे स्थिर जलभी पथ्य हैं कृमि रोग श्लीपद हृदय कण्ठ और शिरके रोगोंको करताहै ॥ २१ ॥

पारियात्रभवायांश्च विन्ध्यसह्यभवाश्चयाः ॥
शिरोहृद्रोगकुष्ठानां तादेतुः श्लीपदस्य च ॥ २२ ॥

जो गुहाआदि स्थानमें होनेवाले जलहैं जो जल विन्ध्य पर्वत और सह्य पर्वतमें गुफादिमें स्थितहैं वेशिरो रोग हृदय रोग कुष्ठ रोग और श्लीपद रोगके करनेवाले हैं ॥ २२ ॥

रक्षोघ्नं शीतलं ल्हादि ज्वरदाहविषापहम् ।
चन्द्रकान्तोद्भवं वारिपित्तघ्नं विमलं स्मृतम् ॥ २३ ॥

चन्द्रकान्त मणिके प्रभावसे युक्तजल तथा आकाशमें चन्द्र किरणसे प्राप्त हुआ जल राक्षसकी पीडा निवारण करनेवाला शीतल आनंद करनेवाला ज्वर दाह विषका दूर करनेवाला पित्तका नाशक और निर्मलहै ॥ २३ ॥

दिवार्ककिरणैर्जुष्टं जुष्टमिन्दुकरैर्निशि ।
अरुक्षमनभिष्यन्दि तत्तुल्यं गगनाम्बुना ॥ २४ ॥

जो दिनमें सूर्यकी किरणोंसे युक्तहै और रात्रिमें जिसमें चंद्रमाकी किरणें पडतीहैं वह जल रूखा नहीं है अभिष्यन्दता रहित आकाश जलकी बराबर है ॥ २४ ॥

नारिकेलोदकं वृष्यं स्वादुस्निग्धं हिमं गुरु ।
हृद्यं पित्तपिपासाघ्नं दीपनं वस्तिशोधनम् ॥ २५ ॥

नारियलका जल वीर्य कारक स्वादु चिकना ठंडा भारीहै हृदयको हितकारक पित्त और पिपासाका नाश करनेवाला दीपन और वस्ति शोधक है ॥ २५ ॥

नारिकेलजलं जीर्णं गुरुविष्टम्भिपित्तकृत् ॥ २६ ॥

नारियलका जल जीर्णहुआ भारी विष्टम्भि और पित्तका करने वाला है ॥ २६ ॥

वालक्रमुकतोयन्तु तृष्णापित्तास्त्रजिद्गुरु ॥ २७ ॥

सुगंधवाला भद्रमोथेका जल तृष्णा पित्त रक्तको जीतनेवाला और भारीहै ॥ २७ ॥

तालाम्बु पित्तजिच्छुक्रस्तन्यवृद्धिकरं गुरु ॥ २८ ॥

तालकाजल पित्तका जीतनेवाला शुक्र और दूधकी वृद्धि करनेवाला भारी है ॥ २८ ॥

मूर्च्छापित्तोष्णदाहेषु विषेरक्तेमदात्यये।
श्रमक्लमपरीतेषु तमकेवमथौतथा ॥
ऊर्द्धगे रक्तपित्तेतु शीतमम्भः प्रशस्यते ॥ २९ ॥

शीतल जल मूर्छा पित्तकोप उष्ण दाह विषरक्त मदात्यय श्रम खेद तमक (दुःख) वमन रक्तपित्तके ऊर्द्धगति होनेमें गुण कारक कहा है ॥ २९ ॥

पार्श्वशूले प्रतिश्यायेवातरोगेगलग्रहे।
आध्मानेस्तिमितेकोष्ठे शद्यःशुद्धे नवज्वरे ॥
हिक्कायां स्नेहपीतेच शीताम्बुपरिवर्ज्जयेत् ॥ ३० ॥

पसलीका दर्द पीनस वातरोग गलग्रह रोग अफरा कोष्ठ स्तम्भ तत्काल शुद्धि नवीन ज्वर हिचकी स्नेहपान इनमें शीतल जलका पीना वर्जित है ॥ ३० ॥

उष्णोदकं सदापथ्यं कासश्वास ज्वरापहम्।
कफवातामदोषघ्नं दीपनं बस्तिशोधनम् ॥ ३१ ॥

गरम जल सदा पथ्यहै कास श्वास ज्वरका हरनेवाला कफ वात आम दोषका हरनेवाला दीपन बस्ति शोधन करनेवालाहै॥३१॥

शृतशीतं त्रिदोषघ्नं यदन्तर्वाष्पशीतलम्।
शीतीकृतन्तु विष्टम्भि दुर्जरं पवनाहतम् ॥ ३२ ॥

औटाकर ठंडा किया हुआ जल त्रिदोष नाशक है जो भीतर वाफसेही शीतल किया गया है वह कोष्ट है और जो पवन लगनेसे शीतल हुआ है वह दुर्जर और विष्टम्भिहै ॥ ३२ ॥

नतत्पर्य्युषितं देयं कदाचिदपि जानता।
ह्यम्लीभवेत् पर्य्युषितं कफक्लेदि पिपासवे ॥ ३३ ॥

औटाया जल बासी किसी प्रकार सेवन करना नहीं चाहिये बासी जल विरस होजाता है वह कफ क्लेदवाले और प्यासको अहित कारीहै ॥ ३३ ॥

शृततोयं दिवारात्रौ गुरु रात्रिशृतं दिवा ॥ ३४ ॥

दिनका पकाया जल रात्रिमें भारी होजाता है और रातका औटाया दिनमें भारी होजाता है ॥ ३४ ॥

भौमानामम्भसांप्रातः सर्व्वेषां ग्रहणं मतम् ।
तदाहि शैत्यं नैर्मल्यं तोचापां परमौगुणौ ॥ ३५ ॥

पृथ्वीके जल सब प्रकारके प्रातःकालमें ग्रहण करने श्रेष्ठहैं उस समय वे शीतल निर्मल गुणोंमें परम श्रेष्ठ होते हैं ॥ ३५ ॥

आन्तरीक्षन्तु वर्षासु कौपमौद्भिदमेवच ।
अगस्त्योदयनैर्मल्यात् सर्व्वं शरदिशस्यते ॥
सरस्तड़ागसम्भूतं हेमन्ते जलमिष्यते ।
कौपचौण्डे वसन्ते तु ग्रीष्मेप्रास्रवणोद्भिदे ॥
कौपं प्रावृषि सर्वं वा संस्कृतं वारिचेष्यते ॥ ३६ ॥

हठ (सिवारभेद) सिवार कीचड़ आदिसे युक्त जल दोषकारक है जो अत्यन्त वायुसे वर्षामें आकाशका जल ग्रहण करना चाहिये जो गंगाका हो तथा कूप और उद्भिदजल ग्रहण करना अगस्त्य के उदयमें कुवारमें सब जल निर्मल होजाते हैं सरोवर और तड़ागका जल हेमन्तमें निर्मल होकर पीनेके योग्य होता है कुएं और चौण्डका जल वसन्तमें और ग्रीष्ममें हितकारक और सोतका जल निर्मल पीनेके योग्यहै कुएंका वा और कहींका जल चौमासेमें शुद्ध करिके पान करना चाहिये ॥ ३६ ॥

हठशैवलपंकादिसंछन्नं दोषलश्चतत् ॥
वाय्वर्ककिरणास्पृष्टं नपेयं साधनादृते ॥ ३७ ॥

आर सूर्यकी किरणोंसे तापित है वह पीना न चाहिये जब तक उसे सिद्ध न कर ले ॥ ३७ ॥

अरोचके प्रतिश्याये प्रसेकेश्वयथौ क्षये।
मन्दाग्नावुदरेकुष्ठे ज्वरेनेत्रामयेतथा॥
व्रणे च मधुमेहे च पानीयं मन्दमाचरेत्॥३८॥
इति पानीयवर्गः।

अरुचि पीनस जुकाम प्रसेक सूजन क्षय मन्दाग्नि उदर कुष्ठ ज्वरमें नेत्ररोग व्रण मधुप्रमेह इन रोगोंमें बहुत जल कमती पीना चाहिये ॥ ३८ ॥

इति पानीयवर्गः।

अथ क्षीरवर्गः।

क्षीरमष्टविधं गव्य माजमौरभ्रमाहिषे।
कारेणवमथौष्ट्रश्च वाडवं मानुषं तथा॥ १॥

आठप्रकारका दूध होता है गौका बकरीका मेषीका भैंसका हथनीका ऊंटनीका घोडीका और स्त्री (मानुषी का) यद्यपि और जन्तुओंकेभी दूध होता है परन्तु उपयोगी होनेसे यही वर्णन कियागया है ॥ १॥

क्षीरं स्वादुरसं स्निग्ध मोजस्यं धातुवर्द्धनम्।
वातपित्तहरं वृष्यं श्लेष्मलं गुरुशीतलम्॥ २॥

क्षीर स्वादु रसयुक्त स्निग्ध बल और धातुका बढानेवाला वात पित्तहरनेवाला वीर्य्यवर्द्धकश्लेष्मकारक भारी और शीतलहै ॥२॥

गोक्षीर मनभिष्यन्दि स्निग्धं स्वादु रसायनम्।
रक्तपित्तहरं शीतं मधुरं रसपाकयोः॥
जीवनीयं तथा वातपित्तघ्नं परमं मतम्॥ ३॥

गौका दूध अनभिष्यन्दि (अस्रावक) स्निग्ध स्वादु और रसायन है रक्तपित्तका हरनेवाला ठंडा रसपाकमें मधुर जीवन का देने वाला और वात पित्तका हरने वाला है ॥ ३ ॥

छागं कषायमधुरं शीतं ग्राहिपयोलघु।

रक्तपित्तातिसारघ्नं क्षयकासगरापहम् ॥
अजानामल्पकायत्वात् कट्वतिक्तनिषेवणात् ।
नात्यम्बुपानाद्व्यायामात् सर्व्वव्याधिहरं पयः ॥ ४ ॥

छागका दूध कसेला मधुर शीतल ग्राही प्रिय और लघु है, रक्तपित्त अतिसारका दूरकरने वाला, क्षय और कास रोगका दूर करने वाला है जो कि बकरी अल्प शरीर वाली हैं नित्यकटु और तिक्त द्रव्यका सेवन करती हैं न बहुत जल पीती हैं और परिश्रमके करनेसे उनका दूध सब दोषोंका हरने वला है ॥ ४ ॥

मेषीक्षीरं गुरुस्वादु स्निग्धोष्णं कफपित्तकृत् ।
शुद्धेऽनिलेभवेत्पथ्यं सेकेचानिलशोणिते ॥ ५ ॥

मेषीका दूध भारी स्वादु स्निग्ध गरम कफ और पित्तका करने वाला अग्निमें शुद्ध करनेसे पथ्य है और वातरक्तमें सेकमें हित कारक है ॥ ५ ॥

महिषीणां गुरुतरं गव्याच्छीततरं पयः ।
स्नेहादूनमनिद्राणामत्यग्नीनां हितञ्चतत् ॥ ६ ॥

भैंसका दूध गौके दूधसे अधिक भारी है और अधिकतर शीतल है घृतमें अधिक हैं जिनको निद्रा न आतीहो वा आधिक अग्निहो उनको हित कारक है ॥ ६ ॥

हस्तिनीनांपयोवल्यं गुरु स्थैर्य्यकरं वरम् ।
ईषद्रूक्षोष्णलवणमौष्ट्रकं दीपनं लघु ॥
शस्तंवातकफानाहक्रिमिशोफोदरार्शसाम् ॥ ७ ॥

हथिनीका दूध बलकारक भारी स्थिरता करने वाला श्रेष्ठहै, कुछ रूखा नोनखरा दीपन और लघु ऊंटनीका दूध होताहै यह वात कफ आनाह कृमि शोफ उदर अर्श रोगमें हित कारक है ॥ ७ ॥

उष्णमेकशफंवल्यं शाखावातहरंपयः ।
ईषदम्लं स्वादुरूक्षं लवणानुरसं लघु ॥ ८ ॥

एक खुरवाले चौपायोंका दूध बलकारक बाहु सक्थि आदि शरीरके अवयवोंकी वातका हरनेवालाहै कुछ अम्ल स्वादु रूखा लवणरस युक्त और लघु होता है ॥ ८ ॥

नार्य्यास्तु मधुरंस्तन्यंकषायानुरसंहिमम् ।
नस्याश्चोतनयोः पथ्यं जीवनं लघुदीपनम् ॥ ९ ॥

स्त्रियोंका दूध मधुर कसेला रस युक्त शीतलहै नस्य और नेत्रोंके तर्पणमें पथ्य जीवन दायक लघु और दीपन है ॥ ९ ॥

क्षीरसन्तालिका वृष्या स्निग्धा पित्तानिलापहा ॥ १० ॥

दूधका विकार वीर्य बलकारक स्निग्ध पित्त और वातका हरनेवालाहै ॥ १० ॥

पयोभिष्यन्दिगुर्वामं प्रायशः परिकीर्त्तितम् ।
तदेवोक्तंलघुतरमनभिष्यंदिवैशृतम् ॥ ११ ॥

विना औटाया दूध भारी अभिष्यन्दि होताहै और औटाया हुआ अत्यन्त लघु और अनभिष्यन्दि होता है ॥ ११ ॥

वर्जयित्वा स्त्रियास्तन्य माममेवहितद्धितम् ॥ १२ ॥

परन्तु स्त्रीका दूध औटाना नहीं चाहिये वह कचाही हित कारकहै ॥ १२ ॥

धारोष्णं गुणवत् क्षीरं विपरीत मतोन्यथा ॥ १३ ॥

दुहतेमें दूधकी धार पान करना गुणकारकहै उष्ण है अन्यथा इससे विपरीतगुणहैं ॥ १३ ॥

तदेवातिशृतं सर्व्वं गुरु बृंहण मुच्यते ॥ १४ ॥
अनिष्टगन्धमम्लञ्च विवर्णं विरसञ्चयत् ।
वर्ज्यं सलवणं क्षीरं यच्चविग्रथितं भवेत् ॥ १५ ॥

बहुत औटाहुआ दूध भारी और वीर्य जनक है ॥ १४ ॥ जिसमें दुर्गन्ध आती हो खट्टा विवर्ण और विरस हो गयाहो वह और नमकपड़ा दूध तथा फटाहुआ दूध खाना वर्जित है ॥ १५ ॥

दध्यम्लं मधुरं ग्राहि गुरूष्णं वातनाशनम् ।

मेदःशुक्रबलश्लेष्म पित्तरक्ताग्नि शोफकृत् ॥
रोचिष्णशस्तमरुचौशीतके विषमज्वरे ॥
पीनसेमूत्रकृच्छ्रे चरूक्षन्तु ग्रहणीगदे ॥ १६ ॥

दही खट्टा है मधुर है ग्राही भारी वात का नाशक है, मेद शुक्र बल श्लेष्मा पित्तरक्त अग्नि शोफका करनेवाला है रुचि कारक है अरुचि शीत विषमज्वर पीनस मूत्रकृच्छ्रमें हित कारक है, और ग्रहणी रोगमें रूखा हितकारक है ॥ १६ ॥

गव्यं दधिचमंगल्यं वातघ्नं शुचिरोचकम् ।
स्निग्धं विपाके मधुरं दीपनं बलवर्द्धनम् ॥ १७ ॥

गौका दधि मंगलदायक वात नाशक पवित्र और रोचक है स्निग्ध पाकमें मधुर दीपन और बलवर्द्धक है ॥ १७ ॥

दध्याजं कफपित्तघ्नं लघु वातक्षयापहम् ।
दुर्नामश्वासकासेषु हितमग्नेश्च दीपनम् ॥
विपाकेमधुरं वृष्यं रक्तपित्तप्रसादनम् ।
बलाशवर्द्धनं स्निग्धं विशेषाद्दधि माहिषम् ॥ १८ ॥

अजा बकरीका दही कफ पित्तका नाशक हलका वात और क्षय रोगका नाशक है, बवासीर स्वास कास रोग और अग्नि दीपनमें हित कारक है विपाकमें मधुर वीर्य वर्द्धक रक्तपित्तका प्रसन्न करने वाला, बल वर्द्धक, स्निग्ध विशेष करके महिषका दधि है १८॥

कोपनं कफवातानां दुर्नाम्नाश्चाविकं दधि ॥ १९ ॥

भेड कादही कफ वातका कोप करने वाला तथा अर्श रोगका नाशक है, ॥ १९ ॥

दीपनीयमचक्षुष्यं वातलं वाडवं दधि ।
रूक्षमुष्णकषायञ्च कफमूत्रापहश्चतत् ॥ २० ॥

घोडीका दही दीपनहै चक्षुको अहित कारकहै, तथा वात कारकहै रूखा गरम कसैला कफ और मूत्रका हरनेवाला है २०

स्निग्धं विपाके मधुरं बल्यं सन्तर्पणं गुरु ।
चक्षुष्यमग्र्यंचदोषघ्नं दधिनार्य्या गुणोत्तरम् ॥ २१ ॥

स्त्रीके दूधका दहीविपाकमें मधुर बल कारक तृप्तिकारक भारी नेत्रोंको हितकारीहै और गुणोंमे श्रेष्ठहै ॥ २१ ॥

लघुपाके बलाशघ्नं वीर्य्योष्णं पंक्तिनाशनम् ।
कषायानुरसंनाग्यादधिवर्चोविबन्धनम् ॥ २२ ॥

पाकमें लघु बलनाशक वीर्यमें उष्ण पाक नाशक कसैला रसमें मलबन्धक हथिनीका दही होताहै ॥ २२ ॥

दधीन्युक्तानियानीह गव्यादीनि पृथक् पृथक् ॥
विज्ञेयमेवसर्वेषु गव्यमेवगुणोत्तरम् ॥ २३ ॥

जो कि गौके दही पृथक् पृथक् कहेहैं इस प्रकार सबके दहीमें उत्तरोत्तर गुणजानना ॥ २३ ॥

वातघ्नंकफकृत्स्निग्धं बृंहणं नातिपित्तकृत् ।
कुर्य्याद्भक्ताभिलासञ्चदधियद् सुपरिस्रुतम् ॥ २४ ॥

पाकादि कर दहीमें अच्छी तरह मिलानेसे भोजनमें इच्छा करताहै वात नाशक कफ कारक स्निग्ध वीर्य कारक और अत्यन्त पित्त कारक नहीं है ॥ २४ ॥

शृतक्षीरात्तुयज्जातं गुणवद्दधितत् स्मृतम् ।
वातपित्तहर रुच्यं धात्वग्निबलवर्द्धनम् ॥ २५ ॥

जो औटे हुये दूधसे उत्पन्न दहीहै वह गुण कारक होताहै वह वात पित्तका हरनेवाला रुचिकारक धातु और अग्निका बल बढाने वालाहै ॥ २५ ॥

दधित्वसारं रूक्षञ्चग्राहिविष्टम्भिवातलम् ।
दीपनीयं लघुतरंसकषायंरुचिप्रदम् ॥ २६ ॥

घी रहित दही रूखा ग्राही विष्टम्भकारक वात वर्द्धकहै दीपन अत्यन्त लघु कसैला और रुचिका करनेवालाहै ॥ २६ ॥

दध्नः सरोगुरुर्वृष्योविज्ञेयोऽनिलनाशनः ।
वन्हेर्विधमनश्चापिकफशुक्रविवर्द्धनः ॥ २७ ॥

दहीकी मलाई भारी स्निग्ध वीर्य वर्द्धक वात नाशक अग्नि मन्द करनेवाली कफ और वीर्यकी बढानेवालीहै ॥ २७ ॥

तक्रं लघुकषायाम्लं दीपनं कफवातजित्।
शोथोदरार्शोग्रहणीदोषमूत्रग्रहारुचि
प्लीहगुल्मघृतव्यापद्गरपाण्ड्वामयान् जयेत् ॥ २८ ॥

मट्ठा लघु कसैला खट्टा दीपन कफ और वातका जीतने वाला सूजन उदर रोग बवासीर संग्रहणी मूत्रग्रह अरुचि प्लीहागुल्म स्नेह व्यापत विष पाण्डुरोग इनको दूर करता है ॥ २८ ॥

मस्तुतद्वत् सरंस्रोतः शोधिविष्टम्भजिल्लघु ॥ २९ ॥

इसी प्रकार दधिमस्तु (दहीका पानी) सारक स्रोतोंको शोधने वाला विष्टम्भ जित् लघु है ॥ २९ ॥

ससरं निर्जलं घोलं तक्रं पादजलान्वितम्।
अर्द्धोदकमुदश्वित्स्यान्मथितं सरवर्जितम् ॥ ३० ॥

सर (मलाई) युक्त निर्जल मट्ठा घोल कहाता है, चौथाई जलमिला तक्र कहाता है आधा जल जिसमें मिलाहो वह उदश्वित और मथा हुआ जल रहित उन्मथित कहाता है ॥ ३० ॥

घोलं पित्तानिलहरं तक्रं दोषत्रयापहम्।
उदश्विच्छ्लेष्मलश्चैनमथितं कफपित्तनुत् ॥ ३१ ॥

घोल पित्त वातका हरने वाला है, तक्र त्रिदोषका हरने वाला है उदश्वित कफ करनेवाला और मथित कफ पित्तका दूर करने वाला है ॥ ३१ ॥

वातेऽम्लं सैन्धवोपेतं पित्तेस्वादुसशर्करम्।
पिबेत्तक्रं कफेचापिव्योषक्षारसमायुतम् ॥ ३२ ॥

वातकी अधिकता में अम्लतक्रको सेंधाडालकरपिये पित्तमें बूरा डालकर स्वादु पिये और कफकी अधिकतामें सोंठमिरच पीपल और जवाखारके साथ पिये ॥ ३२ ॥

नैवतक्रं क्षतेदद्यात् नोष्णकाले न दुर्बले।
नमूर्च्छाभ्रमदाहेषु नरोगेरक्तपित्तके ॥ ३३ ॥

क्षतमें तक्रकासेवन करे, न उष्ण कालमें न दुर्बलतामें सेवन

करे, तथा मूर्च्छा भ्रम दाह रक्तपित्त रोगमें, तक्रका सेवन करना नहीं चाहिये ॥ ३३ ॥

ग्राहिणीपातलारूक्षाविज्ञेयातक्रकूर्चिका ॥ ३४ ॥

ग्राही वातकारक रूखी तक्र कूर्चिका (आमिक्षा) जाननी३४॥

तक्राल्लघुतरोमण्डः कूर्चिकादधितक्रजः ॥ ३५ ॥

मण्ड (रस) तक्रसे अत्यन्त हलका होताहै दहीकी कूर्चिकासे मण्ड होताहै दहीके साथ दूध पकानेसे कूर्चिका होतीहै कोई तक्रसे दधि कूर्चिका का होना कहतेहैं विशेष कर दहीकी होतीहै ॥ ३५ ॥

किलाटोऽनिलहावृष्यः कफनिद्राकरोगुरुः ॥ ३६ ॥

किलाट (नष्ट क्षीर पिंड) अग्निनाशक वीर्य कारक कफ निद्राकरनेवाला भारी होताहै ॥ ३६ ॥

मधुरोबृंहणस्तद्वत् पीयूषोपिसमोरटः ॥ ३७ ॥

मधुर पुष्टिकारक पीयूष और मोरट होताहै तुरत प्रसव हुए पशुका दूध पीयूष कहाताहै और सातरातके पीछे उसकी मोरट संज्ञा होतीहै ॥ ३७ ॥

नवनीतं नवं वृष्यं शीतं वर्णबलाग्निकृत् ।
संग्राहिवातपित्तासृक्क्षयाऽर्शोर्दितकासजित् ॥ ३८ ॥

ताजामक्खन वीर्य कारक शीतल वर्णबल अग्निका करने वाला ग्राही वात पित्त रुधिर क्षय अर्शोत्व (बवासीर) अर्दित और खांसीका दूर करनेवालाहै ॥ ३८ ॥

क्षीरोद्भवन्तु संग्राहिरक्तपित्ताक्षिरोगनुत् ॥ ३९ ॥

दूधसे मथकर निकला मक्खन संग्राही रक्तपित्त नेत्ररोगका दूर करनेवालाहै ॥ ३९ ॥

विकल्प एपदध्यादिःश्रेष्ठोगव्योऽभिवर्णितः ।
विकल्पानवशिष्टांस्तु क्षीरवीर्य्ये समादिशेत् ॥ ४० ॥

यह दहीसे निकाला हुआ गऊका मक्खन बहुत अच्छाहै दूसरे जीवोंके दूधके अनुसार उनके मक्खनके गुण जानने ॥४०॥

घृतं बुद्ध्यग्नि शुक्रौजोमेदःस्मृतिकफावहम्।
वातपित्तविषोन्मादशोषालक्ष्मीजरापहम्।
स्नेहोत्तमं योगवाहिसर्व्वथा मधुरं हिमम् ॥ ४१ ॥

घृतबुद्धि अग्नि वीर्य मेद स्मृति कफका बढानेवाला है और वातपित्त विष उन्माद शोष, अलक्ष्मी जराका दूर करनेवालाहै संस्कार वशसे कफकोभी दूर करता है स्नेहोंमें उत्तम योग वाही (जिस द्रव्यके संग संयुक्तकरो वैसाही होजाय) सर्वथा मधुर और शीतल है ॥ ४१ ॥

गव्यं घृतं घृतश्रेष्ठं चक्षुष्यं बलवर्द्धनम्।
विपाके मधुरं श्रेष्ठं वातपित्तविषापहम् ॥ ४२ ॥

गऊका घृत श्रेष्ठ है नेत्रोंको हितकारी बलका बढाने वाला-पाकमें मधुर श्रेष्ठ वात पित्त और विषका दूर करनेवाला है ४२॥

माहिषन्तु घृतं स्वादु पित्तास्रानिलनुद्धिमम् ॥ ४३ ॥

भैंसका घृत स्वादु पित्तरक्त वात नाशक और ठंडाहै ॥४३॥

छागं घृतंतु चक्षुष्यं लघ्वग्निबलवर्द्धनम् ॥ ४४ ॥

बकरीका घृत नेत्रोंको हितकारक लघु अग्नि और बलका बढाने वालाहै ॥ ४४ ॥

'आविकादीनि सर्पींषिदुग्धास्वक्षीरवद्वदेत् ॥ ४५ ॥

भेड आदिके घी उनके घृतकी समान गुणवाले हैं ॥ ४५ ॥

सर्पिः पुराणं त्रिमलप्रतिश्यातिमिरापहम्।
मूर्छाकुष्ठविषोन्मादग्रहापस्मारनाशनम् ॥ ४६ ॥

पुराना घी त्रिदोष पीनस तिमिर रोगका हरनेवाला मूर्छा कुष्ट विष उन्माद ग्रह अपस्मारका नाश करताहै उग्र गन्धवाला पुराना घृत दशवर्षमें होताहै जितना जितना पुरानाहो उतना उतना गुणोंमें अधिक होताहै ॥ ४६ ॥

क्षीरघृतंतु संग्राहितर्पणं नेत्ररोगनुत् ॥ ४७ ॥

दूधसे निकाला घृत ग्राही तृप्तिकारक नेत्ररोग दूर करताहै४७

सर्पिर्मण्डः सरः स्वादुर्योनिश्रोत्राक्षिशिरोऽक्षिजान्।
गदान् जयति शोथघ्नो रूक्षस्तीक्ष्णस्तनुश्रसः ॥ ४८ ॥
इति क्षीरवर्गः।

घृतमण्ड सारकहै योनि श्रोत्र शिर नेत्रोंके रोगोंको दूर करता तथा शोथ दूर करताहै रूखा और तीक्ष्णहै ॥ ४८ ॥
इति क्षीरवर्गः।

तैलं संयोगसंस्कारात् सर्वरोगहरं स्मृतम्।
कषायानुरसं स्वादु सूक्ष्ममुष्णं व्यवायिच ॥
पित्तलं बद्धविण्मूत्रं नच श्लेष्माभिवर्द्धनम्।
वातघ्नमुत्तमं बल्यंत्वच्यं मेधाग्निवर्द्धनम् ॥ १ ॥

संयोग संस्कारसे तेल सब रोगोंका हरनेवालाहै कसैला रसीला स्वादु सूक्ष्म गरम और व्यवायीहै पित्तकारक विष्ठ मूत्रका बांधनेवाला कफका न करनेवाला वात हारक मलकारक त्वचाको हितकारक मेधा और अग्नि का बढानेवाला है ॥ १ ॥

सार्षपं कटुतीक्ष्णोष्णं कफशुक्रानिलापहम्।
लघुपित्तास्रकृत्कोठकुष्ठार्शोव्रणजन्तुजित् ॥ २ ॥

सरसोंका तेल कटु तीक्ष्ण गरम कफ वीर्य वातका हरनेवाला, हलका पित्त रुधिरका करनेवाला, कोठ कुष्ठ बवासीर व्रण कृमिका दूर करनेवालाहै ॥ २ ॥

सेकाभ्यंगावगाहेषु तिलतैलं प्रशस्यते।
तद्वस्तिषुच पानेषु नस्येकर्णाक्षिपूरणे ॥
अन्नपानविधौ चापि प्रयुज्यं वातशान्तये ॥ ३ ॥

सेक मालिश स्नानमें तिलका तेल उत्तमहै, तथा बस्ति शोधन पान नस्य कर्म आंख नाकके पूर्ण करनेमें अन्नपान विधिमें वात शान्तिमें इसका प्रयोगकरना चाहिये ॥ ३ ॥

तैलमेरण्डजं तिक्तं कटुस्वादुरसंगुरु।

अश्मगुल्मानिलकफानुदरान् विषमज्वरम् ॥
रुक्शोफौ च कटीगुह्यकोष्ठपृष्ठाश्रयौजयेत् ॥ ४ ॥

अरंडका तेल तीखा स्वादु कटु रसयुक्त और भारीहै अश्म गुल्म वात कफ उदर रोग विषमज्वर दर्द सूजन कमर गुह्य, कोष्ठ, पीठके दर्दको दूरकर्ता है ॥ ४ ॥

तीक्ष्णोष्णं पिच्छिलं विस्रं रक्तैरण्डोद्भवं त्वति ॥ ५ ॥

तथा तीक्ष्ण उष्ण चिकना सारक लाल अरेण्डका तेल होताहै५

उमाकुसुम्भजं तूष्णं त्वग्दोषकफपित्तकृत् ॥ ६ ॥

अलसीकातेल गरम त्वचाके दोष और कफ पित्तका जीतने वालाहै ॥ ६ ॥

करञ्जनिम्बतैलन्तु नात्युष्णं कफपित्तजित् ।
तिक्तं क्रिमिहरं तैलं शेषं योनिवदादिशेत् ॥ ७ ॥

करंज और नीमकातेल बहुत उष्ण नहीं, कफ और पित्तका जीतने वालाहै तीखा कृमि हरने वालाहै, शेष जो वस्तु जैसी हो वैसा उसका तेलजाने ॥ ७ ॥

सर्वेभ्यस्त्विहतैलेभ्य स्तिलतैलं विशिष्यते ॥ ८ ॥

सब तेलोंसे तिलका तेल अधिक उत्तम है ॥ ८ ॥

वसामज्जा च वातघ्नौ बलपित्तकफप्रदौ ।
मांसानुरूपगन्धौ च विद्यान्मेदोऽपितावित्र ॥ ९ ॥

दूसरे पदार्थोंका निकालातेलमें गुणोंमें उन पदार्थोंके समानहैं चर्बी और मींग वातनाशकबलपित्त और कफकी देनेवाली और मांसके अनुसार उनमें गन्ध और मेद जानना जिस जीवका जैसा मांस वैसी उसकी चर्बी जाननी ॥ ९ ॥

इति तैलवर्गः ।

इक्षोरसो हिमोवृष्यस्तर्पणो जीवनः सरः ।
वातासृक्पित्तजित्स्वादुः स्निग्धः प्रीणनबृंहणः ।
रसोदन्तकृतः श्लेष्मकारणं न विदाहवान् ॥ १ ॥

ईखकारस ठंडा बलकारक तृप्तकारक जीवन दायक सारक वात रक्त पित्तका जीतनेवाला स्वादु स्निग्ध प्रीति कारक वीर्य बलकर्ता रस दन्त पीढाकारक श्लेष्माका करनेवाला तथा विदाही नहींहै ॥ १ ॥

यान्त्रिकस्तु विदाहीस्याद्गुरुस्त्वग्ग्रन्थियोगतः ॥ २ ॥

कोल्हूमें पेला हुआ रस भारी ग्रन्थिके योगसे होताहै ॥ २ ॥

अतीवमधुरो मूले मध्ये मधुर एवच।
अग्रे चाक्षिषु विज्ञेय इक्षूणां लवणो रसः ॥ ३ ॥

मूलमें अतीव मधुर मध्यमें मधुर और गन्नेकी फुलची पर नून-खरा रस होताहै ॥ ३ ॥

पक्वोरसो गुरुः स्निग्धः सतीक्ष्णः कफवातजित् ॥ ४ ॥

पक्वारस भारी स्निग्ध तीक्ष्ण कफ और वातका जीतनेवालाहै ४

फाणितं गुर्वभिष्यन्दिवृंहणं कफशुक्रलम् ॥ ५ ॥

इसका फांट भारी अभिष्यन्दि वीर्यकारक कफ और वीर्यका करनेवालाहै ॥ ५ ॥

रूक्षं मधूकपुष्पोत्थं फाणितं त्वथवातहृत्।
कफदं मधुरं पाके कषायं बस्तिदूषणम् ॥ ६ ॥

महुएके फूलके रसका फांट वातका हरनेवालाहै कफ कारक पाकमें मधुर कसेला बस्तिका दूषण करनेवालाहै ॥ ६ ॥

गुडोवृष्यो गुरुः स्निग्धः सक्षारो मूत्रशोधनः।
नातिपित्तहरो मेदः कफक्रिमिबलप्रदः ॥ ७ ॥

गुड वीर्यकारक,गुरु चिकना क्षार युक्त मूत्रका शोधन करनेवाला पित्तका बहुत न हरनेवाला मेद कफ क्रमि और बलकारकहै ७

पित्तघ्नो मधुरः शुद्धो वातघ्नोऽसृक्प्रसादनः ॥ ८ ॥

मधुर और शुद्ध पित्तका हरनेवाला वात नाशक रुधिरका स्वच्छ करनेवालाहै ॥ ८ ॥

सपुराणोऽधिकगुणो गुडः पथ्यतमः स्मृतः ॥ ९ ॥

पुराना गुड अधिकतर गुणदायक और पथ्यहै ॥ ९ ॥

खण्डं वृष्यतमं बल्यं चक्षुष्यं बृंहणं तथा।
वातपित्तहरं नातिस्निग्धं हृद्यं सुखप्रदम् ॥ १० ॥

खांड वीर्यकारक बलदायक नेत्रोंको हितकारक वीर्यवर्द्धक वात पित्तको हरनेवाली कुछेक स्निग्ध हृदयको हितकारक सुखदायकहै ॥ १० ॥

शर्करावातपित्तासृङ्मूर्छाछर्दिविषापहा ॥ ११ ॥

शक्कर वात पित्त रुधिर विकार मूर्च्छा छर्दि विषकी हरनेवाली है ॥ ११ ॥

तमराजस्तुतृष्णाघ्नोज्वरदाहास्रपित्तजित् ॥ १२ ॥

तमराज (शर्कराभेद) तृष्णा नाशक ज्वर दाह रुधिर और पित्तको जीतनेवालीहै ॥ १२ ॥

वृष्याक्षीणक्षतहिता सस्नेहा गुडशर्करा ॥ १३ ॥

स्नेह युक्त गुड और शक्कर वीर्यवर्द्धक क्षीण और क्षत (घाव) में हितकारकहै ॥ १३ ॥

मधुजा शर्करा रूक्षा तृष्णाछर्द्यतिसारनुत् ।
तद्गुणा तिक्तमधुरा सस्नेहा यासशर्करा ॥ १४ ॥

मधुसे उत्पन्न हुई शर्करा रूखी तृष्णा छर्दि अतिसारको दूर करनेवालीहै जो स्नेहयुक्त शर्कराहै उसके गुणतीखे और मधुरहैं ॥ १४ ॥

गुडमत्स्यण्डिकाखण्डशर्कराविमलाः परम् ॥ १५ ॥

गुड़की अपेक्षा मत्स्यण्डिका निर्मल है (गुड़की निखार कर बनाई टिकिया) गुडकी मत्स्यण्डिकासे खांड और बूरा निर्मल है ॥ १५ ॥

यथा यथैषां वैमल्यं मधुरत्वं तथा तथा।
स्नेहगौरवशैत्यानि सरत्वञ्च तथा तथा ॥ १६ ॥

जितनी जितनी इनमें निर्मलता हो उतनी ही उतनी मधुरता अधिक होती है और उतना उतना ही स्नेह गुरुता और शीतलता अधिक होती जाती है तथा सारक होते जाते हैं १६॥

मधुस्वादुरसं शीतं व्रणशोधनरोपणम्।
कषायानुरसं रूक्षं बल्यं दीपनलेखनम्॥
सन्धानं लघुचक्षुष्यं स्वर्यं हृद्यंत्रिदोषनुत्।
श्वासहिक्काविषहरमुष्णं साम्बुविरोधि च॥ १७॥

सहत स्वादु रससे युक्त शीतल व्रणका शोधन और रोपण करने वाला है कसेला रसयुक्त रूखा बलकारक दीपन और लेखन है टूटे जोडको मिलानेवाला हलका नेत्रोंको हितकारक स्वर और हृदयको हितकारक त्रिदोषहारक श्वास हिचकी विषका हरने वाला गरम आकाश जलका विरोधी है॥ १७॥

माक्षिकं भ्रामरं क्षौद्रं पौत्तिकं मधुजातयः।
माक्षिकं प्रवरं तेषां विशेषाद्भ्रामरं गुरु॥ १८॥

माक्षिक भ्रामर क्षौद्र पौत्तिक यह चार मधुकी जाति हैं यद्यपि सुश्रुत में आठ प्रकारका कहा है परन्तु चार प्रकारका सर्वत्र प्रसिद्ध है उन सबमें माक्षिक सहत श्रेष्ठ है और भ्रामर गुरु है॥ १८॥

माक्षिकं तैलवर्णंस्याद्घृतवर्णन्तु पैत्तिकम्।
क्षौद्रन्तुकपिलंविद्याच्छ्वेतं भ्रामरमुच्यते॥ १९॥

माक्षिक मधु तेलके रंगका पौत्तिक घृत वर्णका क्षौद्र कपिल वर्णका भ्रामर श्वेत वर्णका होता है॥ १९॥

बृंहणीयं मधुनवं नातिश्लेष्महरं सरम्।
मेदःस्थौल्यापहंग्राहि पुराण मतिलेखनम्॥
दोषत्रयहरं पक्व माममम्लं त्रिदोषकृत्॥ २०॥

नवीन मधु वाजीकरण है तथा अधिकतर श्लेष्मको हरण नहीं करता है सारक है। मेदकी स्थूलताको हरने वाला ग्राही लेखन पुराना मधु होता है पक्का मधु त्रिदोष हरने वाला है कच्चा अम्ल और त्रिदोष का करने वाला है॥ २०॥

तद्युक्तं विविधैर्योगैर्निहन्यादामयान्बहून्॥ २१॥

और अनेक योगोंके साथमें अनेक रोगोंको दूर करता है २१।

उष्णेन मधुसंयुक्तं वमनेष्ववचारितम्।
अपाकादनवस्थानान्नविरुध्येत पूर्ववत् ॥ २२ ॥
इत्यैक्षवादिवर्गः।

उष्ण मधुके साथ वमनमें औषधी देनी अपाक और अनवस्थामें पूर्ववत् विरोध नहीं होता ॥ २२ ॥

इत्यैक्षवादिवर्गः।

सर्वं पित्तकरं मद्यमम्लं दीपनपाचनम्।
भेदनं कफवातघ्नं हृद्यं बस्तिविशोधनम् ॥
पाके लघुविदाह्युष्णं तीक्ष्णमिन्द्रियबोधनम्।
विकासिसृष्टविण्मूत्रं निद्राभावप्रसक्तिनुत् ॥ १ ॥

सब प्रकारके मद्य पित्त करने वाले अम्ल दीपन पाचन भेदन कफ वातके दूर करते, हृदयको हितकारी और बस्ति के शुद्ध करने वाले हैं पाकमे लघु विदाही गरम वीर्य वर्द्धक इन्द्रिय शोधक चित्त खिलाने वाले, विष्ठा मूत्रके निर्माण करने वाले, निद्रा का अभाव और उसमें अत्यन्त प्रसक्तिको दूर करने वाले हैं ॥ १ ॥

स्तन्यरक्तक्षयहिता सुरादीपन बृंहणी।
कार्श्यार्शोग्रहणीदोषमूत्राघातानिलापहा ॥ २ ॥

सुरा स्तनोंको हितकारक, रक्त क्षयमे हितकारक, दीपन और बाजी करण है, कृशता बवासीर ग्रहणी दोष मूत्रघात और वातकी दूर करने वाली है ॥ २ ॥

कासार्शोग्रहणीदोषप्रतिश्यायविनाशिनी।
श्वेता मूत्रकफस्तन्यरक्तमांसकरीसुरा ॥ ३ ॥

तथा खांसी बवासीर संग्रहणी पीनसको दूर करती है श्वेता सुरा मूत्र कफ स्तन्य रक्तमांसकी करने वाली है ॥ ३ ॥

छर्द्यरोचकहृत्कुक्षितोदशूलप्रमर्दिनी।
प्रसन्नागुल्मवातार्शोविबन्धानाहनाशिनी ॥ ४ ॥

छर्दि अरुचि नाशक, कुक्षिका शूल दूर करती है प्रसन्न सुरा गुल्मवात अर्श विबन्ध अनाह रोगको दूर करती है ॥ ४ ॥

पित्तलाल्पकफारूक्षा यवैर्वातप्रकोपनी।
विष्टम्भिनी सुरागुर्वी श्लेष्मलातु मधूलिका ॥ ५ ॥

यवकी सुरा पित्तकारक थोडा कफकरती है रूखी और वात की कोपकरनेवाली है विष्टम्भकारक सुरा भारी है गोधूमकी सुरा श्लेष्मकारक है ॥ ५ ॥

रूक्षा नातिकफावृष्या पाचनी वल्कलीसुरा ॥ ६ ॥

वल्कली (दालचिनीकी) सुरा रूखी कुछ कफकारक वाजी कर और पाचक है ॥ ६ ॥

कोहोलोभेद्यवृष्यश्च त्रिदोषोवदनप्रियः ॥ ७ ॥

कोहेल नाम मद्य भेदक वाजीकर त्रिदोषकारक और मुख-प्रिय है ॥ ७ ॥

ग्राह्युष्णोजगलः प्रोक्तोरूक्षस्तृड्कफशोथनुत् ॥ ८ ॥

जगल मदिरा ग्राही गरम रूखी तृषा और शोफ रोगको दूर करती है ॥ ८ ॥

हृद्यः प्रवाहिकाटोपदुर्नामानिलशोथनुत् ।
वक्कसोहृतसारत्वाद्विष्टम्भी वातकोपनः ॥ ९ ॥

वक्कस मद्य हृदयको हितकारक प्रवाहिका आटोप दुर्नामवात और शोथकी दूरकरने वालीहै और सार रहित होनेसे विष्टम्भी तथा वातका कोप करनेवाली है ॥ ९ ॥

शीधुः पित्तानिलहरः श्लेष्मस्नेहविकारहा।
मेदःशोथोदरार्शोघ्नो वल्यः पक्वरसोमतः ॥ १० ॥

पकाकर ईखके रससे बनाया हुआ शीधु मद्य पित्तवातका हरनेवाला श्लेष्मा और स्नेहके विकारका हरनेवाला मेद सूजन उदररोग बवासीरका दूर करनेवाला बलकारक रसके पाकमें होता है ॥ १० ॥

उष्णेन मधुसंयुक्तं वमनेष्ववचारितम् ।
अपाकादनवस्थानान्नविरुध्येत पूर्ववत् ॥ २२ ॥
इत्यैक्षवादिवर्गः ।

उष्ण मधुके साथ वमनमें औषधी देनी अपाक और अनवस्थामें पूर्ववत् विरोध नहीं होता ॥ २२ ॥
इत्यैक्षवादिवर्गः ।

सर्व्वं पित्तकरं मद्यमम्लं दीपनपाचनम् ।
भेदनं कफवातघ्नं हृद्यं वास्तिविशोधनम् ॥
पाके लघुविदाह्युष्णं तीक्ष्णमिन्द्रियबोधनम् ।
विकाशिसृष्टविण्मूत्रं निद्राभावप्रसक्तिनुत् ॥ १ ॥

सब प्रकारके मद्य पित्त करने वाले अम्ल दीपन पाचन भेदन कफ वातके दूर करते, हृदयको हितकारी और वस्ति के शुद्ध करने वाले हैं पाकमें लघु विदाही गरम वीर्य वर्द्धक इन्द्रिय शोधक चित्त खिलाने वाले, विष्टा मूत्रके निर्माण करने वाले, निद्रा का अभाव और उसमें अत्यन्त प्रसक्तिको दूर करने वाले हैं ॥ १ ॥

स्तन्यरक्तक्षयहिता सुरादीपन बृंहणी ।
कार्श्यार्शोग्रहणीदोषमूत्राघातानिलापहा ॥ २ ॥

सुरा स्तनोंको हितकारक, रक्त क्षयमें हितकारक, दीपन और वाजी करण है, कृशता बवासीर ग्रहणी दोष मूत्रघात और वातको दूर करने वाली है ॥ २ ॥

कासार्शोग्रहणीदोषप्रतिश्यायविनाशिनी ।
श्वेता मूत्रकफस्तन्यरक्तमांसकरीसुरा ॥ ३ ॥

तथा खांसी बवासीर संग्रहणी पीनसको दूर करती है श्वेता सुरा मूत्र कफ स्तन्य रक्तमांसकी करने वाली है ॥ ३ ॥

छर्द्यरोचकहृत्कुक्षितोदशूलप्रमर्दिनी ।
प्रसन्नागुल्मवातार्शोविबन्धानाहनाशिनी ॥ ४ ॥

छर्दि अरुचि नाशक, कुक्षिका शूल दूर करती है प्रसन्न सुरा गुल्मवात अर्श विवन्ध अनाह रोगको दूर करती है ॥ ४ ॥

पित्तलाल्पकफारूक्षा यवैर्वातप्रकोपनी ।
विष्टम्भिनी सुरागुर्वी श्लेष्मलातु मधूलिका ॥ ५ ॥

यवकी सुरा पित्तकारक थोडा कफकरती है रूखी और वात की कोपकरनेवाली है विष्टम्भकारक सुरा भारी है गोधूमकी सुरा श्लेष्मकारक है ॥ ५ ॥

रूक्षा नातिकफावृष्या पाचनी वल्कलीसुरा ॥ ६ ॥

वल्कली (दालचिनीकी) सुरा रूखी कुछ कफकारक वाजी कर और पाचक है ॥ ६ ॥

कोहोलोभेद्यवृष्यश्च त्रिदोषोवदनप्रियः ॥ ७ ॥

कोहेल नाम मद्य भेदक वाजीकर त्रिदोषकारक और मुखप्रिय है ॥ ७ ॥

ग्राह्युष्णोजगलः प्रोक्तोरूक्षस्तृट्कफशोथनुत् ॥ ८ ॥

जगल मदिरा ग्राही गरम रूखी तृषा और शोफ रोगको दूर करती है ॥ ८ ॥

हृद्यः प्रवाहिकाटोपदुर्नामानिलशोथनुत ।
वक्कसोऽहतसारत्वाद्विष्टम्भी वातकोपनः ॥ ९ ॥

वक्कस मद्य हृदयको हितकारक प्रवाहिका आटोप दुर्नामवात और शोथकी दूरकरने वालीहै और सार रहित होनेसे विष्टम्भी तथा वातका कोप करनेवाली है ॥ ९ ॥

शीधुः पित्तानिलहरः श्लेष्मस्नेहविकारहा ।
मेदःशोथोदरार्शोघ्नो वल्यः पक्वरसोमतः ॥ १० ॥

पकाकर ईखके रससे बनाया हुआ शीधु मद्य पित्तवातका हरनेवाला श्लेष्मा और स्नेहके विकारका हरनेवाला मेद सूजन उदररोग बवासीरका दूर करनेवाला बलकारक रसके पाकमें होता है ॥ १० ॥

जरणीयोविबन्धघ्नः स्वरावर्णविशोधनः।
लेखनः शीतरसिकोहितः शोफोदरार्शसाम् ॥ ११ ॥

ईखके रसको विनापकाये बनी हुई शीघ्र शीधू जीर्ण होती है विबन्ध दूर करती स्वरवर्णका शोधन करती लेखन शोक उदर और अर्श रोगमें हितकारकहै ॥ ११ ॥

गौडः शीधुः कषायः स्यात् स्वादुःपाचनदीपनः॥ १२

गुडकी बनी हुई शीधूकसेली स्वादु पाचन और दीपनहै१२॥

शार्करो मधुरोहृद्योदीपनोवस्तिशोधनः॥
वातघ्नो मधुरःपाके रुच्यइन्द्रियबोधनः॥ १३ ॥

शर्कराकी बनाई शीधू मधुर हृदयको हितकारक, दीपन वस्तिके शोधनेवालीहै वात नाशक पाकमें मधुर रुचिकारक इन्द्रियोंको बोधन करनेवालीहै ॥ १३ ॥

शीधुर्मधूकपुष्पोत्थो विदाह्यग्निबलप्रदः।
रुक्षः कषायः कफहा वातपित्तप्रकोपनः॥ १४ ॥

महुएके फूलसे बनी हुई शीध विदाही अग्निकी बढानेवाली तथा बलकारकहै, रुखी कसेली कफनाशक वात पित्तकी कोप करनेवालीहै ॥ १४ ॥

जाम्बवो बद्धनिष्यन्दस्तुवरोवातकोपनः॥ १५ ॥

जाम्बू फलके रससे गुड मिलाकर बनाई हुई शीधू मूत्र बंध कारक कसेली वातका कोप करनेवालीहै ॥ १५ ॥

तीक्ष्णः सुरासवो हृद्यो मूत्रलः कफवातनुत्।
मुखप्रियः स्थिरमदो विज्ञेयोऽनिलनाशनः॥ १६ ॥

औषधी मिलाकर बनाया हुआ सुरा सव हृदयको हित कारक मूत्रकारक कफ वातका नाश करनेवालाहै मुखप्रिय स्थिर मदवाला वात नाशक जानना ॥ १६ ॥

तीक्ष्णः कषायोमदकृद्दुर्नामकफगुल्मनुत्।
क्रिमिमेदोऽनिलहरोमैरेयो मधुरो गुरुः॥ १७ ॥

मैरेय मद्य तीक्ष्ण कसैला मदकारक बवासीर कफ और गुल्म

का दूर करने वाला है कृमि मेद वात हरनेवाला मधुर और भारी है ॥ १७ ॥

निर्दिशेद्द्रव्यतश्चान्यान्कन्दमूलफलासवान् ॥ १८ ॥

इसी प्रकार दूसरे द्रव्य कन्दमूलादिसे बने आसवोंके गुण जानने ॥ १८ ॥

नवं मद्यमभिष्यन्दि दोषकृज्जीर्णमन्यथा ॥ १९ ॥

नई मद्य अभिष्यन्दी दोष कारक है, पुरानी इसके विपरीत पुरानी सुरा श्रेष्ठ है ॥ १९ ॥

अरिष्टो द्रव्यसंयोगसंस्कारादधिकोगुणैः ॥ २० ॥

अरिष्ट ईख विकार अभया (हरड) चीता दन्ती पीपली आदि बहुतसी औषधियोंके योगसे क्वाथ बना हुआ) गुणोंमें अधिक होता है ॥ २० ॥

बहुदोषहरश्चैव रोगाणां शमनश्चसः।
दीपनः कफवातघ्नः सरः पित्ताविरोधनः ॥
शूलाध्मानोदरप्लीहज्वराजीर्णार्शसांहितः ॥ २१ ॥

यह बहुत दोषोंका हरनेवाला रोगोंका शान्त करने वाला दीपन कफ वातका नाशक सारक और पित्त विरोधीहै, शूल अफारा उदर रोग प्लीहा ज्वर अजीर्ण बवासीरको दूर करताहै२१

अरिष्टासवशीधूनां गुणान् कर्माणिचादिशेत्।
बुद्धायथास्वं संस्कारमवेक्ष्य कुशलोभिषक् ॥ २२ ॥

चतुर वैद्यको उचित है कि अरिष्ट आसव और शीधूओंके गुण कर्मोंको जानकर बुद्धिसे उनका संस्कार विचार प्रयोग करे २२॥

सान्द्रं विदाहि दुर्गंधिविरसंक्रिमिलं गुरु।
अहृद्यं तरुणं तीक्ष्णमुष्णं दुर्भाजनस्थितम् ॥
अल्पौषधं पर्युषितं मत्यच्छं पिच्छिलञ्चयत्।
तद्वर्ज्यं सर्वथा मद्यं किंचिच्छेषञ्च यद्भवेत् ॥ २३ ॥

जो मधु सघन विदाही दुर्गंधिकारक विरस कृमियुक्त, भारी, हृदयको अहित कारक मन्दउत्पन्न तीक्ष्ण उष्ण बुरे पात्रमें स्थित

थोड़ी औषधी वाला बासी अति स्वच्छ पिच्छिल पीछेका पात्रमें बचा हुआ यह मद्य सर्वथा त्यागने योग्य है ॥ २३ ॥

चिरस्थितं जातरसं दीपनं कफवातजित् ।
रुच्यं प्रसन्नं सुरभि मद्यं सेव्यं मदावहम् ॥ २४ ॥

जो बहुत दिनका रक्खा हुआ रसहीनहै वह कफ और वातका जीतनेवालाहै प्रसन्न मद्य रुचिकारकहै सुगन्धि युक्त मदकारक, मद्य सेवन करना चाहिये ॥ २४ ॥

शुक्तं बलाशपित्तासृक्क्लेदि वातानुलोमनम् ।
भृशोष्णतीक्ष्णरूक्षाम्लं हृद्यं रुचिकरं सरम् ।
दीपनं शिशिरं स्पर्शे पाण्डुतृट्क्रिमिनाशनम् ॥ २५ ॥

जो मस्तु आदि पदार्थ पवित्र वर्तनमें गुड़कांजी मधु तीन दिनतक बंदकर धान्य राशिमें धर दिये जातेहैं वह शुक्त कहलाताहै, यह बलकारक पित्त रुधिरक्लेदका करनेवाला, वातका अनुलोम करनेवाला अत्यन्त उष्ण तीक्ष्ण रूखा अम्ल हृदयको हितकारक रुचिकर और सारकहै, दीपन स्पर्शमें ठंडा पाण्डु रोग तृष्णा और कृमिका दूर करनेवालाहै ॥ २५ ॥

तद्वत्तदासुतं सर्व्वं रोचनन्तु विशेषतः ॥ २६ ॥

इसी प्रकारके गुणवाले शुक्तमें आर्द्र करीरादि जलनेसे होते हैं, वे विशेष कर रुचि कारक होते हैं ॥ २६ ॥

गौडानि रसशुक्तानि मधुशुक्तानियानि च ।
यथा पूर्वं गुरुतराण्यभिष्यन्दकराणि च २७ ॥

जो गुड़से बने हुए शुक्तहैं और जो मधुके योगसे बनेहैं यह यथा पूर्व एक दूसरेसे भारी और अभिष्यन्द कारकहैं ॥ २७ ॥

काञ्जिकं भेदितीक्ष्णोष्णंपित्तकृत्स्पर्शशीतलम् ।
श्रमक्लमहरं रुच्यं दीपनंवस्तिशूलनुत् ॥
शस्तमास्थापनेहृद्यंलघुवातकफापहम् ।
गण्डूषधारणाद्वक्त्रमलदौर्गन्ध्यशोषजित् ॥ २८ ॥

कांजी भेदनहै तीक्ष्णगरमहै पित्तकारक स्पर्शमें शीतलहै, भ्रमक्लमकी हरनेवाली रुचिकारक दीपन वस्तीके शुलको दूर करने वालीहै, स्थापनमें श्रेष्ठ हृदयको हितकारक लघुवात और कफकी हरने वालीहै, और मुखमें कुल्ला धारण करनेवाला मुखका मैल दुर्गन्धि और शोष रोगका जीतनेवालाहै ॥ २८ ॥

एभिरेवगुणैर्युक्ते सौवीरकतुषोदके ।
क्रिमिहृद्रोगगुल्मार्शःपाण्डुरोगनिवर्हणे ॥ २९ ॥

इसी प्रकारके गुणोंसे युक्त कांजी और तुष (धान्यभूसी) काजलहै, यह कृमि हृद्रोग गुल्म अर्श पाण्डुरोग दूर करताहै २९

मूत्रंगोजाविमहिष गजाश्वोष्ट्र खरोद्भवम् ।
पित्तलं रूक्षतीक्ष्णोष्णंलवणानुरसंकटु ॥
क्रिमिशोफोदरानाह शूलपाण्डुकफानिलान् ।
गुल्मारुचिविषश्वित्रकुष्ठार्शांसिजयेल्लघु ॥
दीपनं पाचनं भेदितेषु गोमूत्र मुत्तमम् ॥ ३० ॥

गौबकरी भेड़ भैंसा हाथी घोडा ऊंट गधा इन जन्तु ओंका मूत्र पित्तकारक रूखा तीक्ष्ण गरम रसमें खारी कटु है कृमि रोग सूजन उदर रोग अफारा अनाह शूल पाण्डुरोग कफ तथा वात रोग अफारा अनाह शूल पाण्डु रोग कफ तथा वात रोग जीतनेवाले और लघु हैं, दीपन पाचन और भेदनमें गोमूत्र श्रेष्ठ है ॥ ३० ॥

गोमूत्रं कटुतीक्ष्णोष्णं सक्षारत्वान्नवातलम् ।
लघ्वग्निदीपनंमेध्यं पित्तलं कफवातनुत् ॥
गुल्मशूलोदरानाह विरेकास्थ पनादिषु ।
मूत्रप्रयोगसाध्येषु गव्यं मूत्रं प्रयोजयेत् ॥ ३१ ॥

गोमूत्र कटु तीक्ष्ण गरम है, क्षार युक्त होनेसे वात कारक नहीं है, लघु अग्निका दीपन करने वाला बुद्धिको बढाने वाला पित्त कारक कफवात नाशक है, गुल्म शूल उदर अनाह विरेचनके स्थापनादिमें तथा मूत्र प्रयोग साध्यादिमें गौका मूत्र हित कारी है ॥ ३१ ॥

दुर्नामोदरशूलेषु कुष्ठमेहाविशुद्धिषु ।
आनाहशोफगुल्मेषु पाण्डु, रोगे च माहिषम् ॥ ३२ ॥

दुर्नाम (बवासीर) उदर रोग शूल कुष्ठ प्रमेहके दूर करनेमें तथा अनाह शोफ रोग गुल्म और पाण्डु रोगमें भैंसेका मूत्र हित कारक है ॥ ३२ ॥

कटुतिक्तान्वितं छाग मीषन्मारुतकोपनम् ॥ ३३ ॥

छागका मूत्र कटु तीखा और कुछ वातका कोप करने वाला है ॥ ३३ ॥

सक्षारतिक्तकटुकमुष्णं वातघ्नमाविकम् ॥ ३४ ॥

भेडका मूत्र तीखा कटु गरम और वात नाशक है ॥ ३४ ॥

आश्वं कफहरं मूत्रं वातचेतोविकारनुत् ॥ ३५ ॥

घोडेका मूत्र कफ हरने वाला वात चित्तके विकार उन्माद अपस्मारको दूर करता है ॥ ३५ ॥

तीक्ष्णं क्षारे किलासेच नागमूत्रं प्रयोजयेत् ॥ ३६ ॥

तीक्ष्ण क्षार और किलासमें हाथीका मूत्र प्रयोग करे ॥३६॥

दीपनं गार्दभं मूत्रं गरचेतोविकारनुत् ॥ ३७ ॥

गधेका मूत्र तीक्ष्ण है विष और चित्तके विकारको दूर करता है ॥ ३७ ॥

अर्शोघ्नं कारभं मूत्रं मानुषंतु विषापहम् ॥ ३८ ॥
इति मद्यादिवर्गः।

ऊंटका मूत्र बवासीर नाशक है और मनुष्यका मूत्र विष हारकहै ॥ ३८ ॥

इति मद्यादिवर्गः।

विधिनाकृतआहारः प्रीणनोधातुपोषकः ।
स्मृत्यायुः पुष्टिवर्णोजःसत्वोत्साहविवर्द्धनः ॥ १ ॥

अथ भोजन योग धान्यादिका संस्कार वशसे गुण कथन करते हैं अर्थात कृतान्य वर्गका गुण कथन करतेहैं विधि पूर्वक

बनाया हुआ भोजन प्राणियोंकी धातुओंका पुष्ट करनेवाला स्मृति आयु पुष्टि वर्णबल सत्व और उत्साहका बढानेवालाहै १

ओदनः क्षालितः स्विन्नःप्रस्तुतोविषदोलघुः।
भृष्टतण्डुलजोत्यर्थ मन्यथास्याद्गुरुश्चसः॥ २॥

धोये हुए चावलोंका भात मृदु हुआ पसाया विष दायक और लघुहै और भुने चावलोंका उससेभी अधिक लघु है, और विना धोये हुओंका भारी है॥ २॥

मण्डस्तु भूरिदोषघ्नोदीपनोऽनिलनाशनः।
ज्वरहापरमोबल्यःस्वेदनोमार्गशोधनः॥ ३॥

मण्ड (चावलोंका मण्ड चौदह गुणे जलमें होताहै) बहुत दोषोंका नाश करनेवाला, दीपन तथा वात नाशकहै ज्वर नाशक परम बल दायक स्वेदन और इन्द्रियोंके मार्गका शोधन करनेवालाहै॥ ३॥

लाजमण्डोविशुद्धानांपथ्यः पाचनदीपनः।
वातानुलोमनोहृद्यःपिप्पलीनागरान्विताः॥ ४॥

खीलोंका मण्ड विशुद्ध पथ्य पाचन और दीपनहै, वातका अनु लोम करने वाला हृदयको हित कारक पीपल और सोंठ डालनेसे होता है॥ ४॥

पेया स्वेदाग्निजननी वातवर्चोऽनुलोमनी।
क्षुत् तृष्णा ग्लानिदौर्बल्य कुक्षिरोगज्वरापहा॥ ५॥

पेया और विलेपी दो प्रकार कीयवागू होती है, पेया स्वेद, और अग्निको उत्पन्न करने वाली, वात और मलको अनु लोम करने वाली, क्षुधा तृषाग्लानि दुर्बलता कुक्षिरोग और ज्वरकी नाशकरने वाली है॥ ५॥

विलेपीग्राहिणीहृद्यातृष्णाघ्नीदीपनीहिता।
व्रणाक्षिरोगसंशुद्ध दुर्बलस्नेहपायिनाम्॥ ६॥

विलेपी (चौगुने जलमेसिद्ध अन्न) ग्राही हृदयको हित कारक

तृष्णा नाशक दीपनी हित कारक है, व्रण अक्षिरोग नाशक है, शुद्ध दुर्बल स्नेह पानवालों को हित कारक है ॥ ६ ॥

यवागूर्ज्वरतृष्णाघ्नीलघ्वीवस्तिविशोधनी ॥ ७ ॥

यवागू ज्वर तृष्णाकी नाशकरने वाली लघुवस्ति शोधक है ॥ ७ ॥

शिक्थकैरहितोमण्डः पेयाशिक्थसमन्विता ।
यवागूर्बहुशिक्थस्याद्विलेपीविरलद्रवा ॥ ८ ॥

सिक्थ से रहित मण्ड और पेया, सिक्थके सहित होती है, यवागू अधिक सिक्थ वाली और विलेपी किंचित द्रवयुक्त होती है अर्थात द्रव्यसे चौगुना पानी डालकर औटावे जबल पसीके समान गाढी और लिपटने वाली हो जाय उसे विलेपी कहते हैं । द्रव्यसे चौगुने पानीमें डालकर पतलीपेजके समान कुछल्हस दारपर्यन्त औटी हुई कोपेया कहते हैं पेयाकी अपेक्षा कुछगाढे कोयूष कहते हैं । चारपल औषधीले कुछ थोडीसी कूटकर उसमें ६४ पलपानी डालकर औटावे आधार है तब उतार ले उसे छान चावल आदि द्रव्यडाल औटावे गाढी होनेपर उतार लेइसे यवागू कहते हैं ॥ ८ ॥

मण्डपेयाविलेपीनामोदनस्य च लाघवम् ।
यथापूर्वंशिरस्तत्र मण्डो वातानु लोमनः ॥ ९ ॥

ओदनकी अपेक्षा विलेपी विलेपीकी अपेक्षा पेया पेयाकी अपेक्षा मण्ड अधिक लघुहै उसमें मण्ड वातका अनुलोमन करनेवालाहै ॥ ९ ॥

पायसः कफकृद्बल्योविष्टम्भी मेदुरोगुरुः ॥ १० ॥

पायस खीर कफका करनेवाला बलकारक अतिस्निग्ध और भारी है तथा विष्टम्भीहै ॥ १० ॥

कृशरापित्तकफदाबल्या मारुतनाशिनी ॥ ११ ॥

कृशरा (खिचडी) पित्त कफकी करनेवाली बलकारक वात नाशकहै ॥ ११ ॥

अन्नं मांसादिभिः सार्द्धं सिद्धं स्याद्गुरुबृंहणम् ॥१२॥
जो अन्न मांसादिके संगसिद्ध कियाहै वह भारी और बाजीकर होताहै ॥ १२ ॥

रसौदनोज्वरहरोबल्यो ग्राह्यनिलापहः ॥ १३ ॥
रस ओदन ज्वरहारक बलकारक ग्राही और वात नाशकहै१३

घोलभक्तं श्रमार्शोघ्नं रुच्यं तर्पणदीपनम् ॥ १४ ॥
घोल भक्त (मट्ठेमे मिला अन्न) श्रम बवासीर नाशक रुचिकारक तृप्ति कारक दीपनहै ॥ १४ ॥

सद्योऽन्नं वारिणाधौतं शीघ्रपाकं बलप्रदम् ।
शीतलं मधुरं रूक्षं श्रमघ्नं तर्पणं परम् ॥ १५ ॥
तत्कालजलसे धोया हुआ अन्न शीघ्र पकनेवालाहै बल देनेवालाहै,वह शीतल मधुर रूखा श्रमनाशक परम तृप्ति कारकहै१५

पानीयभक्तं व्युषितं मेदःस्वेदकफप्रदम् ।
त्रिदोषकोपनं रूक्षं मलकृन्मूत्रलंपरम ॥ १६ ॥
पांच गुने पानीमे पकाया भात मेदस्वेद और कफका करनेवालाहै, त्रिदोषका कोप करनेवाला, रूखामल कारक, और परम मूत्र कारकहै ॥ १६ ॥

सुखिन्नोनिस्तुषो भृष्टईषत् सूपोलघुर्हितः॥ १७ ॥
अच्छी प्रकार भिजोकरा छुलके उतारी हुई कुछ भूनीहुई पकहुई सूप (दाल) हलकी और हितकारक है ॥ १७ ॥

स्विन्नं निष्पीडितं शाकं स्नेहसंस्कारितं हितम ।
अस्विन्नं स्नेहरहितमपीडितमतो न्यथा ॥ १८ ॥
इसी प्रकार जोश दिया हुआ पीडित किया शाक घृतादिके संस्कारसे हितकारक होताहै और जो जोशन दिया गयाहै स्नेह रहित तथा पीडित नहीं किया गया वह इसके विपरीत गुण वाला है ॥ १८ ॥

स्विन्नं मांसं कटुस्नेहगोरसाम्लफलैःसह ।
बृंहणं रोचनं बल्यं खालिष्कस्तु सदागुरुः ॥ १९ ॥

जोश किया मांस कटु स्नेह युक्त गोरस (घृतादि) तथा आम्ल फलके साथ सेवन किया हुआ वाजीकर रुचि कारक बलकारक है और खालिप्क (सूखे मांसका भेद) सदा भारीहै१९

तदेवगोरसादानं सुरभिद्रव्यसंस्कृतम् ।
विद्यात्पित्तकफोत्क्लेदि बलमांसाग्निवर्द्धनम् ॥ २० ॥

वही गोरसादिसे युक्त सुगंधिके द्रव्योंसे संस्कार किया हुआ पित्त और कफका उत्क्लेद करने वाला बल मांस और अग्निका बढाने वाला है ॥ २० ॥

परिशुष्कं स्थिरं स्निग्धं हर्षणं प्रीणनं गुरु ।
रोचनं बलमेधाग्निमांसौजःशुक्रवर्द्धनम ॥ २१ ॥

और सूखा मांस (बहुतसे घृतमें भूनकर वारंवार उस पर गरम जल छिडककर जीरा आदि मसाला मिले मांसको शुष्क कहते हैं) यह गुणोंमें स्थिर स्निग्ध हर्षण और प्रसन्न करने वाला रुचिकारक बल बुद्धि अग्नि मांस ओज वीर्यका बढाने वाला है ॥ २१ ॥

तदेवोल्लुप्तपिष्टत्वादुल्लु प्तमिति भाषितम् ।
परिशुष्कगुणैर्युक्तं ज्ञेयं पथ्यतमं गुरु ॥ २२ ॥

वही लुप्तपिष्ट होनेसे लुप्त पिष्ट नाम वाला कहाताहै वह सूखा गुणोंसे युक्त अधिकतर पथ्य कारक और भारी है ॥ २२ ॥

तदेवशूलिकाप्रोतमङ्गारे परिपाचितम् ।
ज्ञेयं गुरुतरं किञ्चित् प्रदिग्धं गुरुपाकतः ॥ २३ ॥

वही शूलिकामें पोहकर अंगारेके ऊपर पकानेसे कुछ दग्ध होकर भारी और पाकमें गुरु होताहै ॥ २३ ॥

मांसंयत्तैलसिद्धं तद्वीर्य्योष्णं पित्तकृद् गुरु ।
घृतसिद्धन्तुरुच्यग्निदृष्टिदंपित्तनुल्लघु ॥ २४ ॥

जो मांस तेलमें सिद्ध कियाहै, वह वीर्यमें उष्ण पित्तकारक और भारीहै और घृतमें सिद्ध किया रुचि अग्निकारक दृष्टि देने वाला पित्तनाशक लघु है ॥ २४ ॥

वेशवारोगुरुः स्निग्धोबलोपचयवर्द्धनः ॥ २५ ॥

वेसवार (मांसरस) भारी चिकना बलकारक है मांसको हड्डीसे अलगकर भली प्रकार पीसकर गुड़ और घीद्वारा स्निग्ध करिकै पीपलकाली मिरच मिलाले इसको वेशवार कहतेहैं २५

रसोज्वरक्षयहरः स्मृत्योजः स्वरवर्द्धनः।

बृंहणः प्रीणनोवृष्यश्चक्षुष्योव्रणिनां हितः ॥ २६ ॥

मांसरस ज्वर क्षयका हरनेवाला स्मृति ओज स्वरका बढाने वाला वाजीकर प्रसन्नता कारक वीर्यकारक नेत्रोंको हितकारी व्रणोंमें हितकारक है ॥ २६ ॥

स दाडिमयुतोवृष्यः संस्कृतोदोषनाशनः॥ २७ ॥

और दाडिमी से युक्त वही बलकारक है और संस्कार करने से दोषनाशक है ॥ २७ ॥

प्रीणनः सर्व्वधातूनां विशेषान्मुखशोषिणाम्।

क्षुत्तृष्णापहरःश्रेष्ठः सोरावः स्वादुशीतलः ॥ २८ ॥

रसके ऊपर का स्वच्छ भाग सब धातु ओंका प्रसन्न करने वाला विशेषकर मुख शोषमें हितकारक है, क्षुधा तृष्णाका हरने वाला स्वादु शीतल है ॥ २८ ॥

मांसंयदुद्धृतरसं न तत्पुष्टिबलावहम्।

विष्टम्भिदुर्जरं रूक्षं नीरसं मारुतावहम् ॥ २९ ॥

जिस मांससे रस निकल गया है वह पुष्ट और बलकारक नहीं होता है वह विष्टम्भि देरमें पचनेवाला रूखा निरस वात का करनेवाला है ॥ २९ ॥

दग्धमत्स्योगुरुर्वृष्यो बृंहणः प्राणवर्द्धनः।

क्षीणशुक्राश्रयेकेचित् भग्नजर्ज्जरिताश्रये ॥

नित्यं स्त्रीसेविनश्चैव क्षीणरेतसएव च।

दग्धमत्स्योहितस्तेषां स तैललवणान्वितः ॥ ३० ॥

जला हुआ मत्स्य भारी वीर्य वर्द्धक है मद जनक और प्राणका बढाने वाला है जो कोई क्षीण वीर्य भग्न और जर्जरित

हैं वा नित्य स्त्री प्रसंग करने वाले क्षीण वीर्य हैं उनके निमित्त तैल लवण युक्त दग्ध मत्स्य हितकारक है ॥ ३० ॥

तस्माद्धीनगुणः किञ्चिद् भृष्टमत्स्य उदाहृतः ॥ ३१ ॥

भुना हुआ मत्स्य कुछ उससे हीन गुणवाला है ॥ ३१ ॥

यथाप्रकृतिनिर्देश्यो व्यञ्जनेषु गुणान्वयः ॥ ३२ ॥

और भी व्यञ्जनो में प्रकृतिके अनुसार गुण जानना ॥ ३२ ॥

कफघ्नोदीपनोहृद्यः शुद्धानां व्रणिनामपि ।
ज्ञेयःपथ्यतमश्चापि मुद्गयूपः कृताकृतः ॥ ३३ ॥

मूंगका यूष कफ नाशक दीपन हृदयको हितकारक शुद्ध हुए व्रण वालोंको हितकारक है लवणसे युक्त होवा नहीं ॥ ३३ ॥

सतुदाडिममृद्वीकायुक्तः स्याद्रागपाडवः ।
रुचिष्णुर्लघुपाकश्च दोषाणाञ्चाविरोधकृत् ॥ ३४ ॥

वही दाडमी दाखसे युक्त होकर राग पाडव कहलाताहै यह रुचिकारक पाकमें लघु दोषोंका अविरोधी है ॥ ३४ ॥

मसूरमुद्गगोधूम कुलत्थलवणैःकृतः ।
कफपित्ताविरोधीस्यात् वातव्याधौ च शस्यते ॥ ३५ ॥

मसूर मूंग गेहूं कुलथी लवणसे सिद्ध किया कफ पित्तका विरोधी होताहै और वात व्याधिमें अच्छा कहाहै ॥ ३५ ॥

मृद्वीकादाडिमैर्युक्तःसचाप्युक्तोऽनिलार्दिते ।
रोचनोदीपनोहृद्यो लघुपाक्युपदिश्यते ॥ ३६ ॥

दाडिमीके संग मुनका वातव्याधिमें हितकारकहै यह रुचिकारक दीपन हृदयको हितकारक और पाकमें लघुहै ॥ ३६ ॥

पटोलनिम्बयूषौतु कफमेदोविशोषिणौ ।
पित्तघ्नौदीपनौहृद्यौ क्रिमिकुष्ठज्वरापहौ ॥ ३७ ॥

पटोल और नीमका यूष कफ और मेदका शोषनेवालाहै पित्तनाशक दीपन हृदयको हितकारक कृमि और कुष्ठका नाशकहै ॥ ३७ ॥

हन्तिमूलकयूपस्तु कफमेदोगलामयान्।
श्वासकासप्रतिश्याय प्रसेकारोचकज्वरान् ॥ ३८ ॥
मूलीका यूप कफ मेद गलेके रोग स्वासकास पीनस प्रसेक अरुचि ज्वरको दूर करताहै ॥ ३८ ॥

मुद्गामलकयूपस्तु ग्राहीपित्तकफेहितः।
यवकोलकुलत्थानां यूपः कण्ठ्योऽनिलापहः ॥ ३९ ॥
मूंग और आमलेका यूप ग्राही पित्त और कफमें हितकारकहै, जो कोल (कंकोलक) कुलथीका यूप कंठमें हितकारक और वात नाशकहै ॥ ३९ ॥

सर्व्वधान्यकृतस्तद्वद् बृंहणः प्राणवर्द्धनः ॥ ४० ॥
सम्पूर्ण धानोका किया यूप इसीप्रकार बलकारक वाजीकर और प्राणवर्द्धनहै ॥ ४० ॥

खडकाम्बलिकौहृद्यो छर्दिवातकफेहितौ ॥ ४१ ॥
खड दो प्रकारका होताहै एकतक्र और समी धान्यके सहित, दूसरा मट्ठा और शाक मिलाया हुआ, पहला रूप धान्य स्नेह अम्ली पदार्थ युक्त होताहै, दूसरा कैप चांगेरी (अम्बिलोना) काली मिर्च जीरा चीता डालकर पक किया जाताहै और दही अम्ल लवण स्नेह तिल उरद संयुक्त होताहै यह खडक अंब लिक नामवाले दोनो यूप हृदयको हितकारक छर्दिवात और कफमें हितकारकहैं ॥ ४१ ॥

बल्यःकफानिलौहन्तिदाडिमाम्लोऽग्निदीपनः ॥ ४२ ॥
दाडिमी और अम्ल पदार्थोंके साथ किया यूप बलकारक, कफ वातका हरने वाला, अग्नि दीपन करता है ॥ ४२ ॥

धान्याम्लोदीपनोहृद्यः पित्तकृद्वातनाशनः ॥ ४३ ॥
धान्य और अम्ल द्रव्यका यूप दीपन हृदयको हित कारक पित्तकारक वात नाशकहै ॥ ४३ ॥

दध्यम्लःश्लेष्मलोबल्यः स्निग्धोवातहरोगुरुः ॥ ४४ ॥
दही अम्ल पदार्थका यूप श्लेष्मा बलकारक चिकना वात हर और भारीहै ॥ ४४ ॥

तक्राम्लः पित्तकृद्बल्योविपरक्तप्रदूषणः ॥ ४५ ॥

तक्र अम्ल यूष पित्त करनेवाला, बलकारक पित्त और रक्तका दूषित करने वालाहै ॥ ४५ ॥

अथगोरसधान्याम्लफलाम्लैरन्वितश्चयत् ।
यथोत्तरं लघुहितंसंस्कृतासंस्कृतंरसम् ॥ ४६ ॥

जो यूष गोरस धान्य अम्ल फल अम्ल द्रव्योंसे युक्तहै वह उत्तरोत्तर संस्कार * किया हुआ लघु और हितकारक होताहै गोरस अम्लकी अपेक्षा धान्य अम्ल युक्त रस लघु होताहै, इत्यादि यह संस्कार युक्त और संस्कार रहित जानना ॥ ४६ ॥

तिलपिण्याकविकृतिः शुष्कशाकं विरूढकम् ।
सिण्डाकी च गुरूणिस्युः कफपित्तहराणिच ॥ ४७ ॥

तिलकी पीसी खल सूखाशाक विरूढक (अंकुरित शाक) सिण्डेकी यह सब भारी और कफ पित्तके हरने वाले हैं ॥ ४७ ॥

रागषाडवयोगास्तुच्छर्दिमूर्च्छातृषापहाः ।
लघवोबृंहणावृष्या हृद्यारोचनदीपनाः ॥ ४८ ॥

सिता रुचक (काला नोन सैंधानोन अम्ल फालसा जम्बूफलके रसोंसे युक्त राजसरसों मिलाया हुआ राग होताहै और षाडव मधुर अम्ल लवण सुगन्धि द्रव्योंसे उत्पन्न हुए अनेक प्रकारकेहैं कोई कहतेहैं कि गुडके सहित आमकारस पकाकर उसमें स्नेह और सोंठ डालनेसे राग षाडव होताहै कोई मूंगके रसमें दाख और अनारकारस मिलानेको राग षाडव कहतेहैं यह छर्दिमूर्च्छा तृष्णाका हरनेवालाहै ॥ ४८ ॥

रसालाबृंहणीवृष्या स्निग्धाबल्यारुचिप्रदा ॥ ४९ ॥

रसाला (दधि संयोग पदार्थ) दालचीनी इलायची तेजपात नागकेशर जीरा गुड अदरक सोंठ पीसकर मिलानेसे रसाला

---

* लवण घृत तेल मिरचादिसे रहित असंस्कृत वा अकृत होताहै और इन पदार्थोंसे युक्तकृत वासंस्कृत होताहै ।

१ तीर भुक्तिमें प्रसिद्धहै ।

होताहै) यह वाजीकर वीर्य वर्द्धक स्निग्ध बलकारक तथा रुचि देनेवालाहै ॥ ४९ ॥

दधिस्याद्गुडसंयुक्तं स्नेहनञ्चानिलापहम् ॥ ५० ॥

गुडके साथ दही स्नेहन और वात हर होताहै ॥ ५० ॥

द्राक्षाखर्ज्जूरकोलानां गुरुविष्टम्भिपालकम् ।
परूषकाणां क्षौद्रस्य यच्चेक्षुविकृतिंप्रति ॥ ५१ ॥

दाख खजूर कोल (काली मिर्च) का यूष भारी विष्टम्भिहै, फालसे और शहतकी, तथा जो ईखके रसकी विकृतिहै, यह पालक पर्यन्त जो द्रव्यहै ॥ ५१ ॥

तेषां कट्वम्लसंयोगात् पालकानां पृथक् पृथक् ।
द्रव्यंमानञ्चविज्ञाय गुणकर्माणि निर्दिशेत् ॥ ५२ ॥

इनका कटु अम्लके संयोगसे द्रव्यमान पृथक् पृथक् जानकर गुणकर्मकहे ॥ ५२ ॥

दुग्धाम्रं शीतलं स्वादु वृष्यं वर्णकरं गुरु ।
वातपित्तहरं रूच्यं बृंहणंबलवर्द्धनम् ॥ ५३ ॥

दुध और आम शीतल स्वादु बल वीर्य करने वालाहै, वर्ण कारक और गुरुहै वात पित्तहर रुचिकारक वाजीकर बल वर्द्धक है ॥ ५३ ॥

सक्तवः सर्पिषाभ्यक्ताः शीतोदकपरिप्लुताः ।
नातिद्रवा नातिसान्द्रामन्थ इत्यभिधीयते ॥ ५४ ॥

शीतल जलसे युक्त घृत सहित सत्तु न बहुत पतले न बहुत घने मन्थ कहलाते हैं ॥ ५४ ॥

मन्थःसद्यो बलकरः पिपासाज्वरनाशनः ॥ ५५ ॥

मन्थ तत्काल बल करनेवाला, प्यास और ज्वरका नाशकहै ५५

साम्लस्नेहगुडोमूत्रकृच्छ्रोदावर्तनाशनः ।
शर्करेक्षुरसद्राक्षायुक्तः पित्तविकारनुत् ॥
द्राक्षामधुकसंयुक्तः कफरोगनिवर्हणः ।
वर्गत्रयेणोपहितो मलदोषानुलोमनः ॥ ५६ ॥

और यही मन्थ अम्ल स्नेहके सहित मूत्र कृच्छ्र और उदा वर्तका नाशकहै, तथा शर्करा इक्षुका रस और दाखसे युक्त पित्त विकार नाशकहै, तथा दाख और मधुके संग कफरोग नाशकहै इस प्रकार अम्ल शर्करा द्राक्षा तीन वर्गोंके साथ मल और दोषका अनुलोमन करनेवालाहै ॥ ९६ ॥

गुर्व्वीपिण्डी खरात्यर्थं लघ्वीसैवविपर्य्ययात् ।
सक्तूनामाशुजीर्य्येतमृदुत्वादवलेहिका ॥ ९७ ॥

इति कृतान्नवर्गः ।

सत्तूकी पिण्डी भारी है और पतले सत्तु हलके हैं सत्तुओंकी अवलेहिका (चाटने योग्य) मृदु होनेसे शीघ्रजीर्ण होजातीहै ९७

इति कृतान्नवर्गः ।

वक्ष्याम्यतःपरं भक्ष्यान्रसवीर्य्यविपाकतः ॥ १ ॥
अब रस वीर्यके विपाकसे भक्ष्य पदार्थोंको कहताहूं ॥ १ ॥

पृथुकागुरवः स्निग्धाः कफविष्टम्भकारकाः ।
बल्याः सक्षीरभावात्तु वातघ्नाभिन्नवर्चसः ॥ २ ॥
पृथुक (चौले) भारी स्निग्ध कफ और विष्टम्भ कारक बल कारकहैं और वही क्षीरके भावसे वात नाशक हैं ॥ २ ॥

लाजाश्छर्द्यतिसारघ्नाः स्नेहमेदकफच्छिदः ॥ ३ ॥
खीलैं छर्दि अतिसारकी दूर करनेवाली स्नेह मेद और कफकी नाश करने वाली हैं ॥ ३ ॥

धानोल्वम्बास्तु लघवः कफमेदोविशोषणः ॥ ४ ॥
धानोंके होले लघु कफ मेदके सोखने वाले हैं ॥ ४ ॥

सक्तवो वातलारूक्षा बद्धवर्चस एवच ॥ ५ ॥
सत्तूवातकारक रूखे मलको बांधनेवालेहैं ॥ ५ ॥

भक्ष्याः क्षीरकृताबल्या वृष्याहृद्याः सुगन्धिनः ।
अदाहिनः पुष्टिकरा दीपनाः पित्तनाशनाः ॥ ६ ॥
दूध लपसी बलकारक वाजी कर हृदयको हितकारक

सुगन्धि करने वालीहै अदाहि पुष्टि कारक दीपन और पित्त कारकहै ॥ ६ ॥

घृतपूराः प्राणकरा हृद्याः श्लेष्मविवर्द्धनाः ।
वातपित्तहरा वृष्या गुरवो मांसशुक्रलाः ॥ ७ ॥

घृत पूर प्राणोंको बल देनेवाले हृदयको हितकारक कफके बढानेवाले हैं वात पित्त हर वाजीकर भारी मांस और वीर्यके बढानेवालेहै (घेवर) ॥ ७ ॥

गौडिकावृंहणा वृष्या गुरवश्चानिलापहाः ।
अदाहिनः पित्तसहाः शुक्रलाः कफवर्द्धनाः ॥ ८ ॥

गौडिका (गुडको आटेमें मिलाकर पकाई हुई बृंहणहै वीर्य करनेवाली है भारी तथा वात नाशक है अदाही पित्तसहने वाली वीर्यकारक कफ वर्द्धक है ॥ ८ ॥

मधुशीर्षकसंयावाः पूपायेते विशेषतः ।
गुरवोबृंहणाश्चैव मोदकास्तु सुदुर्जराः ॥ ९ ॥

मधु शीर्षक (रसभरी) संयाव * (गुझिया) पुए यह विशेष करके भारी और वाजी कर है और मोदक (लड्डू) दुर्जर है॥९॥

पट्टकः प्राणरुचिकृद्गुरुः स्वर्य्योऽनिलापहः ॥ १० ॥

षट्क (लौंग सोंठ मिरच पीपल यह वस्तु दहीमें मथकर डाले और चूर्णकर दाडिमके बीज डालनेसे बनता है) यह प्राणोंको रुचि करनेवाला भारी स्वरमें हितकारकवातका हरनेवालाहै१०

विष्यन्दः स्निग्धमधुरो वल्योवातापहो गुरुः ॥११॥

गेहूंका कसार (घी बूरा मिलाहुआ) स्निग्धमधुर वात नाशक और भारी है ॥ ११ ॥

बृंहणावातपित्तघ्ना वल्या भक्ष्यास्तु सामिताः ॥ १२ ॥

बलकारक वात पित्तनाशक वाजी कर द्रव्य गोधूम चूर्णका बना हुआ होता है ॥ १२ ॥

* संयाव गेहूके आटेको पानी और दूधके साथ माडके उसके खण्डकर घृतमें उतारे इसमें दालचीनी इलायची बडी काली मिर्चे और अदरसका चूर्ण डाले ॥

यथाकारणमासाद्यभोक्तृणां छन्दतोपिवा ।
अनेकद्रव्ययोनित्वाच्छास्त्रतस्तान्विनिर्दिशेत् ॥२७॥
इति भक्ष्यवर्गः ।

षड षडयवागू तथा राग षाडव सट्टक विचित्र पालक और भी अनेक प्रकारके यूप कटु अम्ल लवण युक्त स्वादु लेह्य पदार्थ तथा फलके उत्पन्न हुए पदार्थ वैद्योंके वाक्यसे बनाये जाते हैं वह भोजन करनेवाले यथा कारणसे वा स्वच्छन्दतासे बनातेहैं अनेक द्रव्योंको उनकी योनिके अनुसार कथन करे ॥ २७ ॥
इति भक्ष्यवर्गः ।

अथाहारविधिं वक्ष्ये विस्तरेणानुपूर्वशः ॥ १ ॥
अब विस्तार पूर्वक आहार विधि कहताहूं ॥ १ ॥
आप्तास्थितमसङ्कीर्णं शुचिकार्य्यं महानसम् ॥ २ ॥
रसोई घर श्रेष्ठ पुरुषोंसे स्थित और पवित्र होना चाहिये और बहुत संकीर्णता नहो ॥ २ ॥
तत्राप्तैः साधितं रम्यमविरुद्धमुपस्कृतम् ।
विषघ्नैरगदैर्मन्त्रैर्भिषगन्नंनिवेदयेत् ॥ ३ ॥
वहां श्रेष्ट रसोइये श्रेष्ट भोजन बनावें जो संयोगसे विरुद्ध नहो विषनाशक औषधी और मंत्रोंसे युक्तकर उस अन्नको निवेदन करें ॥ ३ ॥
घृतं कार्ष्णायसेदेयं पेयादेयातु राजते ।
फलानि सर्वं भक्ष्यांश्च प्रदद्याद्वैदलेषुतु ॥ ४ ॥
घी कृष्ण लोहके पात्रमें देना चाहिये पेया चांदीके पात्रमें फल और सब प्रकारके भोजन पत्तल पर देने चाहिये कोई दलका अर्थ वांसका पात्र करतेहैं ॥ ४ ॥
परिशुष्कप्रदिग्धानि सौवर्णेपूपकल्पयेत् ॥ ५ ॥
सूखे और प्रदिग्ध पदार्थ सुवर्णके पात्रोंमें धरे ॥ ५ ॥
प्रद्रवाणि रसांश्चैव राजतेषूपहारयेत् ॥ ६ ॥

और द्रव (पतले) रस चांदीके पात्रोंमें कल्पित करे ॥ ६ ॥

कट्टराणि खड्डांश्चैव सर्वान् शैलेषु दापयेत् ॥ ७ ॥

मट्ठे दहीके खट्टे पदार्थ पत्थरके वर्तनोंमें धरे ॥ ७ ॥

दद्यात्ताम्रमये पात्रे सुशीतं सुशृतं पयः ।
पानीयं पालकं मद्यं मृन्मयेषु प्रदापयेत् ॥ ८ ॥

औटाकर शीतल किया दूध ताम्बेके पात्रमें रखना चाहिये पानी पालक और मद्य मट्टीके पात्रमें रक्खे ॥ ८ ॥

वज्रवैडूर्यपात्रेपुरागपाडवपट्टकान् ॥ ९ ॥

वज्र (हीरे) संयुक्त पात्रोंमें रागषाडव और पट्टकोंको रक्खे९

पुरस्ताद्विमले पात्रे सूपं दद्यात्तुपाचकः ।
फलानि सर्वं भक्ष्यांश्च परिशुष्काणि यानि च ॥
तानि दक्षिणपार्श्वेतु भुञ्जानस्योपकल्पयेत् ।
प्रद्रवान् रसयूषादीन् सव्ये पार्श्वे प्रदापयेत् ॥
सर्वान् गुडविकारांश्च रागषाडवपट्टकान् ।
पुरस्तात् स्थापयेत्प्राज्ञो द्वयोरपि च मध्यतः॥ १० ॥

और उनके आगे उज्वल पात्रमें दाल भात परोसना चाहिये तथा फल और सब भक्ष्य पदार्थ शुष्क द्रव्य यह भोजन करने वालेके दक्षिण ओर स्थापन करे और गीलेरसयूषादिको बाईं ओर स्थापन करे सम्पूर्ण गुडके विकार राग षाडव सट्टक इन दोनों ओरके रक्खे पदार्थोंके आगे स्थापनकरे ॥ १० ॥

एवं विज्ञायमतिमान् भोजनस्योपकल्पनाम् ।
भोक्तारं विजने रम्ये निःसम्पातेतु भोजयेत् ॥ ११ ॥

बुद्धिमान् इस प्रकार भोजनकी कल्पनाको जानकर भोजन करने वालेको वात रहित निर्जनमें भोजन करावे ॥ ११ ॥

पूर्वं मधुरमश्नीयात् मध्येऽम्ललवणौ रसौ ।
अन्ते शेषान् रसान् वैद्योभोजनेष्ववचारयेत् ॥ १२ ॥

प्रथम मीठा पदार्थखाय मध्यमें अम्ल और लवणके पदार्थ खाय और अन्तमें दूसरे रसोंको भोजन करे ॥ १२ ॥

अन्नेन कुक्षेर्द्वावंशौ पानेनैकं प्रपूरयेत् ।
आश्रयं पवनादीनां चतुर्थमवशेषयेत् ॥ १३ ॥

कोखके दो भाग अन्नसे और एक भाग पानसे पूराकरे चौथा भाग पवनके आने जानेको खाली रक्खे ॥ १३ ॥

भुक्त्वा पादशतं गत्वा वामपार्श्वेन संविशेत् ।
शब्दान् रूपरसान् गन्धान्स्पर्शांश्चमनसःप्रियान् ।
भुक्तवानुपसेवेत तेनान्नं साधुतिष्ठति ।
भुक्तोपविशतस्तुन्दं शयानस्य वपुर्भवेत् ॥
आयुश्चंक्रममाणस्य मृत्युर्धावतिधावतः ।
ताम्बूलमुपसेवेत कर्पूराद्यधिवासितम् ॥ १४ ॥

भोजन करके सौ कदम चले और बाम कर्वटसे लेटे शब्द रूप रसगंध मनके प्रिय पदार्थ पहिले भोजन करने पर सेवन करे इस्से अन्न भली प्रकार स्थित होता है भोजन करके बैठनेसे पेट बढता है लेटनेसे शरीर पुष्टहोता है टहलनेसे आयु बढती है और भोजन कर दौड़नेसे संग मृत्यु दौडती है भोजन करने पर कर्पूरादिसे अधिवासित करताम्बूलका सेवन करे ॥ १४ ॥

ताम्बूलं क्षतपित्तास्ररूक्षोत्कुपितचक्षुषाम् ।
विषमूर्च्छामदार्त्तानामपथ्यं शोषिणामपि ॥ १५ ॥

ताम्बूल क्षत पित्त रुधिर विकार वाले नेत्र रोगी विष मूर्च्छासे व्याप्त मदसे आर्त हुए पुरुषोंको अपथ्य है ॥ १५ ॥

अन्नमादानकर्मा तु प्राणः कोष्ठं प्रकर्षति ।
तद्द्रवैर्भिन्नसंघातं स्नेहेन मृदुतां गतम् ॥
समानेनावधूतोऽग्निरुदीर्यः पवनेन तु ।
काले भुक्तं समं सम्यक् पचत्यायुर्विवृद्धये ॥ १६ ॥

अन्नके ग्रहण कर्मका करने वालाप्राण अन्नको कोष्ठमें खैंचता है वह पानी आदि द्रव पदार्थोंसे मृदुहोकर समान पवनसे निर्धूत होकर शिथिल होता हुआ अग्निद्वारा बुभुक्षाके समय आयु वृद्धिक निमित्त पचता है ॥ १६ ॥

एवं रसमलायान्न माशयस्थ मधस्थितः।
पचत्यग्निर्यथा स्थाल्या मोदनायाम्बुतण्डुलम् ॥१७॥

इस प्रकार रस और मलके निमित्त आशय में स्थितहुआ अन्न जठराग्निसे इस प्रकार पचता है जैसा बटलोईमें चावल पकते हैं ॥ १७ ॥

अन्नमिष्टं ह्युपहितमिष्टैर्गन्धादिभिः पृथक्।
देहेप्रीणातिगन्धादीन् घ्राणादीनीन्द्रियाणिच ॥ १८ ॥

इष्ट अन्न जोगन्धादि युक्त सेवन किया है वह गंधादिके सहित देहमें प्राप्त होकर गन्धादि ग्रहण करने वाली नासिकादि इन्द्रियोंको ग्रहण करता है आहारका पार्थिव भागदेहको पुष्टकर घ्राणमें प्राप्त हो उसकी गन्ध और देहकी गन्धको पुष्टकरता है इसी प्रकार जलादि पदार्थ जाने ॥ १८ ॥

भौमाप्याग्नेयवायव्याः पञ्चोष्माणः सनाभसाः।
पञ्चाहारगुणान् स्वान् स्वान् पार्थिवादीन् पचन्तिहि॥१९

पृथ्वी जल तेज वायु आकाश इनके भाग सूक्ष्म रूपसे सब द्रव्योंमें रहते हैं सो पार्थिव द्रव्योंका पाक अग्निके बिना नहीं होता इसकारण पांचो द्रव्योंके पदार्थोंमें सूक्ष्म रूपसे अग्नि रहती है इसकारण वे जठराग्निकी प्रबलतासे बलको प्राप्त हो अपने अपने पार्थिवादि पांच आहारके गुणोंको पचातेहैं द्रव्य व्यापारके वशसे गंधादि होते हैं उस्से गुणोंका पाक कहा है यदि कहोकि तेजतो स्वयं हि अग्नि है पाचकहै उसके निमित्त दूसरी अग्निकी अपेक्षा क्यों है तो उत्तर यह है कि, हम तेजमें पाचक अग्निको स्वीकार नहीं करते हैं किन्तु जैसे तेजका सुवर्णादि द्रव्य होनेपर भी उसके पाकमें अग्निकी अपेक्षा है इसी प्रकार अग्निका तेज द्रव्यमें हैं इसीप्रकार और भी जानना ॥ १९ ॥

सप्तभिर्देहधातारो धातवो द्विविधं पुनः।
यथास्वमग्निभिः पाकं यान्ति किट्टप्रसादवत् ॥ २० ॥

देहके धारण करने वाली सात धातु दो प्रकारकी हैं वे किट्ट प्रसाद (मल और सार) के समान यथायोग्य अपनेमें स्थित

अग्नि द्वारा पाक प्राप्त होती हैं, धातुओंमें जो भूताग्नि है वही उनमें सहाय है ॥ २० ॥

रसाद्रक्तं ततो मांसं मांसान्मेदस्ततोऽस्थि च ।
अस्थ्नोमज्जा ततः शुक्रं शुक्राद्गर्भः प्रसादजः ॥ २१ ॥

इनके पाकसे क्रमसे जो होता है सो कहते हैं, रससे रक्त, रुधिर से मांस, मांससे मेद, मेदसे अस्थि, अस्थिसे मज्जा, मज्जासे वीर्य, और वीर्यके प्रसादसे गर्भ होता है, प्रसादका योग सबके साथ है, प्रसाद नाम सार भागका है, कोई गर्भ प्रसाद सम्पूर्ण पदका अर्थ ओजका करते हैं, इस अर्थमें प्रसाद शब्दका अर्थ सर्वत्र नहीं लगता है,यद्यपि रसरक्त आदिके बननेमें विद्वानोंके कई पक्ष हैं जैसाकी दूधका दही दहीका मक्खन होता है इसी प्रकार रसका रुधिर और उसका क्रमानुसार वीर्य होता है कोई कहते हैं रस पहले रक्तकोप्लावित करता है उसे मांस स्वरूपमें लाकर उसेप्लावितकर मेद करता है जैसा हारीतने कहा है रस सात दिनमे परि वर्तन करता हुआ श्वेत हरित पीत होकर फिर रक्त हो जाताहै वह यथा क्रमदिवसोंमें पित्तके कारण रक्त होजाताहै यही सुश्रुतमें लिखा है रस अपने समीपकी धातुको शीघ्र पुष्ट करताहै दूरको देरमें, इस मतमें विष्ठा मूत्र आहार मलादिका सार भाग रस कहाहै, वह व्यानद्वारा सब धातुओंको पुष्ट करताहै परन्तु " खले कपोत न्याय " से जैसे दूर स्थित वीर्यभी प्रभावसे शीघ्र आ जाताहै इसी प्रकार बलकारक रस रक्तादि धातुओंको शीघ्र प्लावितकर मेदादि कर देताहै यही पक्षसाधुहै ॥ २१ ॥

रसात् स्तन्यं तथा रक्तमसृजः कण्डराः शिराः ।
मांसाद्वसास्त्वचः षट्च मेदसःस्नायुसन्धयः ॥ २२ ॥

अब उपधातुओंका वर्णन करतेहैं रससे दूध तथा स्त्रियोंका आर्तव, रुधिरसे स्थूलनसे, शिरा (छोटीनस) होतीहै मांससे नसा और त्वचा छः, और मेदसे स्नायु सन्धियें होतीहैं सुश्रुतमें लिखाहै रस एक महीनेमें वीर्य होताहै और रज जो है वह रससे रक्तकी समान शीघ्र होताहै, मासमें नहीं, हां यह वार्ताहै कि

उसकी गर्भाशयमें प्राप्ति एक महीनेमें होतीहै विश्वामित्रने कहा है कि केशके समान बीजरक्तके वहानेवाली नाडी गर्भाशयको पूर्णकरतीहै, वह एकमासमें बीज रूप होजाताहै, वह बीज भूत रक्तही आर्तवहै * मेदसे सूक्ष्म स्नायुका पोषण होताहै, चरकमें कण्डराशब्दस्थूल शिरावाची है, यही स्तन्य आदि सात उपधातु शरीरकी धारण करनेवाली हैं इनमें धातुओंके पुष्ट करनेकी सामर्थ्य नहींहै ॥ २२ ॥

किट्टमन्नस्यविण्मूत्रं रसस्य तु कफोसृजः।
पित्तं मांसस्य खमलामलः स्वेदस्तु मेदसः ॥ २३ ॥
स्यात्किट्टं केशलोमास्थ्नो मज्ज्ञः स्नेहोऽस्थि विट्त्वचाम्

अपनी अग्निसे पाक होकर जो रसका मल भाग है वह कफहै, वह प्रसादज होकर कफ होताहै रसोत्पत्ति मात्रसेही कफ नहीं होताहै, इसी प्रकार रक्तादि मलमें जानना, मांसके मल कर्ण नासा स्वेद मजनादि स्थानसे निकलते हैं, केशलोम अस्थिका किट्ट होताहै सुश्रुतमें अस्थिका मल नख लिखा है, मज्जा स्नेह अस्थित्वचा इनका मल विढूभपिकाहै, कोई इसका तीन प्रकारसे परिणाम कहतेहैं रसका अग्नि पाकसे मल कफ स्थूल भाग रस सूक्ष्म भाग रक्त है तैसेही रक्तका अग्नि, पाकसे मल पित्त, स्थूल भाग शोणित सूक्ष्म भाग मांस होता है, इसी प्रकार और भीजानना ॥ २३ ॥

प्रसादकिट्टधातूनां पाकादेवं द्विधर्चुतः ॥ २४ ॥

इस क्रमसे धातुओंके पाक होनेसे प्रसाद किट्ट दो प्रकारका है एक सार भाग एक मल होताहै ॥ २४ ॥

परस्परोपसंस्तम्भा धातुस्नेहपरस्परा ॥ २५ ॥

इसप्रकार धातुओंके स्नेहकी परम्परा (तृप्तकरना) परस्पर सापेक्षहै यह परस्पर उपकारकहैं, यदि अत्यन्त व्ययसे शुक्रक्ष यहो जाय तो धातुभी क्षय हो जातीहै ॥ २५ ॥

अन्नस्य पक्ता सर्वेषां पक्तृणामधिको मतः।

* आंखकी मैल कीचड़।

तन्मूलास्ते हि तद्वृद्धिक्षयवृद्धिक्षयात्मकः ॥ २६ ॥

भौतिक पांच प्रकारकी अग्नि सात अन्नकी एक पचानेवाली इन सबमें जठराग्नि प्रधानहै उन सबकी क्षय वृद्धि इसीके आधीनहै ॥ २६ ॥

तस्मात्तं विधिवद्युक्तैरन्नपानेन्धनैर्हितैः ।
पालयेत् प्रयतस्तस्य स्थितौह्यायुर्वलस्थितिः॥ २७ ॥

इसकारण जाठराग्निको अनेक प्रकारके युक्त इन्धन रूपी अन्न पानोंसे निरन्तर पालना करताहै, इसकी स्थितिमें आयु बलकी स्थिति होतीहै ॥ २७ ॥

योहि भुङ्क्ते विधिं मुक्त्वाग्रहणीदोषनान्गदान् ।
सलौल्याल्लभते शीघ्रं तस्मान्नोलङ्घयेद्विधिम् ॥२८ ॥

जो विधिको त्यागकर भोजन करताहै उसकी चंचलतासे उसको ग्रहणी आदि दोष शीघ्र प्राप्त होतेहैं, इससे विधिको उल्लंघन नकरै ॥ २८ ॥

प्राणाःप्राणभृतामन्नमन्नंलोकोऽभिधावति ।
वर्णप्रसादसौस्वर्य्यं जीवितं प्रतिष्ठितम् ॥
तुष्टिःपुष्टिर्बलंमेधासर्व्वमन्नेप्रतिष्ठितम् ।
लौकिकंकर्मयद्वृत्तौ स्वर्गतोयच्च वैदिकम् ॥
कर्मापवर्गयच्चोक्तंतच्चाप्यन्ने प्रतिष्ठितम् ॥ २९ ॥

इत्याहारविधिः ।

प्राणधारियोंके प्राणअन्न है,अन्नकी ओर लोक धावमान होतेहैं वर्ण प्रसाद स्वर जीवित तुष्टि सुख तुष्टि पुष्टि बल मेधा यह सब अन्नमेंही प्रतिष्ठित है वृत्तिमें जो लौकिक कर्म है, स्वर्ग जानेमें जो वैदिक कर्म है मोक्षके कर्म यज्ञादि जो कहेहैं, वहभी सब अन्नमें प्रतिष्ठित है इसकारण विधिसे अन्नका सेवनकरै ॥ २९ ॥

इत्याहारविधिः ।

शीतोष्णतोयासवमद्ययूषफलाम्लधान्याम्लपयोरसानाम् ।
यस्यानुपानन्तु हितं भवेद्यत्तस्मैप्रदेयं त्विह मात्रयातत्॥१॥

आहारके उपरान्त सुखसे अन्नपाक होजाय इस कारण अनुपानका सेवन करना बहुत उचित है सो संक्षेपसे कहतेहैं शीत उष्ण जल आसव मद्य यूष फलाम्ल बीजोरा नींबू आदि धान्याम्ल कांजी आदि, पयमस्तु तक्रादि, इक्षुरस जिसे जो अनुपान हितकारक है वह मात्राके अनुसार उतनाही उसकोदे १

व्याधिश्च कालञ्च विभाव्यधीरै-
र्द्रव्याणि भोज्यानि च तानि तानि ॥ २ ॥

व्याधि और समयकी भावना करके वह वहु भोज्य पदार्थ खाने चाहिये ॥ २ ॥

स्निग्धोष्णं मारुतेशस्तंपित्तेमधुरशीतलम् ।
कफेऽनुपानं रूक्षोष्णं क्षये मांसरसं पयः ॥ ३ ॥

बातकी अधिकतामें स्निग्ध उष्ण पदार्थ हितहैं पित्तमें मधुर शीतलपदार्थ हितहैं कफमें रूखे और उष्णपदार्थका अनुपान हितकारकहैं क्षयमें मांस रस पानकरना उचितहै ॥ ३ ॥

उष्णोदकानुपानन्तु स्नेहानामथ शस्यते ।
ऋते भल्लातकस्नेहात्तत्रतोयंसुशीतलम् ॥ ४ ॥

स्नेहके ऊपर उष्णोदकका अनुपान श्रेष्ठ कहाहै केवल भिलावे और स्नेहके ऊपर शीतल जलपान करना उचित है ॥ ४ ॥

अनुपानं वदन्त्येकेतैले यूषाम्लकाञ्जिकम् ॥ ५ ॥

कोई तेलके ऊपर यूष अम्ल और कांजीका पान करना कहतेहैं ५

शीतोदकं माक्षिकस्य पिष्टान्नस्य च सर्वशः ।
दधिपायसमद्यार्त्ते विषदुष्टे तथैव च ॥ ६ ॥

पिसे अन्नपर शीतल जलका पान करना उचित है मद्यसे आर्त हुए तथा विषके क्रमसे दही और घृत देना उचित है ॥६॥

केचित् पिष्टमयस्याहुरनुपानं सुखोदकम् ॥ ७ ॥

कोई पिष्ट पदार्थोंपर कुछ एक गरम जलका अनुपान कहतेहैं ७

पयोमांसरसो वापि शालिमुद्गादिभोजिनाम् ।
युद्धाध्वातपसन्तापविषमद्यरुजासुच ॥ ८ ॥

चावल मूंगादि भोजन न करनेवालोंको दूध तथा मांसका रस अनुपान कहा है युद्ध आतप सन्ताप विषरोगोंमें भी मांसरस तथा दूधका अनुपान हित है ॥ ८ ॥

मांसादेरनुपानन्तु धान्याम्लं दधिमस्तुवा ॥ ९ ॥

मांसादिके ऊपर दही और मस्तुका अनुपान हित है ॥ ९ ॥

अल्पाग्नीनामनिद्राणां तन्द्राशोकभयक्लमैः ।
मद्यमांसोचितानान्तु मद्यमेवानिशस्यते ॥
अमद्यपानामुदकं फलाम्लं वा प्रयोजयेत् ॥ १० ॥

क्षीणाग्नि निद्रा रहित तन्द्रा शोकभय क्लमसे युक्त तथा मद्य मांस देनेके योग्य मनुष्योंको मद्यही श्रेष्ठ है जो मद्यपान नहीं करते हैं उनको जल जंभीरी नीबू आदिका अनुपान हितकर है १०॥

उपवासाध्वभाष्यस्त्रीमारुतातपकर्मभिः ।
क्लान्तानामनुपानार्थं पयः पथ्यं यथामृतम् ॥
सुराकृशानां स्थूलानामनुशस्तं मधूदकम् ॥ ११ ॥

व्रती मार्गसे आये हुए स्त्री वात धूपसे व्याकुल हुए तथा थकेहुओंको दूधका पान अमृतकी समान है, कृशोंको मद्य हितकारक है और स्थूलोंको मधु मिला हुआ जल हितकारीहै ११

निरामयानां चित्रन्तु भक्तमध्ये प्रकीर्त्तितम् ॥ १२ ॥

और रोग रहितोंको नाना प्रकारका भोजनके मध्यमें कहाहै १२

क्षीर मिक्षुरसश्चेति हितं शोणितपित्तिनः ॥ १३ ॥

रक्त पित्त वालोंको दूध और गन्नेका रस हितकारीहै ॥ १३ ॥

अर्कशेलुशिरीषाणामासवास्तु विषार्त्तिषु ॥ १४ ॥

विषसे व्याकुल हुएको अर्क शेलु लहसोडा शिरीष और आसवका अनुपान हितकर है ॥ १४ ॥

यदाहारगुणैः पानं विपरीतं तदिष्यते
तत्रानुपानं धातूनां दृष्टं यन्नविरोधि च ॥ १५ ॥

जो आहारके गुणोंसे पान विपरीत है और धातुओंका विरोधी नहीं है वही अनुपान कहाहै जैसे दही अम्लका मधुर

क्षीर पायसके साथ कांजी आदिका अनुपान है इसप्रकार दही आदि अम्ल पदार्थोंके साथ क्षीर आदिका पान धातुओंका विरोध करताहै इससे वह अनुपान नहींहै इसप्रकार औरभी जानना १५

दोषवद्गुरुवा भुक्तमतिमात्रमथापि वा।
यथोक्तेनानुपानेन सुखमन्नं प्रजीर्य्यति ॥ १६ ॥

जो दोषवत् भारी अथवा बहुत खाया हुआहै वह यथोक्त अनुपानसे सुख पूर्वक जीर्ण होजाता है ॥ १६ ॥

रोचनं बृंहणं वृष्यं दोषघ्नं वातभेदनम्।
तर्पणं मार्दवकरं श्रमक्लमहरं सुखम् ॥
दीपनं दोषशमनं पिपासाच्छेदनं परम्।
बल्यं बलकरं सम्यगनुपानं सदोच्यते ॥ १७ ॥

रुचिकारक,वाजीकर बलकारक, दोषनाशक और वातक भेदक तृप्तकारक मृदुताकारक श्रमक्लम हरनेवाले सुखदायक हैं दीपन दोष शमन कारक पिपासाके छेदनकरने वाले हैं बलयुक्त बल कारक यह गुण सम्यक् अनुपानके हैं ॥ १७ ॥

तदादौकर्षयेत्पीतं स्थापयेन्मध्यसेवितम्।
पश्चात्पीतं बृंहयति तस्माद्वीक्ष्य प्रयोजयेत् ॥ १८ ॥

आदिमें जल पीनेसे अधोगत वायुसे रुखा होकर देहको कृश करता है मध्यमें सेवित किया स्थापन करता है पीछे पिया हुआ बलकारक है इसकारण देखकर प्रयोग करे ॥ १८ ॥

स्थिरतां गतिमक्लिन्नमन्नमद्रवपायिनाम्।
भवत्यावाधजननमनुपानमतः पिबेत् ॥ १९ ॥

जोगीले पदार्थ पान नहीं करता वह अन्न स्थिरता गति और क्लेद रहितताको प्राप्त होताहै, और अवाधा जनकहै इसकारण अनुपानको पानकरे ॥ १९ ॥

न पिबेत् श्वासकासार्त्तो रोगे चाप्यूर्द्ध्वजत्रुगे।
क्षतोरस्कः प्रसेकी च यस्य चोपहतः स्वरः ॥ २० ॥

श्वास काससे आर्तहुवा ऊर्ध्वजत्रुके रोगसे युक्त क्षत हृदय प्रसेकसे युक्त वा जिसका स्वर उपहत होगया है वह अनुपान पानन करै ॥ २० ॥

पीत्वाध्वभाष्याध्ययनस्वप्नगेयान्नशीलयेत् ।
प्रदूष्यामाशयं तद्धि तस्य कण्ठोरसिस्थितम् ॥
स्यन्दाग्निसादच्छर्द्यादीन् जनयेदामयान् बहून् ॥२१॥

अनुपान पान करके मार्गका चलना बहुत बोलना पढना सोना गाना नकरै ऐसा करनेसे यह आमाशयको दूषित करके उसके कण्ठ हृदय और उरमें स्थित हुए स्यन्दता अग्निसाद छर्दि आदि बहुतसे रोगोंको उत्पन्न करतेहैं ॥ २१ ॥

अनुपानं प्रयोक्तव्यं व्याधौ श्लेष्मभवेपलम् ।
पलद्वयन्त्वनिलजे पित्तजे तु पलत्रयम् ॥ २२ ॥

इत्यनुपानविधिः ।

श्लेष्मासे उत्पन्न हुई व्याधीमें अनुपान प्रयोग करना चाहिये जो पल मात्रहो बात व्याधीमें दोपल और पित्तमें तीन पल प्रयोग करना चाहिये ॥ २२ ॥ (१ पल चार तोले)

इत्यनुपानविधिः ।

अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि गुणानां कर्मविस्तरम् ।
कर्मभिस्त्वनुमीयन्ते नानाद्रव्याश्रयागुणाः ॥ १ ॥

अब इसके उपरान्त गुणोंका कर्म विस्तार पूर्वक कहताहूं नाना द्रव्योंके आश्रयी भूत गुण उनके कर्मोंसे जाने जातेहैं ॥१॥

ह्लादनः स्तम्भनः शीतोमूर्च्छातृट्क्लेददाहजित् ।
उष्णस्तद्विपरीतः स्यात्पाचनश्च विशेषतः ॥ २ ॥

शीतल पदार्थ हृदयको आनद करने वाला स्तम्भन कारक शीतमूर्च्छा तृष्णा क्लेद और दाहका जीतने वालाहै उष्ण इसके विपरीत पदार्थहै यह इसके विपरीत गुण वाला है परन्तु पाचन विशेष है ॥ २ ॥

स्नेहमार्दवकृत् स्निग्धो बलवर्णकरस्तथा।
रूक्षस्तद्विपरीतः स्यात् लेखनःस्तम्भनःखरः ॥ ३ ॥

स्निग्ध पदार्थ स्नेह और मृदुता कारक बलवर्ण करने वाला है रूखा पदार्थ इसके विपरीत गुण वाला लेखन और स्तम्भ न करने वाला है, तथा खर है अर्थात् कर्कश है ॥ ३ ॥

पिच्छिलः पीडनोबल्यः सन्धानः श्लेष्मलोगुरुः ॥ ४ ॥

पिच्छिल पदार्थ पीडा कारक बलदायक सन्धान कारक कफ कारक और गुरु है ॥ ४ ॥

विशदोविपरीतः स्यात्क्लेदाव्रणरोपणः ॥ ५ ॥

विशद पदार्थ इसके विपरीत क्लेद हारक और व्रणोंका रोपण करने वाला है ॥ ५ ॥

दाहपाककरस्तीक्ष्णः स्रावणोमृदुरन्यथा ॥ ६ ॥

दाह और पाकका करनेवाला, तीक्ष्ण व्रणस्राव करनेवालाहै, मृदु इसके विपरीतहै ॥ ६ ॥

सादोपलेपबलकृत् गुरुस्तर्पणबृंहणः ॥ ७ ॥

अग्निकासेक बलकारक भारी तृप्तिकारक वाजीकरहै ॥ ७ ॥

लघुस्तद्विपरीतः स्याल्लेखनोरोपणस्तथा।
दशाद्याः कर्मतः प्रोक्ता स्तेषां कर्मविशेषणैः ॥
दशैवान्यान् प्रवक्ष्यामि द्रवादींस्तन्निबोधमे ॥ ८ ॥

लघु इसके विपरीत लेखन और रोपण करनेवालाहै, कर्मोंकी विशेषतासे दश आदि कर्म कहेहैं उनमें दशको मैं कहताहूं उन द्रवादिके कर्मोंको आप मुझसे सुनिये ॥ ८ ॥

द्रवः प्रक्लेदनः सान्द्रः स्थूलः स्याद्बन्द्रकारकः ॥ ९ ॥

द्रव पदार्थ प्रक्लेदन, सान्द्र पदार्थ स्थूल, और द्रन्दकारकहैं ९॥

श्लक्ष्णः पिच्छिलवज्ज्ञेयः कफलोविषदोयथा ॥ १० ॥

श्लक्ष्ण पिच्छल पदार्थकी समान जानना, जैसे कफ और विषदायक पदार्थहैं ॥ १० ॥

सुखानुबन्धीसूक्ष्मश्च सुगन्धोरोचनोमृदुः ॥ ११ ॥

सूक्ष्मपदार्थ सुखका अनुबन्धीहै, सुगन्धिवाला पदार्थ रोचन और मृदुहै ॥ ११ ॥

दुर्गन्धोविपरीतोऽस्मात् हृल्लासारुचिकारकः ॥ १२ ॥

दुर्गन्ध पदार्थ दुर्गन्धि करनेवाला,हृल्लास और अरुचिकारकहै१२

सरोऽनुलोमनः प्रोक्तो मन्दो यात्राकरःस्मृतः ॥ १३ ॥

सर पदार्थ विगुणवायु मलादिका प्रवृत करनेवालाहै मन्द पदार्थ देहकी स्थिति करनेवालाहै ॥ १३ ॥

· व्यवायी चाखिलं देहं व्याप्यपाकायकल्प्यते ॥ १४ ॥

भांग पचनेसे पहले व्यवायी सम्पूर्ण देहमें व्याप्त होकर पाक करताहै ॥ १४ ॥

विकासीविकसन्नेवं धातुबन्धान् विमोक्षयत् ॥ १५ ॥

विकासी जो शरीरकी संधियोंके बंधन और धातुओंके ओज को शिथिलकरे (सुपारी) ॥ १५ ॥

आशुकारी तथाशुत्वांधावत्यम्भसितैलवत् ॥ १६ ॥

आशुकारी पदार्थ शीघ्रगति होनेसे शरीरमें ऐसे फैलता है जैसे जलमें तेल ॥ १६ ॥

सूक्ष्मस्तु सौक्ष्मात्सूक्ष्मेषु स्रोतःस्वनुसरःस्मृतः ।
गुणाविंशतिरित्येवं यथावत्परिकीर्तिताः ॥ १७ ॥

सूक्ष्म पदार्थ रोम कूपोंके द्वारा शरीरमें प्रवेश करता है, यथा तेल यह बीसगुण यथायोग्य वर्णन किये ॥ १७ ॥

दन्तकाष्ठं करञ्जादि रुचिदं दन्तशोधनम् ॥ १८ ॥

करंजादिकी दतौन रुचिकारक और दांतोंकी शोधन करने वाली है ॥ १८ ॥

जिह्वानिर्लेखनं वक्त्रजिह्वावैरस्यजाड्यजित् ।
देवगोविप्रवृद्धानां गुरूणामपि पूजनम् ॥
आयुष्यं वृद्धिदं पुण्यमलक्ष्मीकविनाशनम् ।
मङ्गल्योपासनं शस्तं वृद्धिदं व्यसनापहम् ॥
पादप्रक्षालनं पादमलरोगश्रमापहम् ।

दृष्टिप्रसादनं वृष्यं रक्षोघ्नं प्रीतिवर्द्धनम् ॥
नेत्रमञ्जनसंयोगात् भवेच्चामलतारकम् ।
लाघवं कर्म्मसामर्थ्यं स्थैर्यं क्लेश सहिष्णुता ॥
दोषक्षयोऽग्निवृद्धिश्च व्यायामादुपजायते ।
वातपित्तामयीबालो वृद्धोऽजीर्णीतु तं त्यजेत् ॥
मेदोहरः स्थैर्य्यकरो गौरवव्याधिनाशनः ।
अभ्यङ्गो मार्दवकरो वातश्लेष्मविनाशनः ॥
उद्वर्त्तनं स्थिरकरं कफमेदोविनाशनम् ।
स्नानं दीपनमायुष्यं वृष्यं स्वर्यं बलप्रदम् ॥
कण्डूमलकफस्वेदतन्द्रातृड्दाहपाप्मजित् ।
उष्णाम्बुनाधःकायस्य परिषेको बलावहः ॥
तेनैव तूत्तमाङ्गस्य बलकृत्केशचक्षुषोः ।
आलेपनं वृष्यतरं बल्यं दुर्गन्धपाप्मजित् ॥
वासोनवं निर्म्मलञ्च श्रीमत्पारिषदं शुभम् ।
हर्षणं काम्यमोजस्यं रत्नाभरणधारणम् ॥
रजोघ्नयाय सूर्य्यांशु हिमानिलनिवारणम् ।
प्रतिश्यायशिरःशूलहरञ्चोष्णीषधारणम् ॥
ईतेर्विधमनं बल्यं गुप्त्यावरणशंकरम ।
धर्मानिलरजोम्बुघ्नं छत्रधारणमुच्यते ॥ १९ ॥

जिह्वाका लेखन करनेवाली मुख और जिह्वाकी विरसताको जीतनेवालीहै, देव गौ ब्राह्मण वृद्धोंका पूजन गुरुपूजन आयुवृद्धि और पुण्यका देनेवाला अलक्ष्मीका नाशकहै, मंगलकी उपासना श्रेष्ठ, वृद्धि देनेवाली, व्यसनकी दूर करनेवालीहै, चरणधोना चरणोंके रोग मल और श्रमका नाश करनेवालाहै, दृष्टिका प्रसन्न करनेवाला बलकारक राक्षस नाशक प्रीति वर्द्धकहै, नेत्रोंका आंजना पुतलीको निर्मल करताहै लघुता कर्ममें सामर्थ्य स्थिरत,

क्लेशके सहनकरनेकी सामर्थ्य दोष क्षय अग्नि वृद्धि कसरत करनेसे होतीहै, वात पित्तके रोगवाला वृद्ध अजीर्णवाला कसरत न करे। तेलका मलना मृदुताकारक वात कफ नाशकहै चूर्णका मालिश स्थिरता करनेवाला कफ और मेदका नाशकहै स्नान दीप्तिकारक आयुवर्द्धक बलकारक स्वर और बलका करनेवालाहै खुजली मल कफ स्वेद तन्द्रा (आलस्य) तृषा दाह और पापका जीतनेवालाहै गरम जलसे शिरको छोड़ नीचेकी देहका धोना बलकारकहै और उसीसे शिरपर परिषेक करना केश और नेत्रोंको बलकारकहै आलेपन (चन्दनादि) बाजीकर बलकारक दुर्गन्ध और पापका जीतनेवालाहै नवीन वस्त्र धारण करना निर्मल शोभा सभ्यताका देनेवालाहै, रत्नके गहने पहरनेसे प्रसन्नता काम और बलके देनेवालेहैंऔर रज शरदी सूर्य किरण हिम वातकी निवारण करनेवाली तथा पीनस शिरशूल की हरनेवाली पगडी है, इसका शिरपर धारण करना उपरोक्त गुण करता है. पिशाचादिसे रक्षा आगामि दुर्दैवकी विघातकहै छत्रीके धारण करनेसे धूप वात रज जलसे रक्षा होती है ॥१९॥

स्खलतः संप्रतिष्ठानं शत्रूणाञ्च निवारणम् ।
अवष्टम्भनमायुष्यं भयघ्नं दण्डधारणम् ॥
पादाभ्यङ्गस्तु चक्षुष्यो निद्राकृत्पाण्डुरोगहा ।
सम्वाहनं मांसरक्तत्वक् प्रसादकरं परम् ॥
प्रीतिनिद्राकरं वृष्यं कफवातश्रमापहम् ।
निद्रायत्तं सुखं दुःखं पुष्टिः कार्श्यं बलाबलम् ॥
वृषताक्लीवताज्ञानमज्ञानं जीवितं न च ॥ २० ॥

दण्डका धारण करना गिरनेसे बचाना शत्रुका निवारण करना अवष्टम्भन आयुका देनेवाला और भयका नाशक है चरणोंका मालिश नेत्रोंको हितकारक निद्रा कारक चरण रोग नाशक है सम्वाहन (चरण दवाना आदि) मांसरक्त त्वचाका प्रसन्न करनेवाला है प्रीति और निद्रा कारक बलकारक कफ वात और श्रमका निवारण करनेवाला है सुख दुःख पुष्टि कृशता

बल अबल वृषता नपुंसकता ज्ञान अज्ञान मृत्यु यह सब निद्राके आधीन हैं ॥ २० ॥

अकालेऽतिप्रसङ्गाच्च नच निद्रा निषेविता ।
सुखायुषीपराकुर्य्यात्कालरात्रिरिवा परा ॥
रात्रौ जागरणं रूक्षं स्निग्धं प्रस्वपनं दिवा ।
अरूक्षमनभिष्यन्दित्वासीनं प्रचलायितम् ॥ २१ ॥

जो समयपर अति प्रसंगसे निद्रासेवन नहीं करताहै उसकी सुख आयुनष्ट होती और यह कालरात्रिकी समान है रात्रिमें जागरण करना रूखापन करता है दिनमें सोना स्निग्धता करता है बैठे २ ऊंघना अरूखापन और अनभिष्यन्दि है ॥ २१ ॥

आस्यावर्णबलश्लेष्मसौकुमार्य्यकरीसुखा ।
तालवृन्तोद्भवं वातं त्रिदोषशमनं विदुः ॥
वंशव्यजनजः सोष्णोवातपित्तप्रकोपनः ।
चामरी वस्त्रवातश्च मायुरोवेत्रजस्तथा ॥
एते दोषनिताबाताः स्निग्धाहृद्याः सुपूजिताः ।
निवातमारोग्यकरं सुखवातं श्रमापहम् ॥
प्रवातं रौक्ष्यवैवर्ण्यस्तम्भकृद्दाहपित्तनुत् ।
प्राग्वायुरुष्णोऽभिष्यन्दीत्वग्दोषार्शोविषक्रिमीन् ॥
सन्निपातज्वरं श्वासमामवातञ्च कोपयेत् ।
पश्चिमः शिशिरोहन्ति मूर्च्छां दाहं तृषां विषम् ॥
प्राग्गुणो दक्षिणः प्रोक्त उत्तरःपश्चिमानुगः ॥ २२ ॥

तालके पत्तेकी पवन मुखका वर्ण बल श्लेष्मा सुकुमारता करने वाली है और यही ताड़के पंखेकी हवा त्रिदोषके शान्त करने वालीहै बांसके पंखेकी पवन उष्ण और वात पित्तकी कोप करने वालीहै चंवर और वस्त्रकी पवन तथा मोर और बेंतके पंखेकी पवन वातके दोषोंको जीतनेवाली स्निग्ध हृदयको हितकारक और श्रेष्ठ है। निवात आरोग्य कारक सुखपवन श्रमहरनेवाली है

अत्यन्त पवन रूखापन विवर्ण स्तम्भकारक दाह और पित्तको जीतनेवालीहै, पूर्वकी 'पवन गरम' अभिष्यन्दी त्वचाके दोष बवासीर विष कृमि सन्निपात ज्वर श्वास और आमवातकी कोप करनेवाली है पश्चिमकी शिशिर है मूर्च्छा दाह तृषा विषकी नाशक है पूर्वकी समान दक्षिणकी और पश्चिमकी समान उत्तरकी पवन होती है ॥ २२ ॥

विश्वगायुरनायुष्यः प्राणिनां नैकरोगकृत् ।
धूमः पित्तानिलौ कुर्य्यादवश्यायःकफानिलौ ॥
अग्निर्वातकफस्तम्भशीतवेपथुनाशनः ।
आमाभिष्यंदशमनो रक्तपित्तप्रकोपनः ॥
आतपः कटुको रूक्षश्छायामधुरशीतला ।
ज्योत्स्नाकषायमधुरादाहासृक्पित्तनाशिनी ॥
तमोभयावहं तिक्तं कुज्झटिःकफपित्तला ॥ २३ ॥

सब औरकी वायु आयुकी हरनेवाली प्राणियोंको अनेक रोग करतीहै धूम पित्त और वातका करनेवाला है जुकाम कफ और वातका करनेवाला है अग्नि वात कफ स्तम्भ और कपकपीका नाशकरने वाला है आम अभिष्यन्दका शान्त करने वाला तथा रक्त पित्तका कोप करनेवाला है धूप कटु रूखीहै छाया मधुर और शीतलहै ज्योत्स्ना (चांदनी) कसैली मधुर दाह रुधिर और पित्तका नाश करने वाली है अंधकार भयदायक तिक्त और कुहरा कफ और पित्तका करनेवाला है ॥ २३ ॥

शीताभिष्यन्दिनीवृष्टिस्तन्द्रानिद्राबलप्रदा ।
देशोधन्वामरुत्पित्तकरोरूक्षोष्ण एव च ॥
आनूपस्तुहिमः स्निग्धोवातश्लेष्मकरो गुरुः ।
साधारणः समगुणः सर्व्वरोगापहः स्मृतः ॥
हेमन्तः शीतलः स्निग्धः स्वादुरग्नेश्च वृद्धिकृत् ।
शिशिरः शीतलः किञ्चिद्रूक्षस्तीक्ष्णोनिलाऽग्निकृत् ॥

वसन्तस्तुवरः सोष्णकफव्याधिसमीरणः ।
ग्रीष्म उष्णोऽतिरूक्षश्च कटुको बलहानिकृत् ॥
वर्षाः शीताविदाहिन्यो वन्हिमांद्यानिलार्त्तिदाः ।
शरत्पित्तकफप्रायास्निग्धोष्णाशस्य वृद्धिकृत् ॥
पूतिमांसं स्त्रियोवृद्धा बालार्कस्तरुणं दधि ।
प्रभाते मैथुनं निद्रा सद्यः प्राणहराणिषट् ॥
सद्योमांसं नवान्नञ्च बालास्त्री क्षीरभोजनम् ।
घृतमुष्णोदकञ्चैव सद्यः प्राणकराणि षट् ॥
सन्तताध्ययनं वादः परतन्त्रावलोकनम् ।
तद्विद्याचार्य्यसेवा च बुद्धिमेधाकरोगणः ॥
आयुष्यं भोजनं जीर्णेवेगानामविधारणम् ।
ब्रह्मचर्य्यमहिंसा च साहसानाञ्च वर्जनम् ॥ २४ ॥

वृष्टि शीतकी प्रकट करनेवाली तन्द्रा निद्रा और वलकी करनेवाली है मरुदेश वात पित्त करनेवाला रूखा और उष्ण है अनूपदेश शीतल चिकना बलकारक श्लेष्माकारक तथा गुरु है। साधारण देश समान गुणवाला सर्व रोगका हरनेवाला कहा है हेमन्तऋतु शीतल स्निग्ध स्वादु और अग्निकी वृद्धि करनेवाली है। शिशिरऋतु शीतल किंचित् रूखी तीक्ष्ण वात और अग्निकी करनेवाली है वसन्त ऋतु सर्व श्रेष्ठ उष्ण कफ व्याधि और वातकारकहै। ग्रीष्मऋतु गरम बहुत रूखी कटु बलहानि करनेवाली है। वर्षा ऋतु शीत विदाही अग्निमन्दता वातका कष्ट देने वाली है। शरद् ऋतु पित्त कफ युक्त है स्निग्ध उष्ण और खेतीकी वृद्धिकरनेवाली है दुर्गंधि वाला मांस वृद्धस्त्री प्रातःकाल की धूप तत्कालका दही प्रभात कालमें मैथुन और सोना यह छह वस्तु तत्काल प्राणोंकी हरने वाली हैं। ताजा मांस नवीनअन्न बालस्त्री क्षीरभोजन घृत (गुरुपूजा) गरम जल, यह तत्काल प्राणकी देनेवाली वस्तु हैं! निरन्तर पढना विवाद पुराने ग्रंथोंका अवलोकन करना उस उस विद्याके आचार्यकी सेवा करनी मेधा और बुद्धिकी करने

वाली है । जीर्ण होनेपर भोजन करना आयुका करनेवाला है तथा वेगोंका न रोकना ब्रह्मचर्ययुक्त अहिंसा और साहसका न करना यह आयुका करनेवाला है ॥ २४ ॥

तन्त्राणां सारमाकृष्य द्रव्याणां गुणसंग्रहः ।
भिषजामुपकाराय रचितश्चक्रपाणिना ॥ २५ ॥

अनेक तन्त्रोंका सार लेकर वैद्योंके उपकारके निमित्त द्रव्यों के गुण संग्रहकर यह द्रव्य गुण चक्रपाणिने किया है ॥ २५ ॥

श्रीवैद्यमहामहोपाध्यायश्रीमच्चक्रपाणिदत्तकृतद्रव्यगुणसंग्रहः पण्डित ज्वालाप्रसाद मिश्रकृत भाषाटीकासहितः समाप्तः ॥ १ ॥

अथ ग्रन्थान्तरोक्तनानौषधपरिच्छेदः ।

बिल्वमूलं मरुच्छ्लेष्म छर्दिघ्नं रक्तपित्तजित् ।
पाटला कफवातघ्नी श्योनाको ग्राहि दीपकः ॥ १ ॥

बेलकी जड़ वात श्लेष्मा छर्दिकी नाशक रक्त और पित्तकी जीतने वालीहै पाढल कफ वात नाशक सोनागाछ ग्राही और दीपन है ॥ १ ॥

गम्भारीमूलमत्यूष्णमहितं मानसेप्युतत् ।
गणिकारीतु शोथघ्नी हितावातविकारिणाम् ॥ २ ॥

गंभारी (कुम्भेर) कीजड़ बहुत गरम मनको अहित कारकहै (मदन मादनी) शोथनाशक, वातविकार वालोंको हितकरहै२

एरण्डमूलं शूलघ्नं वृष्यं वातकफापहम् ।
गोक्षुरो मूलकृच्छ्रघ्नो बल्यो वृष्योऽनिलापहः ॥

एरण्डकीजड़ शूलनाशक बलकारक वात और कफ नाशकहै, गोखरू मूत्रकृच्छ्र नाशक बलकारक वाजीकर वात नाशकहै ॥ ३ ॥

उष्णावातकफश्वासकासघ्नी कण्टकारिका ।
बृहती पाचनी सोष्णा ग्राहिणी वातनाशिनी ॥ ४ ॥

कटेरी गरम है वात कफ श्वासकी नाश करनेवाली है, बडी कटेरी गरम ग्राहिणी वात नाशिनीहै ॥ ४ ॥

शालपर्णी पृश्निपर्णी ग्राहिणी कफपित्तजित्।
स्निग्धारुच्या बला वृष्या ग्राहिणी वातपित्तजित् ॥५॥

शालपर्णी पृश्निपणी ग्राहिणी कफ और वातकी जीतने वालीहै खरैटी स्निग्ध रुचिकारक बलकारक वाजीकर ग्राही वात पित्तकी जीतने वालीहै ॥ ५ ॥

तद्वन्नागबलात्यर्थं कृच्छ्रे क्षीणे क्षते हिता।
अश्वगन्धा तु वातघ्नी बल्या वृष्या रसायनी ॥ ६ ॥

इसीप्रकार नागबला कृच्छ्र क्षीण और क्षतमें अत्यन्त हित कारकहै, असगंध वातनाशक बलकारक वाजीकर और रसायन है ॥ ६ ॥

शतावरीवातपित्तमेहकुष्ठहरासरा।
हस्तिकर्णः परं वृष्यो मेधायुर्बलवर्धनः ॥ ७ ॥

शतावरी वात पित्त प्रमेह कुष्ठ हरनेवाली सारकहै हस्तिकर्ण (पलाश) परम वाजीकर मेधा आयु बलका बढाने वालाहै॥७॥

वातपित्तहरा सोष्णाबल्यावृष्या प्रसारणी।
माषपर्णी महावृष्या चक्षुष्या मुद्गपर्णिका ॥८॥

प्रसारिणी (पसरन) वात पित्तकी हरनेवाली, गरम, बलकारक वाजीकर है,माषपर्णी महाबलकारक है मुद्गपर्णी नेत्रोंको हितकारकहै ॥ ८ ॥

विशाला कफवातघ्नी चक्षुष्या मूत्रकृच्छ्रजित्।
शारिवावातपित्तासृक्तृट्छर्दिज्वरनाशिनी ॥ ९ ॥

विशाला (इन्द्रायन) कफ वात नाशक नेत्रोंको हितकारक मूत्रकृच्छ्रकी जीतनेवालीहै सारिवा वात पित्त रुधिर तृषा छर्दि ज्वरकी नाशकरनेवालीहै ॥ ९ ॥

अनन्ताग्राहिणी रक्तपित्तप्रशमनीहिमा।
गुन्द्रापित्तास्रदाहघ्नी चक्षुष्या मूत्रकृच्छ्रजित् ॥ १० ॥

अनन्तमूल ग्राही रक्त पित्त प्रशान्त करनेवाली शीतल है

प्रियंगु पित्त रुधिर दाह नाशक, नेत्रोंको हितकारक मूत्रकृच्छ्र जीतनेवालीहै ॥ १० ॥

लोध्रोसृक्कफपित्तघ्नश्चक्षुष्यःशोथजित्सरः ।
तद्वच्छवरलोध्रोपि चक्षुष्यो मृदुरेचनः ॥ ११ ॥

लोध रुधिर कफ और पित्तका नाशक नेत्रोंको हितकारक शोथका जीतनेवाला सारकहै, इसीप्रकार पठानीलोध नेत्रोंको हितकारक मृदु रेचकहै ॥ ११ ॥

मञ्जिष्ठाकुष्ठवैस्वर्य्यशोथघ्नी वर्णदीपनी ।
लाक्षाभग्नविसर्पघ्नी बल्या त्वग्दोषनाशिनी ॥ १२ ॥

मजीठ कुष्ठ विस्वर शोथनाशक वर्ण दीप्तिकारकहै, लाख भग्न और विसर्परोगनाशक बलकारक त्वग्दोष नाशकहै ॥ १२ ॥

प्रपौण्डरीकं चक्षुष्यं शिशिरं व्रणरोपणम् ।
जीवन्ती श्वासकासघ्नी स्वर्या च क्षयनाशिनी ॥ १३ ॥

प्रपौण्डरीक शालपर्णीकी बराबर पत्तेवाली (पुण्डरिया) नेत्रोंको हितकारक ठंढी व्रणरोपण करनेवालीहै जीवन्ती श्वास कास नाशकरनेवाली स्वरकारक क्षयनाशक है ॥ १३ ॥

अष्टवर्गोऽस्रपित्तघ्नो व्रणहा वातपित्तनुत् ।
मधुकं रक्तपित्तघ्नं व्रणशोधनरोपणम् ॥ १४ ॥

अष्टवर्ग (जीरा ऋषभक मेदा महामेदा ऋद्धि वृद्धि काकोली क्षीरकाकोली) रक्त पित्त नाशक व्रणनाशक वात पित्त नाशक है मुलेठी रक्त पित्त नाशक व्रणके शोधन रोपण करने वालीहै ॥ १४ ॥

पार्थः पथ्यः क्षते भग्ने रक्तस्तम्भनकृच्छ्रयोः ।
अस्थिभग्नेऽस्थिसंहारो हितो बल्योऽनिलापहः ॥ १५ ॥

अर्जनवृक्ष क्षतमेंपथ्य भग्नमेंपथ्य रक्तकृच्छ्रमें हितकारक स्तम्भन करनेवालाहै हाडभांगा अस्थिभग्नमें हितकारकहै बलदायक वात नाशक है ॥ १६ ॥

भृङ्गराजस्तु चक्षुष्यः केश्यः पाण्डुकफापहः।
तद्गुणः केशराजोऽपिवह्निकृच्च रसायनः॥ १६॥

भांगरा नेत्रोंको हितकारीकेशोंको हितकारी पाण्डु कफ रोगका दूर करने वालाहै इसीप्रकारका केशराज (भंगर) अग्नि कारक और रसायन है॥ १६॥

दण्डोत्पलद्वयं श्वासकासजिद्वह्निदीपनम्।
रुदन्ती वह्निकृद्वृष्या पित्तघ्नी च रसायनी॥ १७॥

दंडोत्पल (क्षुप) दोनो श्वासकास नाशक तथा अग्निके दीपन करने वाले हैं रुदन्ती (चनेकेसे पत्तेवाली) क्षुप अग्नि करने वाली वाजीकर पित्त नाशक रसायनीहै॥ १७॥

तालमूली हिता वाते ग्राहिणी च रसायनी।
द्रोणपुष्पी कफार्शोघ्नी कामलाकृमिशोथजित्॥ १८॥

ताल मूली वातमें हित ग्राहणी और रसायनी है द्रोणपुष्पी कफ और अर्श रोगकी नाश करनेवाली कामला कृमि और शोथ रोगकी जीतने वालीहै॥ १८॥

शोथघ्नी कासहा कण्ठ्या विषघ्नी गिरिकर्णिका।
वृश्चिकालीविषघ्नी तु कासमारुतनाशिनी॥ १९॥

गिरिकर्णिका (विष्णु क्रान्ता) शोथ कास नाशक कंठको हितकारक और विष नाशक है वृश्चिकाली (क्षुप बिच्छाटी) विष नाशक खांसी और वात नाशक है॥ १९॥

अहिंस्राविषशोथघ्नी तद्गुणैव सुदर्शना।
भार्गीतुश्वासकासघ्नी गुञ्जाकुष्ठव्रणापहा॥ २०॥

सुदर्शना (वृक्ष नाम) अहिंस्रा विष और शोथका नाश करनेवालाहै भारंगी श्वास खांसीकी नाशकरनेवाली है चोटली कुष्ठ और व्रण दूर करतीहै॥ २०॥

सूर्य्यावर्त्तोविबंधघ्नः सैरीयः कफवातजित्।
आमवातानिलास्रघ्नौ कोकिलाक्षकुलाहकौ॥ २१॥

हुर हुर विवन्ध नाशकहै, झिण्टी कफ और वातकी जीतने वाली है कोकिलाक्ष कुलाहक(लाल तालमखाना) आमवात और रक्तविकारको दूर करनेवालेहैं ॥ २१ ॥

हलिनीकरवीरश्च कुष्ठदुष्टव्रणापहौ ।
कोपातकी कफार्शोघ्नी पक्वामाशयशोधनी ॥ २२ ॥

हलिनी करवीर(कलिहारी, कनेर) कुष्ठ और दुष्ट व्रणको दूर करते हैं,कोषातकी कफ और अर्श रोगकी हरनेवाली पक्व आमा शय शोधनी है ॥ २२ ॥

मेध्याज्योतिष्मतीतीक्ष्णव्रणविस्फोटनाशिनी ।
वयःसंस्थापनी ब्राह्मी मेधायुर्बलवर्द्धिनी ॥ २३ ॥

ज्योतिष्मती बुद्धि कारक तीक्ष्ण व्रण और विस्फोटक नाशने वाली है, ब्राह्मी वयकी स्थापन करनेवाली, मेधा आयु और बलकी बढानेवाली है ॥ २३ ॥

वचायुष्या वातकफतृष्णाघ्नी स्मृतिवर्द्धिनी ।
शक्राशनन्तु तीक्ष्णोष्णं मोहकृत्कुष्ठनाशनम् ॥ २४ ॥

बच आयुकी बढानेवाली वात कफ तृष्णानाशक स्मृति बढानेवालीहै, और शक्राशन (भांग) तीक्ष्ण, गरम, मोह करने वाली तथा कुष्ठ नाशकहै ॥ २४ ॥

बलमेधाग्निकृत् श्लेष्मदोषहारिरसायनम् ।
शंखपुष्पी तु तीक्ष्णोष्णा मेध्याक्रिमिविषापहा ॥ २५॥

बल बुद्धि और अग्निकी करनेवाली, श्लेष्म दोष हरनेवाली रसायनहै शङ्खपुष्पी तीक्ष्ण उष्ण पवित्र बुद्धि करनेवाली कृमि और विष हरनेवालीहै ॥ २५ ॥

शिरीषो विषवीसर्पस्वेदत्वग्दोषशोथजित् ।
दूर्वा तु रक्तपित्तघ्नी कण्डूत्वग्दोषनाशिनी ॥ २६ ॥

सिरस विष विसर्प त्वचा दोष तथा शोथ रोगका जीतने वालाहै, दूर्वा रक्त पित्त नाशक खुजली और त्वचाका दोष नाश करतीहै ॥ २६ ॥

हरिद्रा कफपित्तघ्नी कण्डू त्वग्दोषनाशिनी।
तद्वद्दार्व्वी विशेषेण कफाभिष्यन्दनाशिनी॥ २७॥

हलदी कफ और पित्त नाशकहै, खुजली और त्वचाके दोषको दूर करतीहै, इसी प्रकार विशेषकर दारुहलदी कफ अभिष्यन्द को दूर करतीहै॥ २७॥

अवल्गुजो वातकफपित्तत्वग्दोषनाशनः।
तद्वद्देडगजो गुल्मोदरार्शः कुष्ठजित्कटुः॥ २८॥

सोमराजी वात कफ पित्त और त्वचाके दोषको नष्ट करतीहै इसीप्रकार चकवड़ गुल्म उदर अर्श कुष्ठजित और कटुहै॥२८॥

करञ्जनिम्बजफलं क्रिमिकुष्ठप्रमेहजित्।
विडङ्गमीषत्तिक्तन्तु क्रिमिघ्नं विषनाशनम्॥ २९॥

करंज और नीमके फल कृमि कुष्ठ और प्रमेहरोगको जीतते हैं, वायविडङ्ग कुछ तिक्त कृमि और विषकी नाश करने वालीहै॥ २९॥

रेणुकाकफवातघ्नी दीपनी पित्तकृल्लघुः।
भूर्जो बल्यः कफास्रघ्नः शिंशपा वातनाशिनी॥ ३०॥

रेणुका (विख्यात है) कफ वात नाशक दीपनी पित्त करने वाली तथा लघुहै, भूर्जपत्र बलकारककफ रुधिर विकारनाशक है, शीशम वात नाशक है॥ ३०॥

आस्फोता विषकुष्ठघ्नी तिनिशो दाहपित्तनुत्।
धातकीकुसुमं शीतं रक्तपित्तातिसारनुत्॥ ३१॥

आस्फोता(हापरमाली)विषकुष्ठ नाशक है,तिनिश (तिरिच्छ) दाह पित्तका दूरकरनेवालाहै धायके फूल ठंडे पित्त और अतिसारके दूर करनेवालेहैं॥ ३१॥

असनः कफपित्तघ्नः कदरो दन्तदार्ढ्य कृत्।
निम्बः पित्त कफच्छर्दिव्रणहृत् वातकुष्ठनुत्॥ ३२॥

असन कफ पित्त नाशक हैं, श्वेतखैर दांतोंको दृढ करने

वालाहै नीम कफ पित्तछर्दि व्रणका हरनेवाला वातकुष्ठको दूर करता है ॥ ३२ ॥

महानिम्बः परं ग्राही कषायोऽम्लश्च शीतलः ।
भूनिम्बो वातलो रूक्षः कफपित्तज्वरापहः ॥ ३३ ॥

महा निम्ब अत्यन्तग्राही कषेला अम्ल शीतल है, भूनिम्ब (चिरायता) वात कारक रूखा ,कफ पित्त और ज्वरका हरने वाला है ॥ ३३ ॥

पर्पटः पित्तहृद्दाहज्वरजित् कफशोषणः ।
पाठातिसारशमनी लघ्वीदोषत्रयापहा ॥ ३४ ॥

पित्तपापड़ा वातका हरने वाला दाह ज्वरका जीतनेवाला तथा कफका शोषनेवालाहै, पाठ अतिसार शान्त करने वाला लघु त्रिदोष दूर करनेवालाहै, ॥ ३४ ॥

कुटजः कफपित्तास्रत्वग्दोषार्शोतिसारजित् ।
तद्बीजं ज्वरजित्तिक्तं रक्तपित्तातिसारजित् ॥ ३५ ॥

कुटज (इन्द्रजा) कफ पित्त रुधिर त्वचादोष अर्श और अतीसारका जीतने वालाहै, इसकाबीज ज्वरका जीतनेवाला तिक्तहै रक्त पित्त तथा अतीसारका जीतने वाला है ॥ ३५ ॥

ह्रीवेरं छर्दि हृल्लासतृष्णातीसारनाशनम् ।
मुस्तकं तिक्तकटुकं वातघ्नं ग्राहिदीपनम् ॥ ३६ ॥

ह्रीवेर (सुगंधवाला) छर्दि हृल्लास तृष्णा अतीसारका नाश करनेवालाहै मोथा तीखा कटु वातनाशक ग्राही और दीपनहै३६

पाचन्यतिविषातिक्ता ग्राहिणी दोषनाशिनी ।
शृङ्गी कफानिलश्वासकासहिक्का ज्वरापहा ॥ ३७ ॥

अतीस पाचन तीखा तथा ग्रहणीके दोष नाश करनेवालाहै, काकड़ासींगी कफ वात श्वास कास हिचकी ज्वरके दूर करनेवालीहै ॥ ३७ ॥

कट्फलं कफरोगघ्नं श्वासकासज्वरापहम् ।
कुष्ठं वातकफश्वासकासहिक्काज्वरापहम् ॥ ३८ ॥

कायफल कफरोग नाशक,श्वास कास और ज्वरका नाशकहै, कूठ वात कफ श्वास कास हिचकी और ज्वरका हरनेवालाहै ३८॥

शोभाञ्जनः कटुस्तिक्तः शोथविद्रधिगुल्मनुत्।
यापः सरो ज्वरच्छर्दिश्लेष्मपित्तविसर्पजित् ॥ ३९ ॥

शोभाञ्जन (सैंजना) कटु तीखा शोथ विद्रधि और गुल्मका दूर करनेवालाहै, दुरालभा सारक ज्वर छर्दि श्लेष्मा पित्त विसर्प रोगोंको जीतनेवालाहै ॥ ३९ ॥

कटुकी तु सरारूक्षाकफपित्तज्वरापहा।
रास्ना शोथामवातघ्नी त्रायन्ती कफवातनुत् ॥ ४० ॥

कुटकी रूखी कफ पित्त तथा ज्वरकी हरनेवालीहै रास्ना शोथ आमवातकी नाश करनेवालीहै, त्रायन्ती (त्रायमाण वला लता) कफ और वात नाशकहै ॥ ४० ॥

वरुणोनिलशूलघ्नो भेदी चोष्णोश्मरीहरः।
पुष्पं वरुणजं ग्राहिपित्तघ्नमामवातजित् ॥ ४१ ॥

वरुणा वात शूलनाशक भेदी गरम पथरीरोग नाशक है वरनेकाफूल ग्राही पित्तनाशक आमवातका जीतनेवाला है॥४१॥

पारिभद्रोऽनिलश्लेष्मशोथमेहक्रिमीञ्जयेत् ॥ ४२ ॥

पारिभद्र (देव दारु) वात कफ सूजन प्रमेह और कृमिका जीतनेवालाहै ॥ ४२ ॥

वासकः कासवैस्वर्यरक्तपित्तकफापहः।
गुडूची ग्राहिणी वल्या त्रिदोषघ्नी रसायनी ॥ ४३ ॥

वासक (अडूसा) खांसी विस्वरता रक्त पित्त और कफ नाशक है गिलोय ग्राहिणी बलकारक त्रिदोषनाशक और रसायनीहै ॥ ४३ ॥

दीपनी ज्वरतृट्छर्दिकामलारक्तपित्तनुत्।
भेदनं पिप्पलीमूलं दीपनं कफनाशनम् ॥ ४४ ॥

दीपनी (अजवायन) ज्वर तृष्णा छर्दि कामला और रक्त पित्तकी दूर करनेवाली है पीपलामूल भेदन दीपन और कफका नाश करनेवाला है ॥ ४४ ॥

चविकागजपिप्पल्यौ पिप्पलीमूलवत् स्मृते ।
चित्रकोऽग्निसमः पाके शोथार्शः क्रिमिकुष्ठहा ॥ ४५ ॥

चव्य, गजपीपल, यह पीपलामूलकी समान जानना चीता पाकमें अग्निकी समान सूजन ववासीर कृमि और कुष्ठ रोगको दूर करता है ॥ ४५ ॥

दन्तीसाष्ठीलिकाध्मानगुल्मोदरहरासरा ।
दूषीविषोदरप्लीहगुल्मकुष्ठप्रमेहजित् ॥ ४६ ॥

दन्ती अष्ठीलिका अफारा गुल्म उदररोगहरने वाली सारक है, दूषी विष उदररोग प्लीहा गुल्म कुष्ठ और प्रमेह रोगका जीतने वाला है ॥ ४६ ॥

बहुदोषे प्रयोक्तव्यं वह्नितुल्यं सुधापयः ।
अर्कःक्रिमिहरस्तीक्ष्णः सरोर्शः कफदोषजित् ॥४७॥

सुधापय (सेंहुडका दूध) बहुत दोषमेंभी देना चाहिये यह अग्नि तुल्य है अर्क (आकवृक्ष) कृमि हरनेवाला तीक्ष्ण सारक और बवासीर कफके दोषोंका जीतनेवाला है ॥ ४७ ॥

तत्पयः क्रिमिदोषघ्नं हितं कुष्ठोदरार्शसि ।
काणकं फल मुत्क्लेदितीक्ष्णमुष्णं विरेचनम् ॥ ४८ ॥

उसका दूध कृमि दोषका दूर कर ने वाला कुष्ठ उदर और अर्श रोगमें हित कारक है काणक फल (जमाल गोटा) उत्क्लेदि तीक्ष्ण गरम और विरेचन है ॥ ४८ ॥

धुस्तूरो मदमूर्छाकृत्कफघ्नो वह्निपित्तकृत् ।
भल्लातकफलं स्निग्धं क्रिमिदुर्नामनाशनम् ॥ ४९ ॥

धुस्तूर (धतूरा) मद मूर्छा का करने वाला है कफ नाशक अग्नि और पित्तका करनेवालाहै, भिलावेका फल स्निग्ध कृमि और दुर्नाम (ववासीर) दूर करनेवालाहै ॥ ४९ ॥

दन्तस्थैर्यं कृद्ग्राहिकषायं मधुरश्चतत् ।
भल्लातवृन्तं मधुरं पक्वजम्बूफलोपमम् ॥ ५० ॥

दांतोंका स्थिर करनेवाला, ग्राहीक कसेला और मधुरहै और

इसका (कलीकावन्धन) मधुर पकी जामनके फलके समान होताहै ॥ ५० ॥

गुग्गुलुर्दीपनस्तिक्तः सकषायो रसायनः।
कटुर्मेदोनिलश्लेष्मकुष्ठघ्नः स्रंसनोलघुः ॥ ५१ ॥

गूगल दीपनहै तीखाहै कसेला और रसायनहै कटु मेद वात श्लेष्मा कुष्ठ नाशक, स्रंसन और लघुहै ॥ ५१ ॥

स्निग्धकाञ्चनसङ्काशः पक्कजम्बूफलोपमः।
नूतनो गुग्गुलः प्रोक्तः सुगन्धीयश्च पिच्छलः ॥ ५२ ॥

नया गूगल चिकना सुवर्णकी समान पके जामनके फलसरीखा होताहै और सुगन्धिमान तथा पिच्छल होताहै ॥ ५२ ॥

पुराणः शुष्कोदुर्गन्धोमलानां नापकर्षकः।
अरुणात्रिवृतास्वादुः कषाया मृदुरेचनी ॥ ५३ ॥

पुराना और सूखा गूगल दुर्गन्ध और मलोंको नहीं खेंचताहै अरुण त्रिवृता (लाल निसोथ) स्वादुकसेली और मृदु रेचकहै५३

रूक्षा च कटुका चैव पाके तिक्ता कफापहा।
तस्याश्चाल्पान्तरगुणा विज्ञेया त्रिवृतासिता ॥ ५४ ॥

कटुका (कुटकी) रूखी पाकमें तीखी तथा कफ नाशकहै त्रिवृता (निसोतमे) इससे बहुत थोड़े गुणहैं ॥ ५४ ॥

ज्वरहृद्रोगवातासृगुदावर्त्तादिरोगजित्।
राजवृक्षोऽधिकः पथ्यो मृदुर्मधुरशीतलः ॥ ५५ ॥

राजवृक्ष ज्वर हृद्रोग वात रुधिर उदावर्त आदि रोगका दूर करने वालाहै अधिकपथ्य मृदु मधुर और शीतल है ॥ ५५ ॥

तत्फलं मधुरं वृष्यं वातपित्तहरं सरम्।
रोहीतकोयकृत् प्लीहगुल्मोदरहरः सरः ॥ ५६ ॥

उसकाफल मधुर बलकारक वात पित्त हरनेवाला सारकहै रोहित (रोहेडा) यकृत प्लीहा गुल्म उदर रोग हरनेवाला सारक है ॥ ५६ ॥

रसायनोवृद्धदारः शोथामवातरोगजित् ॥
अपामार्गोऽग्निवत्तीक्ष्णः क्लेदनः स्रंसनःसरः ॥ ५७ ॥

वृद्धदार रसायन है शोथ तथा आम वातरोगको दूर करताहै अपामार्ग (चिरचिरा) अग्निकी समान तीक्ष्ण क्लेदी स्रंसन और सारक है ॥ ५७ ॥

सिन्धुवारो विषश्लेष्मकुष्ठव्रणविषापहः ।
तुलसीपित्तकृद्वातक्रिमिदौर्गन्ध्यनाशिनी ॥ ५८ ॥

सिन्धुवार (निर्गुंडी) विषश्लेष्मा कुष्ठ व्रण और विषका हरनें वाला है तुलसीदल पित्तकारी कृमि और दुर्गन्धका नाशक है ॥

पार्श्वशूलारतिश्वासकास हिक्काविकारजित् ।
मूर्वा तु बृंहणीवल्या कफवातामयान् जयेत् ॥ ५९ ॥

पार्श्व शूल अरति श्वास कास हिचकीके विकारका जीतने वाला है मूर्वा (मरोरफली) बलवीर्यकारक है कफ और वातके रोगोंको जीतने वालीहै ॥ ५९ ॥

कषायामधुरारूक्षा वातघ्नी वंशलोचना ।
तुगाक्षीरी क्षयश्वासकासघ्नी मधुरा हिमा ।
दिङ्मात्रं दर्शितं ह्येतत् गृह्यतां पण्डितैः परम् ॥ ६० ॥

वंशलोचन कसेला मधुर रूखा और वात नाशकहै तवाखीर क्षय श्वास कास नाशक मधुर और शीतलहै, यह औषधी वर्ग दिङ्मात्र दिखादियाहै विशेष पंडित लोग ग्रहणकर सकतेहैं ॥ ६० ॥

इति श्रीमिश्रसुखानंद सुनु पंडित ज्वालाप्रसाद मिश्रकृत भाषाटीकायां वनौषधिवर्गःसमाप्तः ।

पुस्तकमिलनेका ठिकाना–

खेमराज श्रीकृष्णदास,

" श्रीवेंकटेश्वर " छापाखाना–खेतवाड़ी–(मुंबई)